



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra



देवनागरी का रोमन लिप्यंतरण / Roman Transliteration of Devanāgarī

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|----|
| अ | a | ऋ | r̥ | क् | k | च् | c | ट् | ṭ | त् | t | प् | p |
| आ | ā | ए | e | ख् | kh | छ् | ch | ठ् | ṭh | थ् | th | फ् | ph |
| इ | i | ऐ | ai | ग् | g | ज् | j | ड् | ḍ | द् | d | ब् | b |
| ई | ī | ओ | o | घ् | gh | झ् | jh | ढ् | ḍh | ध् | dh | भ् | bh |
| उ | u | औ | au | ङ् | ṅ | ञ् | ñ | ण् | ṇ | न् | n | म् | m |
| ऊ | ū | य् | y | र | r | ल् | l | व् | v | क्ष | kṣ | त्र | tr |
| | | श् | ś | ष् | ṣ | स् | s | ह | h | ळ | ḷ | ज्ञ | jñ |
| Anusvāra and Anunāsika = ṁ, Visarga = ḥ, Avagraha = ' | | | | | | | | | | | | | |

महाराष्ट्र के दुर्ग

लेखक : गुणाकर मुळे

“संपूर्ण राज्याचें सार तें दुर्ग” (संपूर्ण राज्य का सार है दुर्ग)

—आज्ञापत्र : मराठा राजतंत्र पर 1715 ई. में रामचंद्रपंत अमात्य द्वारा लिखित पुस्तक।

प्रस्तावना

महाराष्ट्र दुर्गों की भूमि है। देश के किसी भी अन्य प्रदेश में इतनी बड़ी संख्या में और इतने प्रकार के दुर्ग देखने को नहीं मिलते। इस प्रदेश में बिखरे हुए दुर्गों के जाल ने यहां के लोगों के चरित्र के निर्माण में योग दिया है। मेजर ग्राहम ने अपनी *कोल्हापुर रिपोर्ट* में लिखा है : “प्रत्येक पहाड़ी पर स्थापित दुर्ग यहां के लोगों को कहता जान पड़ता है कि शासक की सहायता के बजाए स्वयं पर आश्रित रहो, और प्रत्येक छोटे-मोटे सरदार में स्वतंत्रता की भावना पैदा करता है, जो दक्षिणी महाराष्ट्र के निवासियों का एक विशिष्ट गुण है।”

सर यदुनाथ सरकार ने भी अपनी प्रख्यात कृति *शिवाजी और उनका समय* में कुछ इसी तरह के विचार प्रस्तुत किए हैं : “मराठों में स्वातंत्र्य और अलगाव के लिए जो जन्मजात प्रेम है, उसे प्रकृति से भी बड़ी मदद मिली है। प्रकृति ने उन्हें समीप ही ऐसे बने-बनाए और रक्षणक्षम दुर्ग प्रदान किए हैं, जहां वे बचाव के लिए जल्दी से जाकर शरण ले सकते हैं और जहां से वे दृढ़ता से मुकाबला कर सकते हैं। गंगा की घाटी की तरह इस प्रदेश को एक ही बार के रिसाला हमले से अथवा साल भर की मुहिम से जीतकर कब्जे में कर लेना संभव नहीं था। अपने से कहीं अधिक ताकतवर शत्रु के खिलाफ लंबे समय तक संघर्ष करते रहना और, जैसा कि अक्सर हुआ है, हमलावरों के थक जाने के बाद अपनी जमीन को पुनः हासिल करना यहां के निवासियों के लिए संभव था।”

महाराष्ट्र के कमो-वेश 350 किले मराठों के इतिहास, विशेषकर उनके 17वीं सदी के इतिहास, और उनकी विजयों के मौन साक्षी की तरह हैं। मराठा शक्ति की स्थापना, उसके विस्तार और संरक्षण में किलों ने सर्वाधिक महत्व की भूमिका अदा की है। उन्होंने सामरिक चौकियों का काम किया है और उनकी विशिष्ट रचना पद्धति ने युद्धास्त्रों की भूमिका अदा की है। ग्रांट डफ, जिन्होंने पहली बार मराठों का विस्तृत इतिहास प्रस्तुत किया, लिखते हैं : “सैनिक सुरक्षा की दृष्टि से दक्खन-जैसा सुदृढ़ देश दुनिया में दूसरा शायद कोई नहीं है।”

साहित्य व शिल्पांकन में दुर्ग

प्राचीन काल से ही यह पहचान लिया गया था कि दुर्ग राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। **कालिका पुराण** की हिदायत है : “राजा को आवश्यक दुर्गों का निर्माण करना चाहिए।” **अग्नि पुराण** में राज्य के सात अंग गिनाए गए हैं : राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, सैन्य और मित्र। **मत्स्य पुराण** के *दुर्ग-विधान* अध्याय में दुर्ग अथवा परकोटे से घेरे हुए राजप्रासाद-युक्त नगर का वर्णन है। इसमें छह प्रकार के दुर्गों की जानकारी दी गई है; यथा -

1. *धन्वदुर्ग* -- मरुभूमि अथवा दलदली भूमि पर बना दुर्ग।
2. *महीदुर्ग* अथवा *स्थलदुर्ग* -- सामान्यतः भूमि पर बना दुर्ग।
3. *जलदुर्ग* -- नदी या सरोवर के जल से घिरा हुआ दुर्ग। महाराष्ट्र में कई द्वीपदुर्ग अथवा समुद्री-दुर्ग हैं।
4. *वनदुर्ग* -- वह दुर्ग, जिसके चारों ओर घने जंगल हों।
5. *गिरिदुर्ग* -- पर्वतीय दुर्ग। इसे सबसे उत्तम दुर्ग माना गया था। महाराष्ट्र के अधिकांश दुर्ग गिरिदुर्ग हैं।

Forts of Maharashtra

Author : Gunakar Muley

“Forts are the chief protection of a kingdom.”

—The *Ājnāpatra*, an early 18th century treatise on Maratha polity, written by Rāmachandrapanta Amātya

Introduction

Maharashtra is a land of forts. Nowhere in the country one would encounter such a profusion and variety of forts. The network of forts throughout its territory has shaped the character of its people. Maj. Graham in his *Kolhāpur Report* says, “a stronghold upon every hill as if inviting the inhabitants to depend upon themselves instead of upon the sovereign’s support and encouraging in each petty chieftain that spirit of independence, which is so striking a characteristic of the natives of the southern Marāṭhā country.”

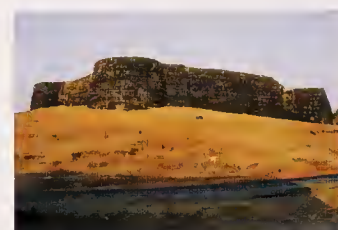
Similar view is expressed by Sir Jadunath Sarkar in his monumental work *Shivaji and his Times* : “The Marāṭhā people’s inborn love of independence and isolation was greatly helped by Nature, which provided them with many ready-made and easily defensible forts close at hand, where they could quickly flee for refuge and whence they could offer a tenacious resistance. Unlike the Gangetic plain, this country could not be conquered and annexed by one cavalry dash or even one year’s campaigning. Here the natives had the chance of making a long struggle against superior numbers and, as often happened, of recovering their own when the invader was worn out.”

The 350 odd forts of Maharashtra stand as silent sentinels to the history and success of the Marathas, particularly during the 17th century. The forts played a paramount role in the foundation, expansion and preservation of Maratha power. They served as strategic posts and their peculiar constructional features as weapons of warfare. Grant Duff (1789-1858), the first comprehensive historian of the Marathas, wrote : “There is probably no stronger country in the world than the Deccan from the military defence point of view.”

Forts in Literature and Sculpture

The fort as an important organ of the body politic has been recognised since ancient times. The *Kālikā Purāṇa* warned : “Kings must construct adequate forts. The *Agni Purāṇa* enumerated seven limbs for the body of any sovereign realm as : the king, the minister, the nation, the fort, the treasure, the army and the friend. The *Durga-Vidhāna* chapter of the *Matsya Purāṇa* relates to the subject of *Durga* or the king’s fortified city including the royal palace. It describes six kinds of forts as below :

1. *Dhanva Durga* – A fort having a desert or marshy area for its defence.
2. *Mahī Durga* or *Sthala Durga* – Fortress built mostly on the ground.
3. *Jala-Durga* – A fort surrounded by some river or lake. There are many *Jala-durgas* or marine forts in Maharashtra.
4. *Vana-Durga* – A fort built in the midst of a forest.
5. *Giri-Durga* – A fort having mountainous defences. This was considered the best of all. Most of the forts of Maharashtra are *Giri-durg* type.



हर्णे के समीप गोवा किला
Gova fort close to Harne



बाळापुर किले की दीवार
Wall of Bāḷapura fort



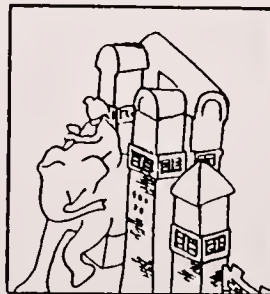
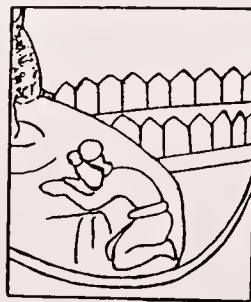
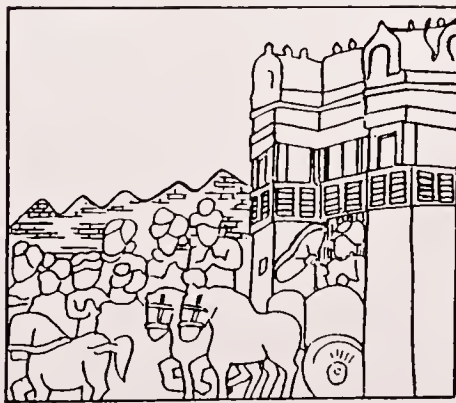
नरनाळा किले के दरवाजे के पार्श्व का छज्जा
Balconied window, Naranāḷ gateway

6. *नरदुर्ग* – ऐसे साहसी व्यक्तियों की बस्तियों से घिरा दुर्ग, जो जरूरत के समय राजा की सहायता कर सके।

कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* में दुर्गों के निर्माण को विशेष महत्व दिया गया है। कौटिल्य कहते हैं कि राज्य की रक्षा मुख्यतः दुर्ग और दंड (सेना) पर आश्रित होती है और इन दोनों में दुर्ग का महत्व अधिक है। कौटिल्य के अनुसार, दुर्ग का अर्थ है - प्राचीर-युक्त राजधानी-नगर, जहां शत्रु द्वारा घेरे जाने पर, राजा अपने लिए सुरक्षित स्थान पा सकता है और घेराबंदी का लंबे समय तक मुकाबला कर सकता है। *अर्थशास्त्र* में चार प्रकार के दुर्गों का उल्लेख किया गया है - जलदुर्ग, गिरिदुर्ग, धन्वदुर्ग और वनदुर्ग। कौटिल्य ने जलदुर्ग और गिरिदुर्ग को सबसे महत्वपूर्ण बताया है और इनके निर्माण के बारे में सूचनाएं दी हैं। यह भी बताया गया है कि दुर्ग में आवश्यक वस्तुओं का भरपूर संग्रह होना चाहिए और जरूरत पड़ने पर दुर्ग से निकल भागने के लिए गुप्त मार्ग होने चाहिए।

कामंदकी का *नीतिसार*, जो मौर्यकाल के बाद लिखा गया राजतंत्र का ग्रंथ है, राज्य के सात अंगों में दुर्ग को शामिल करता है, और बताता है : “दुर्ग के बिना राजा उसी प्रकार असहाय है, जिस प्रकार तूफान द्वारा भगाए जाने वाले वादल। एक अच्छे दुर्ग में जल और खाद्य वस्तुओं का पर्याप्त भंडार, हथियार और दूसरी युद्ध-सामग्री का भरपूर संचय, बहादुर सैनिकों की मजबूत रक्षकसेना और गुप्त शरणस्थल तथा बाहर निकलने के लिए मार्ग होने चाहिए।”

अंग्रेजी में किले के लिए जिस ‘फोर्ट’ शब्द का प्रयोग होता है वह फ्रांसीसी भाषा के ‘फोर्टिस’ शब्द से बना है, जिसका अर्थ है - ‘दृढ़’। *अमरकोष* में किले के लिए दिए गए संस्कृत शब्द हैं - पुर, दुर्ग और कोट्टा। ‘पुर’ शब्द वेदों में भी आया है और वहां इसका अर्थ ‘परकोटे से घिरी बस्ती’ है। परंतु किले के लिए सबसे उपयुक्त शब्द *दुर्गम्* (पहुंचने में कठिन) से बना *दुर्ग* शब्द है। दुर्गों का उल्लेख *महाभारत*, *रामायण* और *मनुस्मृति* में भी आया है। कुछ ऐसे भी ग्रंथ हैं, जिनमें दुर्गों और उनके स्थापत्य के बारे में जानकारी दी गई है। ऐसे प्रमुख ग्रंथ हैं - *मयमत*, *मानसार*, *समरांगण-सूत्रधार* और राजा भोज-रचित *युक्ति-कल्पतरु*। बहमनी और मराठा शासनकाल में भी कुछ ऐसे ग्रंथ लिखे गए जिनमें किलों के बारे में जानकारी मिलती है। ये ग्रंथ हैं : *आकाशभैरवकल्प*, *बुधभूषणम्*, *शिवभारत* और *आज्ञापत्र*। इनमें अंतिम पुस्तक, जो रामचंद्रपंत अमात्य ने 1715 ई. में मराठी में लिखी, मराठों के दुर्गों को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।



वास्तुशिल्पों में दुर्ग-दृश्यों का अंकन
Representations of fortifications in sculpture

6. *Nara-Durga* – A fort in the midst of brave people who could serve the king in good stead in times of need.

The subject of forts has received great attention in the *Arthasāstra* of Kauṭilya. The author states that the defence of the state is based on the fort (*durga*) and the army (*daṇḍa*), and of these two *durga* is more important. The *durga*, according to Kauṭilya, represents the fortified capital of the state, where the king, if hard pressed by a strong enemy, can entrench himself and withstand a siege over a long period. The *Arthasāstra* mentions four types of fortresses, with protection secured by water (*jaladurga*), mountain (*giridurga*), desert (*dhanvadurga*) or forest (*vanadurga*). Kauṭilya considers the first two types of forts the most important and gives details about their construction. It is also stated that the fort should have plenty of supplies stored in it and that there should also be secret means of escaping from it in case of need.

The *Nītisāra* by Kāmandakī, a post-Mauryan treatise narrating the elements of polity, includes *durga* in the seven elements of state, and states : “A king without a fort is as helpless as clouds driven by storms. A fort worth the name should have sufficient arrangement for water and provisions as well as abundant stocks of weapons and other implements of war, strong garrisons of heroic soldiers and adequate secret shelters and outlets.”

The word ‘fort’ is from the French ‘fortis’ which means ‘strong’. According to the *Amarakoṣa*, the Sanskrit words for fort are : *pura*, *durga* and *koṭṭa*. The word *pura* occurs even in the *Vedas* and stands for a sort of fortified settlement. However, the most appropriate word for fortification is *durga* from *durgamam*, meaning inaccessible. *Durgas* are mentioned in the *Mahābhārata*, the *Rāmāyaṇa* and the *Manusmṛiti*. Also, there exist a number of treatises which describe the types of *durgas* and their architecture. Among them the most important are: *Mayamata*, *Mānasāra*, *Samarāṅgaṇa-Sūtradhāra*, *Śukranīti* and *Yukti-Kalpataru* of king Bhoja. Some works describing forts were also written in the Bahamanī and Maratha periods. They are : *Ākāśabhairavakalpa*, *Budhabhūṣaṇam*, *Śivabhārata*, and *Ājñāpātra*, the last one, written by Rāmachandrapanta Amātya in 1715 AD, being the most important for understanding the Maratha forts.

Walled towns are also depicted in several ancient sculptures from places like Bharhuta, Sāñcī and Amarāvātī. At Sāñcī, a strong wall made of bricks or well-cut stones is shown running round the city. It has battlements on the top. Persons carrying bows and arrows, clubs and swords, are clearly seen at Sāñcī. Fort towers can be observed in the sculptures from Mathurā and Sāñcī. Also shown are gates or gate-houses. The gateway of Kusinārā was fairly high and could provide a passage for an elephant with its rider. A Sāñcī scene shows a woman coming to take water from the moat (*parikhā*). The *Arthasāstra* lays down that crocodiles and lotus plants should be grown in the *parikhā*, so that no enemy may swim across them with impunity.

Harappan Forts

In the Indian subcontinent, the earliest traces of fortifications belong to the Indus civilization, dated between c. 2600 BC to c. 1800 BC. About a dozen Indus towns have yielded evidences of town-walls. The major Indus cities, such as Harappa, Mohenjo-daro and Kālībaṅgān, consist of two distinct elements : on the west a ‘citadel’ mound built on a high podium of mud brick, and a ‘lower city’ consisting of the main residential area. In some cities, such as Harappa, only the citadel was fortified, while in others, such as Kālībaṅgān, lower city also had a town-wall. Not only for their residential structures but also for their fortifications the Harappans used mainly bricks – both of the sun dried as well as baked variety. The walls were very thick and gates were flanked with

प्राचीरों से घिरे हुए नगरों के दर्शन भरहुत, सांची और अमरावती से प्राप्त शिल्पांकनों में भी होते हैं। सांची में ईंटों अथवा अच्छी तरह तराशे गए पत्थरों से निर्मित मजबूत दीवार को चारों ओर से नगर को घेरते हुए दिखाया गया है। प्राचीर के ऊपर पडकोट भी दिखाया गया है। सांची के शिल्पांकनों में धनुष और तीर, गदा और खड्ग धारण किए हुए पुरुषों को स्पष्ट पहचाना जा सकता है।औमथुरा और सांची के शिल्पांकनों में दुर्ग के अट्टालक (वुर्ज) भी देखे जा सकते हैं। कुशीनगर का प्रवेश-द्वार इतना ऊंचा था कि उसमें से हाथी, उस पर सवार महावत सहित, बड़े मजे में गुजर सकता था। सांची के एक दृश्य में एक स्त्री को परिखा में से पानी भरते हुए दिखाया गया है। **अर्थशास्त्र** में बताया गया है कि परिखा में मगरमच्छ और कमल पालने चाहिए, ताकि शत्रु बिना दंड पाए उसे तैरकर पार न कर सके।

हड़प्पा संस्कृति के दुर्ग

भारतीय उपमहाद्वीप में दुर्गों के सबसे प्राचीन उपलब्ध अवशेष सिंधु सभ्यता (लगभग 2600 ई.पू. से लगभग 1800 ई.पू. तक) के हैं। सिंधु सभ्यता के करीब एक दर्जन नगरावशेषों से प्राचीरों के प्रमाण मिले हैं। सिंधु सभ्यता के हड़प्पा, मोहेंजो-दड़ो और कालीबंगा जैसे प्रमुख नगरों के दो पृथक भाग रहे हैं : पश्चिम की ओर मिट्टी की ईंटों के ऊंचे चबूतरे पर निर्मित 'दुर्ग', और पूर्व की ओर मुख्य आबादी वाला 'निचला शहर'। हड़प्पा जैसे कुछ नगरों में केवल दुर्ग को ही दीवार से घेरा गया है, मगर कालीबंगा जैसे अन्य स्थलों में निचले शहर की भी



मोहेंजो-दड़ो (बाएं) और हड़प्पा नगरों की अभिन्यास योजनाएं और दुर्गों का स्थान
Plan of Mohenjo-daro and Harappa, showing township and citadel

घेराबंदी की गई है। सिंधुजनों ने धूप में सुखाई और आवें में पकाई, दोनों ही प्रकार की ईंटों का इस्तेमाल किया है -- न केवल अपने मकान बनाने में, बल्कि दुर्ग-निर्माण में भी। दुर्ग की दीवारें काफी चौड़ी थीं और प्रवेश-द्वार के दोनों तरफ बुर्ज बने हुए थे।

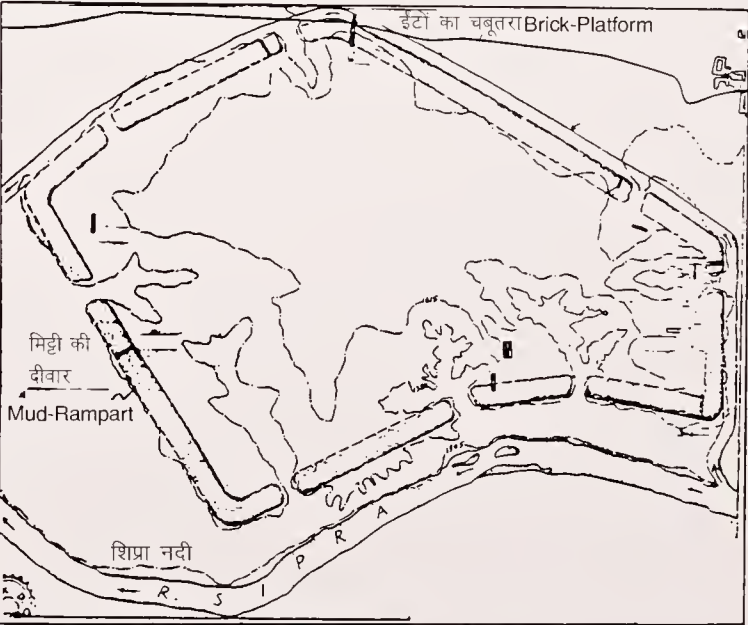
प्राचीन भारतीय दुर्ग

सिंधु सभ्यता के अवसान के बाद भारत में दुर्ग वाले नगरों का 600 ई.पू. के आसपास पुनः उदय होता है। मगध की आरंभिक राजधानी राजगृह (वर्तमान राजगीर, बिहार) को उसके चतुर्दिक की पहाड़ियों के ऊपर से गुजरने वाली रोड़े-पत्थरों से निर्मित एक काफी ऊंची दीवार से घेरा गया था। उस दीवार के आधार-भाग को अंशतः आज भी देखा जा सकता है। यह किलेबंदी प्रमुखतः नगर-रक्षा के लिए की गई थी। ईसा पूर्व चौथी सदी में राजगृह को त्यागकर पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) को मगध की राजधानी बनाया गया। मेगास्थनीज़, जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था, बताता है कि पाटलिपुत्र लकड़ी की प्राचीर से

bastions. The ramparts served a dual purpose – local security and protection from flood.

Ancient Indian Forts

After the fall of the Harappans, fortified cities re-emerge in the country roughly around 600 BC. Rājagṛha (present Rājagīra in Bihar), the earlier capital of Magadha, had a rubble wall of considerable height running atop its surrounding hills; today it is only partially preserved at the base. The fortification here was essentially for defensive purpose. Then in the 4th century BC the site was deserted in favour of Pāṭaliputra (modern Patna). Megasthenese, the Greek ambassador to the court of Chandragupta Maurya, states that the capital Pāṭaliputra was protected by wooden ramparts that had 64 gates and more than 500 towers. Actually these wooden ramparts might be wooden parapets erected over the earthen walls.



उज्जैन के दुर्ग की अभिन्यास योजना
Plan of fortification at Ujjain

Most of the important towns in North India were situated on the bank of perennial rivers. These towns were enclosed with huge ramparts consisting of heaps of earth and bricks. Ujjain and Kausāmbī had such gigantic defences. At Ahicchatrā the earthen wall was topped by a 3-metre high brick wall. Other places like Vaiśālī and Rājghāṭā (Vārāṇasī) had earthen ramparts around them. Śīśupālagadha in Orissa had a rampart defensive in purpose. It was built in the 3rd century BC. Roughly square in plan, the rampart had a tower on each corner and two gates in each side.

Fortified towns and cities in South India are of slightly later in date than the Gaṅgā valley fortifications. In Andhra Pradesh a number of places have revealed town walls. Nāgārjunakoṇḍā on its southern side had a fortified 'citadel' trapezoidal in area. The southern side was protected by a hill and there were two gateways, one in the western side and the other in the eastern side. It is observed that the ramparts in the southern cities are smaller in size.

The Sātavāhanas ruled over Maharashtra and Andhra Pradesh from c. 200 BC to c. 240 AD. The Greek writer Ptolemy (2nd century AD) tells that there were thirty walled towns in their empire. The history of some of the hill-forts around Junnar, such as the Śivanērī fort, birthplace



बल्लाळपुर किले का मुख्य द्वार
Main gate of Ballalpur fort



अकोला दुर्ग के भग्नावशेष
Ruins of Akolā fort



लोहगढ दुर्ग के प्रवेश-द्वारों की अनोखी
व्यूह-रचना
Intricate pattern of the doorways of
Lohagadha hill fort



हाथी को कुचलते हुए व्याघ्र, अहमदनगर किला
A tiger trampling on an elephant,
Ahamadanagar fort

घिरा हुआ था और उसमें 64 प्रवेशद्वार तथा 500 बुर्ज थे। वस्तुतः लकड़ी की वह प्राचीर मिट्टी की दीवार (वप्र) के ऊपर बनाई गई होगी।

उत्तरी भारत के अधिकतर नगर बारहमासी नदियों के तट पर बसे हुए थे। ये नगर मिट्टी और ईंटों से निर्मित विशाल प्राकारों से घिरे हुए थे। उज्जैन और कौशांबी में ऐसे विशाल परकोटे थे। अहिच्छत्रा में मिट्टी की दीवार के ऊपर ईंटों की तीन मीटर ऊंची दीवार थी। वैशाली और राजघाट(वाराणसी) जैसे अन्य नगरों के चहुँओर मिट्टी की दीवारें थीं। ईसा पूर्व तीसरी सदी में शिशुपालगढ़ (उड़ीसा) में जो रक्षात्मक दीवार बनाई गई थी वह लगभग वर्गाकार थी और उसके प्रत्येक कोने में एक बुर्ज था और प्रत्येक भुजा में दो द्वार थे।



विमान से लिए गए शिशुपालगढ़ के छायाचित्र में इसके दुर्ग की अभिन्यास योजना
Aerial photograph of Śisupālagarha showing the plan of its fortification

दक्षिण भारत के प्राचीरयुक्त शहर तथा नगर गंगाघाटी के प्राचीरयुक्त नगरों से कुछ बाद के हैं। नागार्जुनकोंडा के दक्षिणी भाग में प्राचीर से घिरा हुआ विषम-चतुर्भुजाकार दुर्ग था। इसका दक्षिणी भाग एक पहाड़ी से सुरक्षित था और इसमें दो प्रवेश-द्वार थे - एक पश्चिम दिशा की दीवार में और दूसरा पूर्वी दिशा की दीवार में। देखा गया है कि दक्षिण भारत के नगरों के परकोटे आकार में छोटे हैं।

सातवाहनों ने महाराष्ट्र और आंध्र पर लगभग 200 ई.पू. से लगभग 240 ई. शासन किया। यूनानी लेखक तालेमी (ईसा की दूसरी सदी) बताता है कि उनके साम्राज्य में दीवारों से घिरे तीस नगर थे। जुन्नर (नाशिक जिला) के पास के कुछ गिरिदुर्गों का इतिहास, जैसे कि शिवाजी के जन्मस्थान शिवनेरी का, सातवाहन काल तक पीछे जाता है।

गुप्त-वाकाटक युग में राजनीतिक माहौल अपेक्षाकृत शांतिमय था, इसलिए दुर्गों को शायद कम महत्व दिया गया। गुप्त साम्राज्य के विघटन के बाद जब देश में कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ, तब विभिन्न प्रकार के नए दुर्गों की स्थापना के लिए नई प्रेरणाएं मिलीं। दक्खन में ईसा की सातवीं-आठवीं सदी में दुर्ग-निर्माण का एक नया दौर शुरू हुआ। आरंभिक चालुक्यों ने राजधानी बादामी (कर्नाटक) में एक गिरिदुर्ग का निर्माण किया। उसके बाद ग्यारहवीं-बारहवीं सदी में महाराष्ट्र तथा समीप के क्षेत्र पर शासन करने वाले यादवों और शिलाहारों ने गिरिदुर्गों को विशेष महत्व दिया। यादवों ने देवगिरि के अजेय गिरिदुर्ग को अपनी राजधानी के लिए चुना और शिलाहारों ने कोल्हापुर के नजदीक के पन्हाळा गिरिदुर्ग को अपनी राजधानी बनाया।



रायगढ़ के भग्नावशेष
Ruins in Rāyagaḍha

of Shivaji, can certainly be taken back to the Sātavāhana period.

In the Gupta-Vākātaka age, the political climate being comparatively peaceful, fortification seems to have become less important. It is only after the disintegration of the Gupta empire, when a number of region-based kingdoms were established in the country, that the construction of various types of forts received fresh impetus. In the Deccan a new era of fort-building activity started in the 7th-8th century AD. The early Cālukyas built a hill-fort at their capital Bādāmī in Karnataka. Then the Yādavas and the Śīlāhāras, who ruled over Maharashtra and the adjoining areas in the 11th-12th century, gave much prominence to hill-forts. The Yādavas selected the impregnable Devagiri fortress as their capital and the Śīlāhāras established their capital at the Panhāḷa hill-fort near Kolhapur.

The Devagiri fort was captured by Ala-ud-Din Khilji in 1294 AD, marking the first Muslim invasion of the Deccan. Nearly half a century later, in 1347 AD, the Bahamanī rule was established in the Deccan. They introduced several new elements in the traditional fort architecture. The Bahamanīs were followed by the Marathas, who renovated and strengthened the existing forts and also built some new ones of various types. These are the "Forts of Maharashtra" we have to discuss in some detail. But before that it would be worthwhile to have a look at the physical features of Maharashtra and its history.

Maharashtra : Physical Features

The State of Maharashtra, with its total area 3,06,345 sq. kms, extends between 22.1 and 15.8 degrees north latitude and 72.6 and 80.9 degrees east longitude. The present population of the state is nearly nine crores and Marāṭhī is the most widely used language. Physiographically, Maharashtra consists of two main divisions : (1) The Deccan Plateau, and (2) the Koṅkaṇa plain. The plateau is one mass of basaltic lava which erupted and spread over the ancient land surface some 100 million years ago. A long period of denudation and weathering have given a characteristic topography to the land. Residual hills, often towering high into series of terraces, and punctuated by peaks, and basins forming river valleys, have sprung up. The eastern drier parts of the plateau have developed into the famous 'black cotton soil'.

The coastal strip of Koṅkaṇa is believed to be a platform of marine denudation raised to form a narrow plain nowhere more than about 85 kms wide. It is neither uniformly level nor straight, nor equally fertile. At times the western spurs of the Sahyādra reach up to and sometimes into the sea.

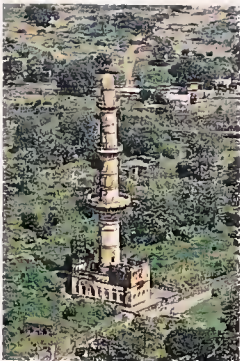
The most dominating feature of Maharashtra is the Sahyādra range or the Western Ghāṭas, running north-south, close to the western coast. Its length is about 640 kms and the height varies from 900 to 1660 metres. The width varies from 10 to 20 kms. One striking feature of the Sahyādra is the large plateau on hilltops at many points. In olden times, these became the famous hill-forts which played an important role in the history of Maharashtra, and also in the history of India.

Formed of steep and successive ranges, the Ghāṭas (also called *ghāṭamāthā* in Marathi) are almost impassable except through some well-defined gorges which have formed the passes (called *ghāṭas* in Marathi) connecting the Deccan plateau and the Koṅkaṇa. In historical times, every ruler had to have a fort to control these passes. This area, therefore, has a large number of hill-forts.



पुरंदर का दूरदृश्य
Distant view of Purandara

सन् 1294 में अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरि के दुर्ग पर कब्जा कर लिया। वह दक्खन पर पहला मुस्लिम आक्रमण था। उसके करीब आधी शताब्दी बाद, 1347 ई. में, दक्खन में बहमनी शासन स्थापित हुआ। उन्होंने परंपरागत स्थापत्य में कई नई चीजें जोड़ीं। बहमनियों के बाद मराठों का शासन शुरू हुआ। मराठों ने पहले से मौजूद दुर्गों का पुनर्निर्माण किया, उन्हें मजबूत बनाया और विभिन्न प्रकार के नए दुर्ग भी स्थापित किए। यही हैं “महाराष्ट्र के दुर्ग”, जिनकी हमें कुछ विस्तृत चर्चा करनी है। मगर उसके पहले महाराष्ट्र की भौतिक विशेषताओं और इसके इतिहास पर एक नजर डाल लेना उपयोगी होगा।



चांद मीनार, देवगिरि दुर्ग Cānda Mīnāra, Devagiri fort

महाराष्ट्र : भौतिक विशेषताएं

महाराष्ट्र का समूचा क्षेत्रफल 3,06,345 वर्ग-किलोमीटर है। इसका विस्तार उत्तरी अक्षांश 15.8 से 22.1 तक और पूर्वी देशांतर 72.6 से 80.9 तक है। महाराष्ट्र की वर्तमान जनसंख्या लगभग नौ करोड़ है और यहां की प्रमुख भाषा मराठी है। भू-रचना की दृष्टि से महाराष्ट्र के दो प्रमुख विभाग हैं : (1) दक्खन का पठार, और (2) कोंकण का मैदान। पठार करीब दस करोड़ वर्ष पहले के ज्वालामुखियों से निकली बासाल्टी लावा के प्राचीन भूमि पर फैलने से बना है। लंबे समय तक के क्षरण और मौसमी प्रभावों के कारण आज की स्थलाकृति को इसका विशिष्ट स्वरूप प्राप्त हुआ है। जिन पहाड़ियों का निर्माण हुआ है, उनके ऊंचे-ऊंचे कगार हैं, बीच-बीच में उतुंग शिखर हैं और नदियों ने घाटियों का सृजन किया है। पठार के अपेक्षाकृत सूखे भागों में प्रसिद्ध “काली कपास मृदा” का निर्माण हुआ है।

कोंकण की समुद्री पट्टी, माना जाता है कि, समुद्र के अनावरण से उभरा हुआ चबूतरा है और यह कहीं पर भी 85 कि.मी. से अधिक चौड़ा नहीं है। यह पट्टी न तो एक-सी समतल है, न सीधी है, न ही एक-सी उपजाऊ है। कहीं-कहीं सख्खादि के पश्चिमी स्कंध समुद्र तक और कभी-कभी उसके भीतर भी पहुंच जाते हैं।

महाराष्ट्र की सबसे प्रमुख प्राकृतिक विशेषता है, पश्चिमी समुद्रतट के समीप उत्तर से दक्षिण फैली हुई सख्खादि पर्वत-श्रेणी अथवा पश्चिमी घाट। यह पर्वत-श्रेणी लगभग 640 कि. मी. लंबी है और इसकी ऊंचाई 900 से 1660 मीटर तक घटती-बढ़ती है। इसकी चौड़ाई 10 से 20 कि.मी. के बीच है। सख्खादि की एक खास विशेषता है इसकी चोटियों पर बने काफी विस्तृत मैदान। प्राचीन काल में ये शिखर-मंच प्रसिद्ध गिरिदुर्ग बन गए थे और इन्होंने महाराष्ट्र के और भारत के इतिहास में महत्व की भूमिका अदा की।

खड़ी कगार और क्रमिक श्रेणियों से बने ये घाट (जिन्हें मराठी में *घटमाथा* कहते हैं) प्रायः अलंघ्य हैं; इन्हें कुछ विशिष्ट घाटियों में कोंकण और दक्खन के पठार को जोड़ने के लिए बने दर्रे (जिन्हें मराठी में *घाट* कहते हैं) से ही पार किया जा सकता है। इन दर्रेों पर नियंत्रण रखने के लिए ऐतिहासिक काल में प्रत्येक शासक को दुर्ग का निर्माण करना पड़ा। इसलिए इस क्षेत्र में बहुत सारे गिरिदुर्ग हैं। महाराष्ट्र की दूसरी प्राकृतिक विशेषता यह है कि सख्खादि की आड़ी श्रेणियां नदी-घाटियों के बीच पूर्व की ओर फैली हुई हैं। मुख्य श्रेणियां हैं : कृष्णा और भीमा के बीच महादेव श्रेणी, भीमा और गोदावरी के बीच बाळाघाट श्रेणी और तापी-पूर्णा घाटियों और गोदावरी की द्रोणी के बीच सातमाळा-अजिंठा श्रेणी।

सख्खादि और पठार के बीच एक संकरी भू-पट्टी है, जिसे मराठी में *मावळ* यानी ‘सूर्यास्त का प्रदेश’ कहते हैं। यह भू-पट्टी न तो इसके पश्चिम की ओर के सख्खादि के समान ऊंची है, न ही इसके पूर्व की ओर के पठार की तरह सपाट है। यही मावळ प्रदेश शिवाजी का मुख्य आधार-क्षेत्र रहा है। मावळ प्रदेश के लोग, जिन्हें *मावळे* कहा जाता था, शिवाजी के वफादार और बहादुर सैनिक बने।

मावळ पट्टी के पूर्व में हलकी ढलान वाली जो मैदानी भूमि है, उसे मराठी में *देश* कहते हैं। यह बीच-बीच में नदियों और पहाड़ियों से व्याप्त है। मगर ये नदियां और पहाड़ियां

Another physical feature of Maharashtra is that the transverse ranges of the Sahyāдри are shooting eastward, in between the river valleys. The main ranges are : the Mahādeva ranges between the Krishnā and the Bhīmā, the Bālāghāṭa ranges between Bhīmā and the Godāvarī, and the Sātamālā-Ajantā ranges between the Tāpi-Pūrṇā valleys and the Godāvarī basin.

Between the Sahyāдри and the Plateau there is a narrow strip called *Māvaḷa* (literally, the land of the setting sun) in Marathi. This belt is neither as high as the Sahyāдри ranges on the west, nor as flat as the Plateau on the east. This area formed Shivaji’s main base. The people of the Māvaḷa area, called *Māvaḷes*, became Shivaji’s faithful companions and brave soldiers.

Towards the east of the Mavaḷa strip there is the gently sloping flattish land – the Plateau, called *Deśa* (plain) in Marathi. It is interspersed by rivers and hill ranges. These, however, proved no barriers to the invaders from the North. True, the plains were richer and happier to live in, but they were also exposed to the dangers of invasion and many battles were fought on them. Almost all ruling dynasties of ancient Maharashtra had their capitals in the Plateau. It was only Shivaji who established his capitals, first at Rājagaḍha and then at Rāyagaḍha, in the Sahyāдри.

Maharashtra is watered by many rivers – Tāpi, Godāvarī, Bhīmā, Krishnā, Wardhā and Wainagaṅgā. Other rivers are smaller streams ultimately merging into one of the main rivers. The Tāpi, with the Pūrṇā pouring into it, flows westward into the Arabian Sea. The Tāpi rises in the eastern Satpudās and the Pūrṇā in the Gāvilagaḍha hills. The basin, comprising part of Vidarbha and Khāndesh districts, has a number of forts on either side of it.

Godāvarī, the most important river of Maharashtra, rises at Tryambakeshwara, runs across Maharashtra and ultimately empties into the Bay of Bengal. The Godāvarī basin stands out prominently in the religious, cultural and political history of Maharashtra. Wardhā and Wainagaṅgā rivers, before meeting the Godāvarī, between them water the Vidarbha and the south-east region of Maharashtra.

The Krishnā river rises in the Mahābaḷeshwar hills. It has two major tributaries – the Bhīmā and the Pañcagaṅgā. Embracing Sātārā, Kolhāpur, Sāṅglī and Sholāpur districts, the Krishnā basin, though not all fertile, formed the strong, fighting and conquering arm of Shivaji. In the last quarter of the 17th century when the powerful Mughal army led by emperor Aurangzeb in person, descended on the Deccan to destroy the Maratha kingdom, it was the Krishnā basin that came to the rescue of Maharashtra.

The climate in Maharashtra varies a great deal. Whereas Western Maharashtra has a temperate climate, the Deccan Plateau has a more varied one – quite cold in winter and very hot in summer. The general climate along the Koṅkaṇa coast is hot and humid. Four centuries ago, when the forest cover was much denser, the rainfall was much greater and temperature much lower. In the monsoons, the forts of the Sahyāдри were almost unapproachable and remained isolated.

History of Maharashtra

The history of Maharashtra is of great antiquity. For our purpose, however, it is unnecessary to go beyond the occupation of Maharashtra by the Mauryas, some 2300 years ago. The terms *mahāraṭhi* (male) and *mahātaṭhini* (female) occur in the inscriptions from the caves at Kānherī and Beḍasā assigned tentatively to the 1st century BC. The land occupied or controlled by the *mahāraṭhi*s may have come to be called Maharashtra. It should also be noted that the name Vidarbha (Berar) is very old. It was one of the earliest settlement of the Āryans in the South.



कुलाबा द्वीपदुर्ग का दक्षिणी द्वार Southern gate of Kulāba sea fort



बल्लाळपुर किले की दीवार Rampart of Ballāḷapura fort



माणिकगढ़ दुर्ग का भग्न प्रवेश-द्वार Ruined gateway of Māṇikagaḍha fort



मेढ्रे के सिर वाली तोप, देवगिरि
Gun with ram's head, Devagiri



माहूर दुर्ग का हाथी दरवाजा
Hāthī Darawājā, Māhūra fort

उत्तर के हमलावरों के लिए बाधाएं नहीं बन सकी। यह सही है कि ये मैदान जीवन की सुख-सुविधाओं से सम्पन्न थे, मगर यहां हमलावरों का खतरा हमेशा बना रहता था। इन मैदानों पर बहुत से युद्ध लड़े गए। प्राचीन भारत के प्रायः सभी राजवंशों की राजधानियां इसी मैदानी प्रदेश में रही हैं। केवल शिवाजी ने ही अपनी राजधानियां सह्याद्रि में स्थापित कीं - पहले राजगढ़ में, फिर रायगढ़ में।

महाराष्ट्र की प्रमुख नदियां हैं - तापी, गोदावरी, भीमा, कृष्णा, वर्धा और वैनगंगा। वाकी छोटी नदियां हैं, जो किसी-न-किसी प्रमुख नदी में जाकर मिलती हैं। तापी, जिसमें पूर्णा नदी आकर मिलती है, पश्चिम की ओर बहते हुए अरब सागर में जाकर गिरती है। तापी का उद्गम पूर्वी सतपुड़ा में होता है और पूर्णा का गाविलगढ़ की पहाड़ियों में। इनकी घाटी में विदर्भ के कुछ हिस्से का और खानदेश के जिलों का समावेश होता है। इस घाटी के दोनों छोर पर कई किले हैं।

गोदावरी महाराष्ट्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है। त्र्यंबकेश्वर में उद्गम होने के बाद यह महाराष्ट्र में दक्षिण-पूर्व की ओर बहते हुए अंत में बंगाल की खाड़ी में जाकर गिरती है। महाराष्ट्र के राजनीतिक इतिहास और धर्म तथा संस्कृति में गोदावरी की घाटी ने बड़े महत्व की भूमिका अदा की है। वर्धा और वैनगंगा नदियां, गोदावरी से मिलने के पहले, मिल-जुलकर विदर्भ और महाराष्ट्र के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र को जलापूर्ति करती हैं।

कृष्णा नदी का उद्गम महाबलेश्वर की पहाड़ियों में होता है। इसकी दो सहायक नदियां हैं - भीमा और पंचगंगा। कृष्णा घाटी, जिसमें सातारा, कोल्हापुर, सांगली और सोलापुर जिलों का समावेश होता है, हालांकि सर्वत्र उपजाऊ नहीं है, मगर यह शिवाजी के संघर्ष और उनकी विजयों का मजबूत स्क्ंध रही है। सत्रहवीं सदी के अंतिम चरण में, जब स्वयं औरंगजेब के नेतृत्व में शक्तिशाली मुगल सेना मराठा राज्य को मिटा देने के इरादे से दक्खन में उतरी थी, तब कृष्णा की घाटी ही महाराष्ट्र की रक्षणस्थली बन गई थी।

महाराष्ट्र की जलवायु में काफी विविधता है। पश्चिमी महाराष्ट्र की जलवायु शीतोष्ण है, मगर दक्खन के पठार में जाड़े में काफी ठंड रहती है और ग्रीष्म में बहुत गरमी। कोंकण के तटवर्ती क्षेत्र में मौसम गर्म और आर्द्र रहता है। चार सदियों पहले जब जंगल अधिक घने थे, तब वर्षा अधिक होती थी और तापमान कम था। तब मानसून में सह्याद्रि के दुर्ग लगभग अगम्य बन जाते थे और एकाकी रह जाते थे।

महाराष्ट्र का इतिहास

महाराष्ट्र का इतिहास काफी प्राचीन है। परंतु हमारे प्रयोजन के लिए करीब 2300 साल पहले मौर्यों द्वारा महाराष्ट्र पर अधिकार जमाने के पहले का इतिहास अनावश्यक है। कान्हेरी (मुंबई के पास) और बेड़सा (लोणावला के पास) की गुफाओं में मिले ईसा पूर्व प्रथम सदी के अभिलेखों में *महारटि* (पुरुष) और *महारटिनि* (स्त्री) शब्द देखने को मिलते हैं। संभव है कि इन महारटियों द्वारा आबाद अथवा शासित प्रदेश को महाराष्ट्र नाम से जाना गया हो। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि *विदर्भ* नाम इससे भी अधिक प्राचीन है। यह दक्षिण में आर्यों की प्राचीनतम वस्तियों में से एक है।

दक्खन नाम भी, जो *दखन* पर आधारित है और *दक्षिणापथ* (अर्थात्, दक्षिणी मार्ग) से व्युत्पन्न है, बहुत पुराना है। लगभग 500 ई. पू. से नर्मदा के दक्षिण के कन्याकुमारी तक के प्रदेश के लिए सामान्यतः *दक्षिणापथ* शब्द का प्रयोग होता रहा है। बाद में व्यापक अर्थ वाले इस शब्द का स्थान *महाराष्ट्र* शब्द ने ले लिया।

सबसे प्राचीन राजवंश मौर्यों का है जिनके साम्राज्य का महाराष्ट्र एक हिस्सा था। नंदों के राज्य का विस्तार दक्खन तक हो गया था। चंद्रगुप्त मौर्य (लगभग 324-300 ई.पू.) ने नंदों को उखाड़ फेंका और संभवतः दक्खन के कुछ हिस्सों पर अधिकार भी जमा लिया था। मगर मुंबई और कोंकण क्षेत्र पर मौर्य शासन अशोक के समय (लगभग 274-232 ई.पू.) ही स्थापित हो सका। वसई के पास के सोपारा (प्राचीन शूर्पारक) स्थान से अशोक का एक खंडित शिलालेख मिला है। उस समय सोपारा और चौल (चंपावती) - जो मुंबई से ज्यादा दूर नहीं है - तटवर्ती व्यापार और बौद्ध शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र थे। मौर्य राजवंश ने कोंकण पर ईसा की सातवीं सदी तक शासन किया।

The appellation 'Deccan', apparently based on 'Dakhan', derived from Dakṣiṇāpatha (meaning 'the southern road'), can claim a higher antiquity. From about 500 BC, Dakṣiṇāpatha seems to have been a general name for the country south of the Narmadā up to Kanyākumāri. Later this term of wider significance began to be replaced by the name 'Maharashtra'.

The earliest dynasty to claim Maharashtra as a part of its empire was that of the Mauryas. The Nandas seem to have extended their sway to the Deccan, and Chandragupta Maurya (*circa* 324-300 BC), who supplanted the Nanda dynasty, may be presumed to have held parts of the Deccan. Mauryan rule over the Mumbai and Koṅkaṇa region comes only during the time of Aśoka (*circa* 274-232 BC). A fragment of Aśoka's Rock Edict was found at Sopārā (ancient Śurpāraka). At that time Sopārā and Caula (Campāvati) – now on the outskirts of Mumbai – were the most flourishing coastal trade centres and seats of Buddhist learning. A Maurya dynasty ruled in Koṅkaṇa as late as the 7th century AD.

The successors of the Mauryas in the Deccan were the Sātavāhanas, who described themselves as *Dakṣiṇāpathapati* (Lords of Dakṣiṇāpatha). Before them Nahapāna, the Śāka-Kṣatrapa, had occupied the Māvaḷa region and the Nāśika area in Maharashtra. The Sātavāhanas recovered these territories from Nahapāna around 124 AD under Gautamiputra Sātakarṇi. The Sātavāhanas rose to power in the last quarter of the 3rd century BC, soon after the death of Aśoka. Later, they extended their rule into Andhra. Their rule in parts of Maharashtra continued till about the first quarter of the third century AD. The history of some of the forts in the Sātamālā range north of Nāśika certainly goes back to the period of the Sātavāhanas. This range and the region around has one of the densest concentration of formidable hill-forts.

The Ābhīras were the successors of the Sātavāhanas. According to inscriptions from Kānherī and Nāśika, the Ābhīra king Īśvarasena seems to have established his dynasty around 250 AD. The Ābhīras or Ahīras or Gavaḷis (i.e. cowherds community) ruled northern Maharashtra (Khāndesh and part of Vidarbha) for some time. The fort of Añjaneri, near Nāśika, was their capital. Their name is also associated with the strongholds of Gāvilagaḍha in Amarāvati district, Aśiragaḍha near Burhānpur and Thālaner on the bank of Tāpī.

The next important dynasty to rule over parts of Maharashtra was that of Vākātakas, contemporaries of the imperial Guptas. The dynasty split into two branches with the main branch ruling in the Nagpur area and the other with its centre in Vatsagulma (modern Vāṣima in Vidarbha). Being peaceful time, they do not seem to have constructed new forts. However, a part of Ajantā was begun under the Vākāṭaka rulers of the Vatsagulma branch and inscriptions in Cave 16 and 17 mention this dynasty

Upon the decline of the Vākātakas, the centre of political power shifted to the Cālukyās of Bādāmī. Later, at the time of Pulakeṣina II (619-42 AD), practically all of Maharashtra became Cālukya territory. But the Rāṣṭrakūṭa king Dantidurga overthrew the Cālukyās around 752 AD and established his dynasty which soon, under his successors, Krishna I, Govinda II and Dhruva, became an imperial power. The matchless Kailāsha temple at Veruḷa (Ellorā) and the superb hill-*cum*-land fort at Devagiri, at least its scraping, came into being at the time of the Rāṣṭrakūṭas.

The Rāṣṭrakūṭas had ceased to exist by about 975 AD. Then followed the rule of three Śīlāhāra families, all feudatories of the Rāṣṭrakūṭas. One family ruled over North Koṅkaṇa, another over South Koṅkaṇa and the third one over the Kolhāpur and Sātārā region. The last and greatest ruler of the third line was Bhoja II who ruled from Panhāḷa fort from c.1175 to c.1215 AD. From an inscription dated 1191-92 AD,

दक्खन में मौर्यों के उत्तराधिकारी थे सातवाहन, जिन्होंने अपने को *दक्षिणापथपति* (दक्षिणापथ, यानी दक्खन के स्वामी) कहा है। उनके पहले शक-क्षत्रप नहपान ने महाराष्ट्र के मावळ और नासिक क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्ण ने 124 ई. के आसपास उस क्षेत्र को नहपान से पुनः प्राप्त कर लिया। अशोक के देहांत के तुरंत बाद, ईसा पूर्व तीसरी सदी के अंतिम चरण में सातवाहन शक्ति का उदय हुआ था। बाद में उन्होंने आंध्र में भी अपने राज्य का विस्तार किया। महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में उनका शासन ईसा की तीसरी सदी के प्रथम चरण तक कायम रहा। नासिक के उत्तर की सातमाळा पर्वत-श्रेणी में स्थित कुछ गिरिदुर्गों का इतिहास सातवाहन काल तक पीछे जाता है। इस श्रेणी और इसके आसपास के क्षेत्र में दुर्जेय गिरिदुर्गों का घनत्व सबसे ज्यादा है।

सातवाहनों के उत्तराधिकारी थे - आभीर। कान्हेरी और नासिक से प्राप्त अभिलेखों से पता चलता है कि आभीर राजा ईश्वरसेन ने 250 ई. के आसपास अपना राजवंश स्थापित किया था। आभीर, अहीर या गवली (ग्वाले) जनजाति ने कुछ समय तक उत्तरी महाराष्ट्र (खानदेश और विदर्भ का एक भाग) पर शासन किया। नासिक के नजदीक के अंजनेरी दुर्ग में उनकी राजधानी थी। गाविलगढ़ (अमरावती जिला), असीरगढ़ (बुरहानपुर के पास) और थालनेर (तापी के तट पर) दुर्गों के साथ भी उनके नाम जुड़े हुए हैं।

महाराष्ट्र के कुछ भागों पर शासन करने वाला अगला महत्वपूर्ण राजवंश था - वाकाटक, जो गुप्त सम्राटों के समकालीन थे। यह राजवंश दो शाखाओं में विभाजित हो गया था। मुख्य शाखा ने नागपुर क्षेत्र में शासन किया और दूसरी शाखा ने वत्सगुल्म (विदर्भ में आधुनिक वाशीम) से। वह काफी हद तक शांति का समय था, इसलिए लगता है कि वाकाटकों ने नए दुर्गों का निर्माण नहीं किया। परंतु वाकाटकों की वत्सगुल्म शाखा के शासकों के समय में अजिंठा (अजंता) की कुछ गुफाओं का निर्माण हुआ, यह बात नं. 16 और नं. 17 की गुफाओं में उपलब्ध उनके अभिलेखों से प्रमाणित होती है।

वाकाटकों के अवसान के बाद बादामी के चालुक्य राजनीतिक शक्ति के केंद्र बन गए। बाद में, पुलकेशिन-द्वितीय के समय (619-42 ई.) में लगभग समूचे महाराष्ट्र पर चालुक्यों का अधिकार हो गया। परंतु राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग ने 752 ई. के आसपास चालुक्यों को उखाड़ फेंका और अपना राजवंश स्थापित किया। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण-प्रथम, गोविंद-द्वितीय और ध्रुव शक्तिशाली शासक हुए। राष्ट्रकूटों के समय में ही वेरूळ (एलोर) का अनुपम कैलाश मंदिर और देवगिरि का दुर्जेय स्थल-गिरी दुर्ग, कम-से-कम इसका खड़ा कगार, अस्तित्व में आए।

लगभग 975 ई. तक राष्ट्रकूटों का अवसान हो गया। उसके बाद राष्ट्रकूटों के सामंत रहे शिलाहारों के तीन परिवारों का शासन शुरू हुआ। एक परिवार ने उत्तरी कोंकण पर शासन किया, दूसरे ने दक्षिण कोंकण में और तीसरे परिवार ने कोल्हापुर-सातारा क्षेत्र में शासन किया। तीसरी शाखा का अंतिम और सबसे शक्तिशाली शासक था - भोज-द्वितीय, जिसने



अजिंक्यतारा-सातारा दुर्ग
Ajinkyatārā-Sātārā fort

पन्हाळा दुर्ग से लगभग 1175 ई. से लगभग 1215 ई. तक शासन किया। 1191-92 ई. के एक अभिलेख से जानकारी मिलती है कि भोज-द्वितीय ने सातारा-कोल्हापुर क्षेत्र में कम-से-कम 15 किले बनवाए थे। इनमें, अन्य किलों के अलावा, अजिंक्यतारा-सातारा, बावड़ा और विशालगढ़ किलों का समावेश होता है। पन्हाळा दुर्ग संभवतः पहले से ही मौजूद था। अंत में देवगिरि के शक्तिशाली यादव नरेश सिंघण ने पन्हाळा पर आक्रमण किया, उस पर अधिकार कर लिया और भोज-द्वितीय को पकड़कर उसी दुर्ग में कैद कर दिया।

आरंभिक यादव शासक राष्ट्रकूटों के सामंत थे। भिल्लम-द्वितीय (लगभग 975-1005 ई.) पहला यादव शासक है, जिसके बारे में उसके ताम्रपत्रों से जानकारी मिलती है। परंतु भिल्लम-पंचम (1185-93 ई.) वह शक्तिशाली यादव शासक था, जिसने देवगिरि शहर की स्थापना की और वहां लगभग 1187 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाके उसे अपनी राजधानी बनाया। देवगिरि महाराष्ट्र के लगभग केंद्रभाग में स्थित है, इसलिए यह एक प्रकार

Bhoja II constructed at least 15 forts around Sātārā-Kolhāpur, which included among others, Ajīṅkyatārā-Sātārā, Bāvaḍa and Viśālagāḍha. Panhāla fort, perhaps, was an earlier construction. Ultimately, Siṅghaṇa, the mighty Yādava king of Devagiri, invaded the Śīlāhāra kingdom, captured Panhāla fort, and taking Bhoja II captive, threw him into prison on the same fort.

The early Yādavas were feudatories of the Rāṣṭrakūṭas. Bhillama II (c. 975-1005 AD) is the earliest Yādava ruler so far known from his own grant. However, it was the powerful Yādava king Bhillama V (1185-93 AD) who founded the city of Devagiri and having got himself crowned there in c. 1187 AD, made that city his capital. Devagiri was more centrally situated and was in the heart of Maharashtra. By the end of the 12th century, north-western Deccan also had come under the rule of Yādavas. It was during the reign of king Siṅghaṇa II (1210-46 AD) that the Yādava empire reached the zenith of its power and prestige.

About the authorship and date of the Devagiri fort, there is difference of opinion among scholars. Stuart Piggot attributes 'this colossal piece of work' to Bhillama V, who made Devagiri his capital. But construction of such marvellous and impregnable fort must have taken a long time. It is likely that the fort was constructed during the reign of Siṅghaṇa II. Later, when the fort fell into the hands of Muslim rulers, they introduced many changes into it.

Another significant fort of the Yādava period is at Āṅkāi in the Nāsik district. The fort rises 274 metres above the plane. As in the case of Devagiri fort, the rock was scarped on its four sides making them smooth and inaccessible. The ascent to the fort is very difficult. At one time it had seven lines of fortifications, perhaps the maximum among the Deccan forts. About a kilometre north-east of Āṅkāi is the satellite fort Taṅkāi which was used as storehouse for the main fort. The forts of Tryambaka and Harihara near Nāsik, in all probability, belong to the Devagiri category and thereby of the Rāṣṭrakūṭa-Yādava origin.

The first attack by the armies of the Delhi Sultans on the territory to the south of the Narmadā was made in 1294 AD by Alā-ud-dīn Khiljī, who captured Devagiri and compelled Rājā Rāmachandra, the Yādav ruler, to surrender. The end of the Yādava kingdom came in 1318 AD, and it was followed by a series of Muslim dynasties.

After the fall of the Yādavas, two new powers were established in the Deccan : the Vijayanagar empire in 1326 AD and the Bahamanī kingdom in 1347 AD. Rāyārī fort, later named as Rāyagaḍha by Shivajī, finds mention in the 14th century Vijayanagara records. However, it is the Bahamanī dynasty which is more important in the context of our theme – the forts of Maharashtra. The Bahamanīs, who later were split into five branches – Nizāmshāhī of Ahamadnagar, Ādilshāhī of Vijāpur, Imādshāhī of Ellichpur (Vidarbha), Kutbshāhī of Golkundā and Barīdshāhī of Bīdar – built and renovated many forts in the Deccan.

The Bahamanīs introduced many changes in the style of fort architecture based on the Turkish and Persian styles. It was in this period that gunpowder came to be used in warfare in Europe and Central Asia. Its introduction in India made several changes necessary in the construction of ramparts, parapets, bastions, barbicans, etc. Fortified towns rather than the hill-forts became the pivots of the new defensive system. The Bahamanīs established new towns on open plain land and got them formidably fortified. Fortified towns like Ahamadnagar, Bīdar, Vijāpur and



अहमदनगर किले की दीवार
Wall of Ahamadanagar fort



बारादरी, देवगिरि दुर्ग
Bārādari, Devagiri fort



त्र्यंबक गिरिदुर्ग का दूरदृश्य
A distant view of Tryambaka hill fort



देवगिरि दुर्ग
Devagiri fortress

पिर्गोंट ‘इस विराट निर्माण-कार्य’ का श्रेय देवगिरि को अपनी राजधानी बनाने वाले शासक भिल्लम-पंचम को देते हैं। मगर ऐसे अद्भुत और अजेय दुर्ग के निर्माण के लिए काफी ज्यादा समय लगा होगा। अधिक संभव यही जान पड़ता है कि इस दुर्ग का निर्माण सिंघण-द्वितीय के शासनकाल में हुआ। बाद में जब इस दुर्ग पर मुस्लिम शासकों का अधिकार हो गया, तो इसमें कई परिवर्तन किए गए।

यादव काल का एक और महत्वपूर्ण दुर्ग अंकाई (नासिक जिला) है। यह दुर्ग मैदान से 274 मीटर ऊंचा है। देवगिरि दुर्ग की तरह यहां भी चारों ओर की चट्टानी कगार को छंटकर उसे चिकना और दुर्लघ्य बना दिया गया है। दुर्ग पर पहुंचने का मार्ग बहुत कठिन है। एक समय इस दुर्ग के सात परकोटे थे, जो दक्खन के किसी किले के लिए संभवतः महत्तम थे। अंकाई के करीब एक किलोमीटर उत्तर-पूर्व में तंकाई नामक साथी-दुर्ग है, जिसका उपयोग मुख्य दुर्ग के भंडारगृह के रूप में किया जाता था। नासिक के नजदीक के त्र्यंबक और हरिहर दुर्ग काफी हद तक देवगिरि की तरह के हैं, इसलिए ये राष्ट्रकूल-यादव काल के हो सकते हैं।

अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुलतान था, जिसकी फौज 1294 ई. में नर्मदा के दक्षिण के प्रदेश में पहुंची थी। उसने देवगिरि पर कब्जा करके यादव नरेश रामचंद्र को शरण में आने के लिए विवश किया। 1318 ई. में यादव राज्य का अंत हो गया और उसके बाद मुस्लिम राजवंशों के शासन का सिलसिला शुरू हुआ।

यादवों के अवसान के बाद दक्खन में दो नई शक्तियों की स्थापना हुई - 1326 ई. में विजयनगर साम्राज्य की ओर 1347 ई. में बहमनी राज्य की। जिसे बाद में शिवाजी ने रायगढ़ का नाम दिया था, उस रायरी दुर्ग का विजयनगर के दस्तावेजों में उल्लेख मिलता है। मगर हमारे विषय - महाराष्ट्र के दुर्ग - के संदर्भ में बहमनी राजवंश का अधिक महत्व है। बाद में बहमनियों का पांच शाखाओं में विभाजन हो गया था - अहमदनगर की निजामशाही, बीजापुर की आदिलशाही, एलिचपुर (विदर्भ) की इमादशाही, गोलकुंडा की कुतुबशाही और बीदर की बरीदशाही। इन बहमनियों ने दक्खन में कई किलों का निर्माण और जीर्णोद्धार किया।

बहमनियों ने तुर्की और ईरानी शैली के अनुकरण पर दुर्ग-स्थापत्य में कई परिवर्तन किए। यह वह दौर था, जब यूरोप और मध्य एशिया में बारूद का इस्तेमाल युद्धों में होने लगा। भारत में इसका प्रवेश हुआ तो प्राकारों, पडकोटों, बुर्जों, गजगढ़ों आदि के निर्माण में कई तरह के परिवर्तन करने आवश्यक हो गए। गिरिदुर्गों के बजाए किलेबंद शहर नई रक्षा-प्रणाली की धुरी बन गए। बहमनियों ने खुली मैदानी भूमि पर नए नगर बसाए और उनकी मजबूती से किलेबंदी की। बहमनी काल में अहमदनगर, बीदर, बीजापुर और गुलबर्गा के किलेबंद नगरों ने बड़ी ख्याति प्राप्त की। बहमनियों ने गिरिदुर्गों पर विशेष ध्यान नहीं दिया; अपवाद थे माहूर, शिवनेरी और सिंहगढ़ गिरिदुर्ग। शिवाजी ने ठीक इसी स्थिति का लाभ उठाया और प्रमुखतः सहाद्री के गिरिदुर्गों के बल पर अपना नया राज्य स्थापित किया।

शिवाजी भोसले

सोलहवीं सदी के अंतिम दशक में पश्चिमी महाराष्ट्र में भोसलों का उदय हुआ। मराठों के इसी भोसले परिवार में शिवाजी का जन्म हुआ। शिवाजी के दादा मालोजी की पुणे परिसर में जागीर थी और निजामशाही के अंतर्गत वह शिवनेरी तथा चाकण किलों के किलेदार थे। मालोजी के बेटे और शिवाजी के पिता शाहजी ने आरंभ में निजामशाही के एक संरक्षक की भूमिका अदा की, मगर बाद में वह बीजापुर के आदिलशाह की सेवा में चले गए; बीच में कुछ समय तक वह मुगलों की सेवा में भी रहे। दुर्गों पर आधारित सामरिक व्यवस्था को अपनाकर उन्होंने गोरिल्ला (छापामार) पद्धति से कई लड़ाइयां लड़ीं। उनके बेटे शिवाजी ने इस गोरिल्ला पद्धति में और अधिक सुधार किया और मुख्यतः दुर्गों के बल पर अपने नए मराठा राज्य की स्थापना की।

Gulbargā acquired great importance during the Bahamanī period. The Bahamanīs did not pay much attention to the hill-forts, the exceptions being Māhūra, Śivanerī and Sīmhagaḍha. Shivājī took advantage of this very situation and built his new kingdom mainly with the help of the Sahyādri hill-forts.

It should also be noted that not all the forts of Maharashtra are the creation of the famous dynasties and the Marathas. Quite a number of them, particularly in northern Khāndesha, Vidarbha and the Chanrapur-Nagpur region, were constructed by tribal rulers, such as the Gavaļīs and the Goṇḍas.

Shivaji Bhosale

In the last quarter of the 16th century western Maharashtra witnessed the rise of the Bhosales, the Maratha family in which Shivaji was born. Māloji, the grandfather of Shivaji, was holding the *jāgīr* (fief) around Pune and command of the forts of Śivanerī and Cākaṇa, under the Nizāmshāhī. Shāhaji, the son of Māloji and father of Shivaji, initially acted as the chief defender of the Nizāmshāhī and then shifted his services to the Ādilshāh of Bijapur, serving the Mughals for a short period in between. Adopting fort-oriented military strategy, Shāhaji fought many battles employing the guerilla technique of warfare. This strategy was further improved by his son Shivaji, who created a new Maratha kingdom based mainly on forts.

Shivaji, indeed, was a fort-native. He was born at the fort of Śivanerī on 19 February 1630. Sir Richard Temple in his book *Shivaji and the Rise of the Marathas* writes of Śivanerī : “You will see what a rugged precipitous place this is and what a fitting spot it was for a hero to be born!” Shivaji was coronated (1674 AD) and breathed his last (1680 AD) at the Rāyagaḍha fort. His two sons, Sambhājī and Rājārāma, were also born at forts, the first one at Purandara and the second at Sīmhagaḍha. Out of his 50 years’ (total 18,306 days) not-so-long life, Shivaji spent at least 8557 recorded days at one or the other fort.

Shivaji grew up amidst the hills and valleys of Puṇe district. The western belt of the Puṇe district, running along the Western Ghātas for a length of about 150 kms and a breadth of 20 km to 35 kms, is known as *Māvaḷa*, the Sunset Land, and the hardy people living there as *Māvaḷes*. Extremely rugged, the *Mavaḷa* strip has a series of table-lands cut on every side by deep winding valleys. Each valley boasted of a high hill crowned by a fort or fortress, providing good defence to the people. The *Mavaḷa* belt became the cradle of Shivaji’s activities and the *Mavaḷes* formed the backbone of his army.

Young Shivaji had developed passionate attachment to this *Mavaḷa* country. Initially with Dādoji Koṇḍadeva (Shivaji’s guardian and manager of his Puṇe *jāgīr*, who died in March 1647 AD) and afterwards independently, he trekked the *Māvaḷa* territory widely and became familiar with its every nook and corner. Barthelemmy Carre, the Director General of the French East India Company during 1668-73, wrote, “Geography of which he (Shivaji) has mastered and to such an extent as to know not merely all the towns including the smallest villages of the country, but even the land and the bushes of which he has prepared very exact charts.”

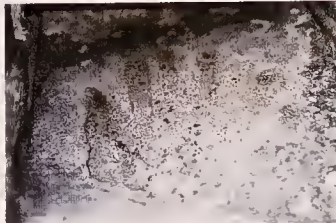
The desire to possess forts and establish his *Swarājya* must have occurred to Shivaji around 1645 AD, when he was barely fifteen-years old. He chalked out his strategy. In 1646 AD, young Shivaji with a small following silently occupied the Torāṇa fort, about 40 kms south-west of Puṇe.



सिंहगढ़ दुर्ग का दूरदृश्य
A distant view of Sīmhagaḍha fort



शिवाजी की मूर्ति, सिंधुदुर्ग किला
Image of Shivaji, Sindhudurga fort



शिवाजी के पंजे की छाप, सिंधुदुर्ग किला
Shivaji's palm-print, Sindhudurga fort

शिवाजी वस्तुतः एक दुर्गवासी व्यक्ति थे। शिवनेरी दुर्ग पर 19 फरवरी, 1630 को उनका जन्म हुआ था। सर रिचार्ड टेंपल अपनी पुस्तक *शिवाजी और मराठों का उत्थान* में लिखते हैं : “आप देखेंगे कि यह स्थान कितना ढलुआ और ऊंचा-नीचा है और एक जननायक के जन्म के लिए कितना उपयुक्त है !” शिवाजी का राज्याभिषेक (1674 ई.) और देहावसान (1680 ई.) रायगढ़ गिरिदुर्ग पर हुआ। उनके दो पुत्रों - संभाजी और राजाराम - का जन्म भी दुर्गों पर ही हुआ - पहले का पुरंदर पर और दूसरे का रायगढ़ पर। अपने 50 वर्ष (कुल 18,306 दिन) के नातिदीर्घ जीवन में से शिवाजी ने कम-से-कम 8558 दिन किसी-न-किसी दुर्ग पर गुजारे। शिवाजी का बचपन पुणे जिले की पहाड़ियों और घाटियों में बीता। पुणे जिले की पश्चिमी पट्टी, जो पश्चिमी घाट के समांतर करीब 150 कि.मी. लंबी और 20 से 35 कि.मी. तक चौड़ी है, *मावळ* (यानी सूर्यास्त का प्रदेश) कहलाती है और यहां के निवासी *मावळे* अत्यधिक ऊंची-नीची इस मावळ पट्टी में गहरी घुमावदार घाटियों से घिरे हुए बहुत सारे पठार हैं। प्रत्येक घाटी में एक ऊंची पहाड़ी है और उस पर पास के प्रदेश को रक्षा प्रदान करने वाला एक दुर्ग मौजूद है। मावळ पट्टी शिवाजी के कार्यकलापों का मुख्य क्षेत्र बनी और यहां के मावळे लोग उनकी सेना के आधारस्तंभ बने।



प्रतापगढ़ गिरिदुर्ग का दूरदृश्य
A distant view of Pratāpagaḍha fort

तरुण शिवाजी को मावळ प्रदेश से गहरा लगाव हो गया था। आरंभ में दादोजी कोंडदेव (शिवाजी के संरक्षक और पुणे की उनकी जागीर के व्यवस्थापक, जिनका मार्च 1647 में देहांत हुआ) के साथ और बाद में स्वतंत्र रूप से उन्होंने मावळ प्रदेश की यात्राएं कीं और इस तरह उसके चप्पे-चप्पे का परिचय प्राप्त किया। 1668-73 ई. की कालावधि में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टर जनरल रहे बार्थेलैमू कार ने लिखा है : “उसने (शिवाजी ने) भूगोल का गहन अध्ययन किया था - इतना गहन कि वह न केवल अपने प्रदेश के प्रत्येक शहर और छोटे-छोटे गांवों से परिचित था, बल्कि सारी भूमि और उसके पेड़-पौधों से भी परिचित था, और उनके शिवाजी ने टीक-टीक नक्शे तैयार किए थे।”

शिवाजी के मन में दुर्गों पर अधिकार करके स्वराज्य स्थापित करने की इच्छा 1645 ई. के आसपास तब जगी होगी, जब वे मुश्किल से पंद्रह साल के थे। उन्होंने अपनी रणनीति तय की। 1646 ई. में तरुण शिवाजी ने अपने थोड़े से साथियों को लेकर पुणे से करीब 40 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित तोरणा किले पर चुपके से अधिकार कर लिया। इस प्रथम प्रयास के बाद उन्होंने कोंडाणा पर कब्जा किया, जिसे 1647 ई. में सिंहगढ़ नाम दिया गया। उसके बाद उन्होंने पुरंदर और मुरुमदेव दुर्गों पर कब्जा किया। इनमें दूसरा दुर्ग, जिसे उन्होंने राजगढ़ नाम दिया, 1670 ई. तक उनकी राजधानी बना रहा।

इस प्रकार, एक प्रतापी और दृढ़निश्चयी योद्धा का जीवनक्रम शुरू करने के बाद शिवाजी ने अपनी शक्ति मौजूदा दुर्गों पर कब्जा करने, जरूरत के अनुसार उनकी मरम्मत करने और नए दुर्गों के निर्माण में लगा दी। बहमनियों ने उत्तर की मुगल शक्ति से और दक्षिण के विजयनगर साम्राज्य से रक्षा के लिए अपने राज्य की सीमाओं पर दुर्गों की एक शृंखला स्थापित की थी। शिवाजी ने भी विशिष्ट सामरिक दृष्टि से दुर्ग के स्थान का चयन करने पर विशेष ध्यान दिया। शिवाजी ने दुर्गों की जो शृंखलाएं स्थापित कीं, वे उनकी रक्षा-पंक्तियां बन गईं।

दुर्गों के प्रकार

आरंभिक मराठा काल में महाराष्ट्र में करीब 350 दुर्गों का अस्तित्व रहा है। अधिकतर समकालीन दस्तावेजों में उन्हें तीन प्रकारों में विभाजित किया गया है : (1) स्थलदुर्ग, (2) गिरिदुर्ग, और (3) जलदुर्ग। *आज्ञापत्र* में भी केवल इन्हीं तीन प्रकारों का उल्लेख है। परंतु शिवाजी के समकालीन कवि परमानंद ने अपने *शिवभारत* में एक और प्रकार को जोड़ा है - वनदुर्ग।

This first capture was followed by Koṇḍāṇā, which was renamed as Siṃhagaḍha in 1647 AD. Then Shivaji took possession of the forts of Purandara and Murumdeva, the second one later renamed as Rājagaḍha which remained his capital till 1670 AD.

Thus, well set on the career of a brilliant and determined warrior, Shivaji concentrated his energies on capturing the existing forts, renovating and strengthening them wherever necessary and building new ones when occasion arose. The Bahamanīs had erected a chain of forts on the borders of their kingdom to protect it from the Mughal power in the north and the Vijayanagara empire in the south. Shivaji also took great care in choosing the location of a fort for a definite strategic purpose. The chains of forts that Shivaji created formed his lines of defence.

Types of Forts

During the early Maratha period there existed about 350 forts in Maharashtra. In most of the contemporary documents they have been classified into three types : (i) *Sthaladurg* (Ground fort), (ii) *Giridurga* (Hill fort), and (iii) *Jaladurga* (Marine fort). The *Ajñāpatra* also mentions only these three types of forts. But Poet Paramānanda, a contemporary of Shivaji, in his *Śivabhārata* added one more type – *Vanadurga* (Forest fort).

Forest Forts

Forest fort did not mean a fort constructed in the forest, but ‘forest’ itself. The dense forests in the Sahyāдри provided shelter to the Marathas and also assisted them in conducting forays and assaults. The forest trees with their dense foliage were very important both in defence and offence. For example, the way to Viṣāлагаḍha was through a dense forest along the narrow gorge known as *Ghoḍa or Pavana khiṇḍa* (pass). It was this forested pass that helped Shivaji in his safe escapement from Panhālā to Viṣāлагаḍha. In 1661, when the Mughal army entered the densely forested Umbarakhiṇḍa, Shivaji by secret and rapid marches came up with them, and cutting off their lines of advance and retreat, forced the Mughal commander Kār Talab Khan to surrender. *Ajñāpatra* emphatically equated the defence of the fort with the preservation of the forest round it and warned that, ‘conscious efforts should be made to grow this thicket and not a single stick from it be allowed to fell’.

Ground Forts

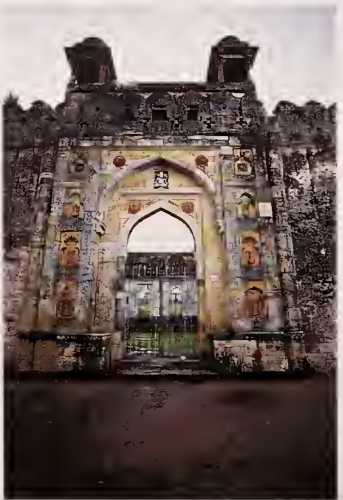
As we have mentioned earlier, the ground forts were given more importance in the Bahamanī period. But Shivaji did not pay much attention to them. The main reason was that he concentrated on acquiring and constructing hill-forts in the narrow Māvaḷa and Koṅkaṇ strips. Another reason was that most of the ground forts of Maharashtra, such as Parāṇḍā, Naḷadurga, Solāpur, Ahamadnagar, etc., were in the firm control of the Muslim rulers. Kalyāṇa and Cākaṇa were important ground forts, but they were in the hands of the Mughals. Shivaji understood the significance of Cākaṇa as a guarding fort for Pune, acquired it in his early career, but lost it to the Mughals in 1660 AD. Shivaji did not possess many ground forts.

Hill Forts

The Bahamanīs did not attach much importance to the hill forts and treated them as mere outposts. Shivaji, on the other hand, considered the hill forts of crucial importance for his programme of *Swarājya*. And, Sahyāдри offered the most suitable natural topography for this type of forts. “The whole of the Ghāṭs and neighbouring mountainous often terminate towards the top in a wall of smooth rock, the highest points of



माहूर दुर्ग
Mahūra Fort



नगरधन दुर्ग का मुख्य प्रवेश-द्वार
Main gate of Nagaradhana fort



समुद्री द्वार, वसई दुर्ग
Sea gate, Vasai fort



बालेकिल्ला द्वार, पुरंदर गिरिदुर्ग
Citadel gate, Purandara hill fort



मुख्य द्वार, अजिंक्यतारा-सातारा दुर्ग
Main gate, Ajinkyatārā-Sātārā fort

वनदुर्ग

वनदुर्ग का अर्थ वन में निर्मित दुर्ग नहीं है, बल्कि स्वयं ‘वन’ है। सद्वाद्री के घने वनों ने मराठों को न केवल आश्रय प्रदान किया, अपितु छापा मारने और हमला बोलने में भी मदद दी है। सघन पर्णावली वाले वनवृक्ष आक्रमण और संरक्षण, दोनों के लिए महत्वपूर्ण थे। उदाहरण के लिए, विशालगढ़ जाने के लिए *घोड़* या *पवन खिंड* नामक दर्रे का जो रास्ता है, वह घने जंगल से गुजरता है। 1660 ई. में शिवाजी पन्हाळा दुर्ग से चुपचाप निकलने के बाद इसी वनाच्छादित दर्रे से होकर विशालगढ़ सुरक्षित पहुंच गए थे। सन् 1661 में जब मुगल सेना उंबरखिंड के घने जंगल में उतर गई, तो शिवाजी तेजी से और गुप्त रास्ते से उन तक पहुंच गए। फिर उन्होंने उनका आगे बढ़ने का और पीछे लौटने का मार्ग काट डाला और इस प्रकार मुगल सेनापति कार तलब खान को समर्पण के लिए मजबूर कर दिया। *आज्ञापत्र* में दुर्ग की रक्षा के लिए उसके चतुर्दिक् के वन की सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया है, और हिदायत दी गई है कि ‘ऐसे वन के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और उसमें से एक भी डंडी तोड़ने की मनाही होनी चाहिए।’

स्थलदुर्ग

जैसा कि हमने पहले बताया है, बहमनी काल में स्थलदुर्गों को अधिक महत्व दिया गया था। मगर शिवाजी ने उन्हें विशेष महत्व नहीं दिया। मुख्य कारण यह था कि उन्होंने मावळ और कोकण की संकरी पट्टियों के दुर्गों पर कब्जा करने और उनकी मरम्मत करने पर ज्यादा ध्यान दिया। दूसरा कारण यह है कि अधिकांश स्थलदुर्ग, जैसे कि पर्रिंडा, नलदुर्ग, सोलापुर, अहमदनगर आदि, मुस्लिम शासकों के अधिकार में थे। कल्याण और चाकण के स्थलदुर्ग महत्वपूर्ण थे, परंतु वे मुगलों के अधिकार में थे। शिवाजी ने पुणे के रक्षक के रूप में चाकण स्थलदुर्ग का महत्व समझ लिया था और शुरू के दौर में ही इसे हासिल कर लिया था, मगर 1660 ई. में इस पर मुगलों का कब्जा हो गया। शिवाजी के कब्जे में ज्यादा स्थलदुर्ग नहीं थे।



चाकण किले की भग्न दीवार
Ruined wall of Cākaṇa fort

गिरिदुर्ग

बहमनियों ने गिरिदुर्गों को अधिक महत्व नहीं दिया और उन्हें महज सीमाचौकियों के रूप में इस्तेमाल किया। इसके विपरीत, शिवाजी ने स्वराज्य की अपनी योजना के लिए गिरिदुर्गों को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा। और, सद्वाद्री की स्थलाकृति इस तरह के दुर्गों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त थी। “संपूर्ण घाट और समीप के पर्वतों की चोटियां प्रायः चिकनी चट्टानों वाली दीवारों से आवृत है। उनके सबसे ऊंचे स्थान, साथ ही पृथक पहाड़ियों के अलग हुए हिस्से भी, प्राकृतिक दुर्ग का निर्माण करते हैं। ऐसी स्थिति में सबसे ऊंचे स्थान पर जो प्रायः सपाट जगह होती है वहां पहुंचने के लिए केवल मार्ग बनाने का ही काम बाकी रह जाता है। विभिन्न कालों में विभिन्न शासकों ने ऊपर तक पहुंचने के लिए चट्टानों में सीढ़ियां काटी हैं, घुमावदार रास्ते बनाए हैं, कई प्रवेश-द्वार बनवाकर मार्ग की किलेबंदी की है और प्रवेश-मार्ग पर निगरानी रखने के लिए बुर्जों का निर्माण किया है। इस तरह, घाट और उनकी शाखाओं वाले समूचे क्षेत्र में गिरिदुर्गों का जाल तैयार हो गया है।” (यदुनाथ सरकार के *शिवाजी* में उद्धृत)

मराठा राज्य की स्थापना और रक्षा में गिरिदुर्गों ने निर्णायक भूमिका अदा की है। पंद्रह वर्ष की छोटी उम्र में शिवाजी ने दक्खन के गिरिदुर्गों पर कब्जा करने का अभियान आरंभ कर दिया था। उन्होंने इन दुर्गों की मरम्मत की, इन्हें मजबूत बनाया और कई नए दुर्ग भी बनाए। दुर्ग के स्थापत्य से भलीभांति परिचित होने के कारण शिवाजी ने उनका स्थान निर्धारित करने पर, उनके रक्षा-साधनों के निर्माण पर और अपने राज्य के भीतर तथा सीमाओं पर उनकी शृंखलाएं स्थापित करने पर विशेष ध्यान दिया। शिवाजी के एक विदेशी जीवानीकार ने लिखा है कि उन्हें दुर्ग-स्थापत्य की किसी भी इंजीनियर से बेहतर जानकारी थी। दुर्ग के निर्माण के लिए शिवाजी के दो योग्य सहायक स्थपति थे – मोरोपंत पिंगळे और हिरोजी इंदुलकर। वह अधिक वेतन देकर विदेशी विशेषज्ञों को अपनी सेवा में रखने के लिए तैयार रहते थे।

which, as well as detached portions on insulated hills, form natural fortresses, where the only labour required is to get access to the level space, which generally lies on the summit. Various princes at different times have cut flights of steps or winding roads up the rocks, fortified the entrance with a succession of gateways, and erected towers to command the approaches; and thus studded the whole of the region about the Ghāṭs and their branches with forts.” (Quoted in J. Sarkar’s *Shivaji*).

Hill forts played a pivotal role in the establishment and protection of the Maratha kingdom. At the young age of fifteen, Shivaji launched a movement of capturing the hill forts of the Deccan. These he repaired and strengthened, and also built several new ones. Being well acquainted with fort architecture, Shivaji paid great attention to their location, construction of defences and establishing their chains in and around his kingdom. A foreign biographer of Shivaji has pointed out that he understood the art of fortification better than the ablest engineers. Shivaji had two able architects to help him in fort construction – Moropanta Piṅgaḷe and Hirojī Indulakara. He was also prepared to employ foreign experts by paying them higher wages than usual.

Shivaji’s ideas about forts are well reflected in the *Ajñāpatra* of Amātya. Forts were generally built on strategically important hills of considerable height and not easy of access. Shivaji is said to have said : “The fort’s approach should be easy for friends and impossible for foes.”

The approach to some of the Deccan forts was very difficult. The hill forts of Devagiri, Dhoḍapa and Hātagaḍha were provided with subterranean passages. In some forts, such as Pracitagaḍha and Bahirugaḍha, summits could be approached only by means of a ladder. Some hills forts had naturally scarpred summit, but some, such as Sātārā-Ajiñkyatārā and Panhālā, are built on artificially scarpred sides.



पन्हाळा दुर्ग का प्रवेश-द्वार
A gateway of Panhālā fort

“There should not be a higher point near the fort amongst the surrounding hills,” stressed Amātya. If there was a high hill near a hill fort it was generally destroyed. But at some places the adjacent hills were converted into smaller forts. Examples are the Lohagaḍha-Visāpura and Purandara-Vajragaḍha fort-pairs.

The most important part of a fort is its fortification wall. In the case of hill forts, the necessity of curtain walls was always determined by the nature of the hills. Some hill forts had additional fortification walls called *cilakhata* or ‘armour’ from inside running along the fortification walls of their *mācīs*. Such double walled *cilakhatas* can be seen at Pratāpagaḍha and Rājagaḍha. Parapets, one to two metre high, were built along the edge of a rampart to protect soldiers from the fire of an enemy in front. Parapets were provided with loop-holes, merlons and embrasures.

The gates are generally arranged at strategic points on the steep and winding path of ascent of a hill fort. Amātya lays down certain norms regarding the construction of gateways. According to him, the gates of a fort should be built in such a way that they are not in the way of bombardment from below. He warned that to have one gate to the fort is a great drawback. The single entrance to the Devagiri fort was its strength as well as its great drawback. Amātya, therefore, suggested that according to needs of the fort, one, two, or three gates and similarly small secret passages should be provided. The suggestion closely resembled the principle followed by Shivaji. There are four gates to the Rājagaḍha fort. Siṁhagaḍha had two and Purandara was provided with four.

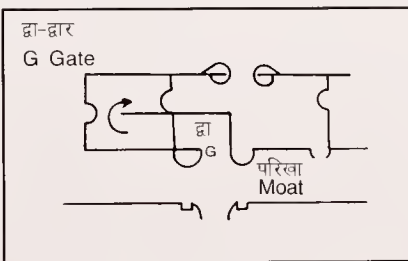
दुर्ग से संबंधित शिवाजी के विचारों को अमात्य ने अपने *आज्ञापत्र* में अच्छी तरह प्रस्तुत किया है। दुर्ग सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ऐसी पहाड़ियों पर बनाए जाते थे जो काफी ऊंची और कठिन चढ़ाई वाली होती थी। शिवाजी का कथन था :“दुर्ग का रास्ता मित्र के लिए सहज और शत्रु के लिए दुर्गम होना चाहिए।”

दक्खन के कुछ दुर्गों के प्रवेश-मार्ग सचमुच ही बहुत कठिन थे। देवगिरि, धोपड़ और हातगढ़ के गिरिदुर्गों पर पहुंचने के लिए भूमिगत मार्ग बनाए गए थे। प्रचितगढ़ और वहिरूगढ़ जैसे कुछ दुर्गों की चोटियों पर सिर्फ रस्सों की सीढ़ी से ही पहुंचा जा सकता है। कुछ गिरिदुर्गों के अपने प्राकृतिक कगार हैं, परंतु सातारा-अजिंक्यतारा और पन्हाळा जैसे कुछ दुर्गों के कगार कृत्रिम रूप से निर्मित हैं।

“दुर्ग के नजदीक के क्षेत्र में उससे ऊंची कोई पहाड़ी नहीं होनी चाहिए,” अमात्य जोर देकर कहते हैं। गिरिदुर्ग के नजदीक यदि कोई ऊंची पहाड़ी हो तो उसे आमतौर पर नष्ट कर दिया जाता था। मगर कुछ स्थानों पर नजदीक की पहाड़ी को एक छोटे दुर्ग में परिवर्तित कर दिया गया है। उदाहरण हैं - लोहगढ़-विसापुर और पुरंदर-वज्रगढ़ के जुड़वां-दुर्ग। दुर्ग का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, उसकी प्राचीर या दीवार। गिरिदुर्गों के मामले में दीवार की आवश्यकता सदैव पहाड़ी के स्वरूप से निर्धारित होती थी। कुछ गिरिदुर्गों में *चिलखत* नामक अतिरिक्त दीवारों की व्यवस्था की जाती थी। ये *माचियों* के लिए निर्मित दीवारों के साथ-साथ बनाई गई दीवारें होती थीं। ऐसी दोहरी दीवार वाले चिलखत प्रतापगढ़ और राजगढ़ में देखे जा सकते हैं। सामने के शत्रु की गोलाबारी से सैनिकों की रक्षा के लिए प्राकार के बाहरी किनारे के साथ-साथ एक या दो मीटर ऊंचा *पडकोट* बनाया जाता था। पडकोट में छिद्र (जंग्या), फालिका और अर्धदल बनाए जाते थे।

गिरिदुर्ग के घुमावदार और खड़ी ढाल वाले चढ़ाई के रास्ते में सामरिक महत्व के स्थानों पर प्रायः प्रवेश-द्वार बनाए गए हैं। प्रवेश-द्वारों के निर्माण के बारे में अमात्य ने कुछ नियम निर्धारित किए हैं। वे लिखते हैं : “दुर्ग के द्वार इस तरह बनाए जाएं कि नीचे से उन पर गोलाबारी न की जा सके।” उन्होंने दुर्ग का केवल एक ही प्रवेश-द्वार रखने के प्रति सावधान किया है। देवगिरि का केवल एक प्रवेश-द्वार जहां एक ओर उस दुर्ग को दुर्जेय बनाता है, तो दूसरी ओर उसे दुर्बल भी बना देता है। अतः अमात्य ने सुझाया है कि आवश्यकता के अनुसार दुर्ग के लिए एक, दो अथवा तीन द्वारों की व्यवस्था करनी चाहिए और उसी प्रकार गुप्त मार्ग भी बनाने चाहिए। राजगढ़ के चार प्रवेश-द्वार हैं। सिंहगढ़ के दो और पुरंदर के चार प्रवेश-द्वार हैं।

कहीं-कहीं दुर्गों के प्रवेश-द्वार इतने चौड़े और ऊंचे हैं कि उनमें से हाथी, उनके होदों-सहित, गुजर सकते हैं। आमतौर पर दरवाजे मोटी लकड़ी के बनते थे और उन पर लंबे कोणकील ठोके जाते थे। दरवाजे के दोनों तरफ पहरेदारों की ड्योढ़ियां रहती थीं। लकड़ी की

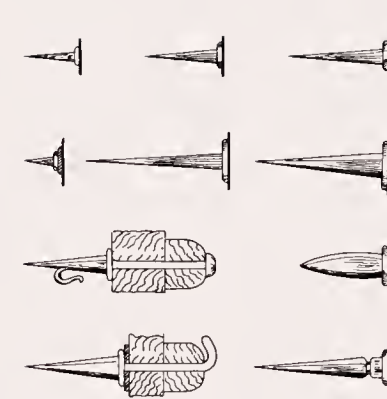


दुर्गों के प्रवेश-द्वारों की सामान्य योजना
Typical Gateway

एक मजबूर कड़ी से दरवाजे को बंद रखा जाता था। कुछ दुर्ग-द्वारों के सामने के भाग पर सजावट के तौर पर शिल्पाकृतियां देखने को मिलती हैं। एक आम अभिप्राय है *गजशार्दूल*, जिसमें एक बाघ अथवा सिंह हाथियों को कुचलते हुए दिखाई देता है। दूसरा अभिप्राय है *गंडभेरुंड*, जिसमें एक बाघ या सिंह को उसके दोनों पिछले पैरों के नीचे छोटे-छोटे हाथियों को और सामने के पैरों के नीचे दो मुंह वाले गरुड़ को दबोचे हुए दिखाया गया है। हालांकि ये अभिप्राय कई दुर्गों के द्वारों पर देखने को मिलते हैं, परंतु इनका मूल और प्रयोजन



प्रतापगढ़ दुर्ग का एक स्कंध
A spur of Pratāpagaḍha fort

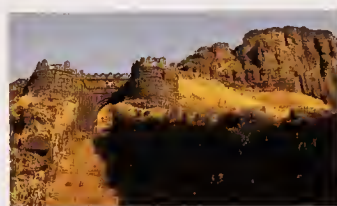


दुर्ग-द्वारों पर ठोके जाने वाले विभिन्न प्रकार के कोणकील
Various types of spikes used on fort gates.

Sometimes the gateways of the forts are wide and high enough to provide passage for elephants with their *howdahs*. Usually the doors were made of thick timber, and fitted with long iron spikes. There were guardrooms on both sides of these doors. A strong timber bar was used to keep the doors closed.

Some fort gates had sculpture decorations on the frontal side. A common motif, called *Gajaśārdula*, shows a tiger or lion trampling on elephants. In another motif, the *Gaṇḍabheruṇḍa*, shows a lion or tiger standing with small elephants under each of its hind feet and a two-headed eagle under its front feet. Although these motifs can be seen on the gates of many forts, their origin and purpose is not clearly understood. Some of the fort gates constructed during the Bahamanī period have Arabic inscriptions on their arches.

Bastions or towers, the projecting parts of the fortification, were built along the entire perimeter and invariably on either side of the gateway. Great care was taken in strengthening the ramparts and the gates with massive bastions, generally semicircular in shape.



पाली द्वार, राजगढ़ गिरिदुर्ग
Palī gate, Rājagaḍha hill fort

Another feature of a hill fort was the *mācī* – a level ground near the top or between the top and the foot of the fortress. A long and specious ground on the hill, *mācī* has been described as the trunk of the fort. Being well fortified, *mācī* was as good as an independent fort.

Hill forts were also equipped with *meṭas* – a small observational post on the slope of a fort. There were often more than one *meṭa* on the way leading to the fort. These watch-posts were without fortifications.

The crown of the hill fort was the 'citadel', called *bālā-e-killā* in Persian and *bālekillā* in Marathi. Perched on the highest spot of the hill, citadel was the inner fortified area where the king or the fort commander stayed. The most famous example of a well fortified citadel is that of Rājagaḍha. The citadel there had a state office (*sadar*), residential quarters for the royal personages, a small market and ample supply of water from the Brahmaṣī tank. The hill forts of Purandara, Torāṇā, Pratāpagaḍha, etc. also had their well protected citadels. Some land forts also had their inner enclosures where the palace of the king was protected by walls and bastions.

A fort could not be called formidable if it was not provided with copious supply of water and food. Amātya has rightly emphasised the



दो अंग्रेजी तोपें, कुलाबा द्वीपदुर्ग
Two English guns, Kulābā sea-fort



प्रतापगढ़ दुर्ग का पुराना प्रवेश-मार्ग
Old gateway of Pratāpagaḍha fort

सुस्पष्ट नहीं है। बहमनी काल में बनाए गए कुछ दुर्ग-द्वारों के मेहराबों पर अरबी अभिलेख देखने को मिलते हैं। बुर्ज या अट्टालक, जो दीवार या प्राकार में बने बाहर की ओर निकले हुए उसके



शार्दूल का शिल्पांकन, प्रतापगढ़ गिरिदुर्ग
Šārdūla motif, Pratāpaḡaḡha hill fort

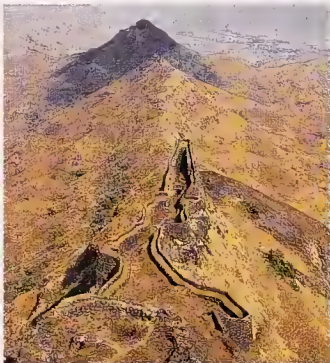


गंडभेरुंड का शिल्पांकन, गाविलगढ़ किला
Gaḡḡabheruḡḡa motif, Gāvilagaḡḡha fort

भाग होते हैं, समूची दीवार और प्रायः प्रवेश-द्वार के दोनों ओर बनाए जाते थे। प्राकारों और प्रवेश-द्वारों को विशाल बुर्जों से प्रयत्नपूर्वक मजबूत बनाया जाता था। बुर्ज आमतौर पर अर्धगोलाकार होते थे।

गिरिदुर्ग की एक और विशेषता है - माची। दुर्ग की चोटी पर अथवा चोटी तथा तलहटी के बीच में माची की समतल भूमि होती है। माची के लंबे और विस्तृत मैदान को दुर्ग का स्कंध कहा गया है। माची की अच्छी तरह किलेबंदी की जाती थी, इसलिए यह एक प्रकार से स्वतंत्र दुर्ग ही होती थी।

गिरिदुर्गों में मेंटों की भी व्यवस्था रहती थी। दुर्ग के ढलान पर पहेन्दारी के लिए बनाए गए छोटे स्थान को मेंट कहते थे। दुर्ग पर पहुंचने के रास्ते में अक्सर एक से अधिक मेंटों की व्यवस्था की जाती थी। इन मेंटों की कोई किलेबंदी नहीं होती थी।
वालेकिल्ला गिरिदुर्ग का मुकुट होता था। मराठी में प्रयुक्त यह ‘वालेकिल्ला’ शब्द फारसी के ‘बाला-ए-किल्ला’ से बना है (‘बाला’ का अर्थ है ‘सबसे ऊपर का’)। पहाड़ी के सबसे ऊँचे स्थान पर बना होने के कारण वालेकिल्ले में ही राजा अथवा किलेदार का निवास होता था। वालेकिल्ले का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है राजगढ़। वहां के वालेकिल्ले में राजकीय दफ्तर (सदर), राज-परिवार के व्यक्तियों के लिए आवास, एक छोटे बाजार और ब्रह्मरूपि तालाब के रूप में जलापूर्ति की उत्तम व्यवस्था रही है। पुरंदर, तोरणा, प्रतापगढ़ आदि गिरिदुर्गों पर भी अच्छी तरह सुरक्षित वालेकिल्लों की व्यवस्था थी। कुछ स्थलदुर्गों में भी भीतरी घिराव होते थे, जहां राजा के महल को दीवार और बुर्जों से सुरक्षा प्रदान की जाती थी।



रायगढ़ गिरिदुर्ग का एक स्कंध
A spur of Rāyagaḡḡha hill fort

दुर्ग को तब तक दुर्जेय नहीं कहा जा सकता था, जब तब उसमें भरपूर पानी और खाद्य-सामग्री की व्यवस्था न हो। अमात्य ने दुर्ग में पानी के प्रबंध पर ठीक ही बल दिया है। वह कहते हैं : “पहले यह पता लगाकर कि उस जगह पानी है, तभी वहां दुर्ग बनाना चाहिए ... कुंड दुर्ग के ढलानों पर उस जगह बनाने चाहिए, जहां बिना दरारों वाली काली चट्टान हो। छोटी-सी भी दरार दिखाई दे तो उसे चूना-मसाले से अच्छी तरह भर देना चाहिए।” तालाबों, कुओं, कुंडों और धान्य-कोठारों के निर्माण को सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता था, और इन्हें प्रायः चट्टानों को काटकर बनाया जाता था। रायगढ़ का गंगासागर तालाब और शिवनेरी के गंगा-जमुना कुंड अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। पन्हाळा के तीन विशाल धान्य-कोठार (अंवारखाने) भी अभी टिके हुए हैं। इनमें सबसे बड़ा ‘गंगा कोठी’ नामक धान्य-कोठार 10.7 मीटर ऊंचा है और उसमें 950 वर्ग-मीटर स्थान है।

importance of water supply on a fort, as he says, “after first finding out if there is water in the place, then a fort should be built Tanks should be made on the cliffs of forts in places where there is black rock having no cracks. If there is even a small crack, it should be seen that by applying *cūnam* (lime mortar) no leakage takes place. Highest priority was given to the construction of tanks, wells, cisterns and store houses for grains, and they were often cut out of rock. The Gaḡḡāsāgara reservoir at Rāyagaḡḡha and the rock-hewn Gaḡḡā-Jamuḡḡā cisterns at Śivanerī are still in good condition. The three huge granaries (*ambārakhāḡḡās*) at Panhāḡḡa are still intact; the largest among them, called Gaḡḡā Koḡḡhī, covers nearly 950 sq. metres space and is 10.7 metres high.



सीढ़ियों वाली 'अंधार बाव', पन्हाळा दुर्ग
'Andhāra Bāva' step-well, Panhāḡḡa fort

Marine Forts and Maratha Navy

Situated between Sahyāḡḡri ranges on one side and the Arabian Sea on the other, the narrow Koḡḡkaḡḡa strip stretches from Daman in the north to Goa in the south. Though Koḡḡkaḡḡa is a rugged and hilly area, historically it had always been associated with the Deccan Plateau. It has numerous creeks, rivers and bays, and there was ample supply of teak for shipbuilding. Therefore, right from the early historic period we have records of some flourishing seaports on the Koḡḡkaḡḡa coast, the two most famous being Sopārā (ancient Śūrpāraka) near Vasaī and Bharuch (ancient Bharukaccha) on the mouth of the river Narmadā.

In the medieval period, much of the Koḡḡkaḡḡa sea trade passed into the hands of the Arabs. With their superior navy they captured the overseas trade in this area. Then in the early fourteenth century a group of daring Abyssinians, who had embraced Islam, captured the island rock of Janjīrā (from the Arabic word *Jajīrā* meaning 'island') guarding the mouth of the Rājāpurī Creek. They fortified Janjīrā and made it their capital and naval base. They were supported by the Sultans of Bijapur and Ahamadanagar and the Mughals, as and when the occasion arose. The Abyssinians, called Siddis, helped these powers but always opposed the Marathas.

The overseas trade from Arabia to Indonesia was a monopoly of the Arabs till it was broken by the Portuguese. In 1510 AD, Albuquerque conquered Goa. Soon after the Portuguese occupied Chaul, Vasai (Bassein), Daman and other strategic seaports. The overseas trade between Europe and south-east Asia became Portuguese monopoly. Then, in the seventeenth century came the English, the Dutch and the French who erected their warehouses on the west coast of India.

The Mughals were a land-based power. They neglected building up a navy. The Sultanates of Bījāpur and Ahamadnagar were gradually becoming powerless. In the coastal strip of Koḡḡkan the Portuguese were a well established sea power, and the Dutch and the English had their trading centres. The Siddis of Janjīrā were playing havoc with sea communication and the people of the Koḡḡkan coast.

It was under such circumstances that Shivaji thought of conquering the Koḡḡkan and extend and establish his sovereignty over the sea. He launched a programme of shipbuilding and capturing sea forts. Ships were built at Kalyān and Panavel. He had several engagements with the Portuguese and the English. But Shivaji, in spite of his several attempts between 1658-78 AD, failed to capture the island fort of Janjīrā of the Siddis.

सरजाकोट किला, कुलाबा
Sarajyākoḡḡa fort, Kulābā

वसई किले में भग्न गिरजाघर
Ruined church in Vasaī fort

समुद्री दुर्ग और मराठा नौसेना

कोंकण पट्टी, जिसकी एक ओर सह्याद्री पर्वतमाला है और दूसरी ओर अरब सागर, उत्तर में दमन से लेकर दक्षिण में गोवा तक फैली हुई है। यद्यपि कोंकण की भूमि ऊबड़-खाबड़ और पहाड़ी है, मगर ऐतिहासिक दृष्टि से यह सदैव दक्खन के पठार से जुड़ी रही है। इसमें बहुत सारी नदियां और खाड़ियां हैं, और नौकाओं के निर्माण के लिए सागौन की पर्याप्त लकड़ी उपलब्ध रही है। इसलिए आरंभिक ऐतिहासिक काल से कोंकण तट पर समृद्ध बंदरगाह होने के बारे में हमें जानकारी मिलती है। इनमें दो सबसे प्रसिद्ध बंदरगाह थे - वसई के नजदीक सोपारा (प्राचीन शूर्पारक) और नर्मदा के मुहाने पर भड़ौच (प्राचीन भरुकच्छ)।

मध्ययुग में कोंकण का अधिकतर समुद्री व्यापार अरबों के हाथों में चला गया था। अपनी बेहतर नौ-शक्ति के बल पर उन्होंने इस क्षेत्र के विदेशी व्यापार पर कब्जा कर लिया। फिर चौदहवीं सदी के आरंभ में इस्लाम को अंगीकार कर चुके अवीसिनियाई नविकों के एक साहसी दल ने राजापुरी खाड़ी के मुहाने के पास के जंजीरा के चट्टानी द्वीप पर अधिकार कर लिया (अरबी शब्द *जजीरा* का अर्थ है 'द्वीप')। उन्होंने जंजीरा की किलेबंदी की, वहां अपनी राजधानी स्थापित की और उसे अपना नौसैनिक अड्डा बनाया। समयानुसार बीजापुर तथा अहमदनगर के सुलतानों और मुगलों ने उनकी सहायता की। इन अवीसिनियाइयों ने, जिन्हें भारत में *सिद्दी* कहा गया, समय-समय पर इन तीनों शक्तियों की मदद की, परंतु मराठों का हमेशा विरोध किया।

पुर्तगालियों के आगमन तक अरबिया से लेकर इंदोनेशिया तक के विदेशी व्यापार पर अरबों का एकाधिकार रहा। 1510 ई. में अल्वुकर्क ने गोवा पर अधिकार कर लिया। फिर जल्दी ही पुर्तगालियों ने चोल, वसई, दमन और अन्य महत्वपूर्ण समुद्री बंदरगाहों पर भी कब्जा कर लिया। यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच के विदेशी व्यापार पर पुर्तगालियों का एकाधिकार स्थापित हो गया। फिर सत्रहवीं सदी में अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच आए, जिन्होंने भारत के पश्चिमी तट पर अपने-अपने गोदाम स्थापित किए।

मुगलों की शक्ति जमीन तक ही सीमित थी। उन्होंने नौसेना के निर्माण पर कोई ध्यान नहीं दिया। बीजापुर और अहमदनगर के सुलतान शनैः-शनैः शक्तिहीन होते जा रहे थे। कोंकण की समुद्र-पट्टी में पुर्तगाली समुद्री शक्ति के रूप में अच्छी तरह स्थापित हो गए थे। डचों और अंग्रेजों ने अपने व्यापारी केंद्र स्थापित कर लिए थे। जंजीरा के सिद्दी समुद्री यातायात के साथ ज्यादाती से पेश आ रहे थे और कोंकण तट के निवासियों को लूट-खसोट रहे थे।

ऐसी परिस्थिति में शिवाजी ने कोंकण को जीतने और समुद्र पर अपना शासन स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने नौका-निर्माण और बंदरगाहों पर कब्जा करने का कार्यक्रम आरंभ कर दिया। कल्याण और पनवेल में नौकाएं बनने लगीं। पुर्तगालियों और अंग्रेजों के साथ कई बार उनकी मुठभेड़ हुई। मगर 1658-78 ई. के बीच कई बार प्रयत्न करने पर भी शिवाजी सिद्धियों के जंजीरा द्वीपदुर्ग पर अधिकार नहीं कर पाए !

शिवाजी ने नौकाओं और समुद्री दुर्गों के निर्माण पर भारी धन खर्च किया। उन्होंने कम-से-कम एक दर्जन समुद्री दुर्गों की स्थापना की। मालवण तट के पास निर्मित सिंधुदुर्ग शिवाजी द्वारा बनाए गए नए जलदुर्गों में सबसे मजबूत था। शिवाजी ने जिन अन्य समुद्री दुर्गों पर विशेष ध्यान दिया वे थे कुलाबा, सुवर्णदुर्ग और विजयदुर्ग। इनकी मरम्मत करके इन्हें मजबूत बनाया गया। शिवाजी के पास इतने साधन और फुरसत का इतना समय नहीं था कि वह बड़ी-बड़ी नौकाएं बनवाते और तटवर्ती समुद्र से आगे के खुले समुद्र के बारे में सोचते। महत्व की बात यह है कि उन्होंने मराठा नौसेना की स्थापना की। शिवाजी को सहज ही भारतीय नौसेना का पिता कहा जा सकता है।

जब शिवाजी का बेटा संभाजी भी जंजीरा को लेने में असफल रहा, तो उसने जंजीरा के 9 कि.मी. उत्तर में कांसा नामक द्वीपदुर्ग बनवाया। परंतु कांसा ने मराठों के इतिहास में कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं की। पुर्तगालियों को रोकने के लिए संभाजी के प्रयास सफल नहीं रहे।

मराठा नौसेना का उत्कर्ष कान्होजी आंग्रे (1667-1729 ई.) के नेतृत्व में हुआ। कान्होजी की योग्यता को पहचानकर शिवाजी के पोत्र शाहू ने उसे मराठा नौसेना का प्रमुख बना

Shivaji spent huge sums on the construction of ships and naval forts. He constructed at least a dozen coastal forts. Sindhudurg, close to Mālavaṇa coast, was the most formidable of Shivaji's new constructions. Other important sea forts which received his attention were Koāba, Suvarṇadurga and Vijayadurga. These were renovated and their fortifications strengthened. However, Shivaji had not the means and leisure to build bigger ships and look beyond the coast to the open sea. What is important is that he founded the Maratha navy. Shivaji can well be acclaimed as the father of the Indian navy.

When Sambhaji, Shivaji's son, also failed to capture Janjira he built an island fort, called Kāṁsā, just 9 kms north of Janjirā. But Kāṁsā did not play any important role in the Maratha history. Sambhaji's efforts to check the Portuguese were not successful.

Maratha navy blossomed under the leadership of Kānhojī Āngre (1667-1729 AD). Recognising Kānhojī's talents, Shahu, Shivaji's grandson, put him in charge of the Maratha navy. Kānhojī built a strong fleet and strengthened several sea forts. Vijayadurg and Kolābā near Alibag were his main bases. Kānhojī repulsed several attacks of the European sea powers. However, he could not contain these foreign powers. His control over the coastal waters did not extend north of Mumbai.

Kānhojī's successors failed to have cordial relations with the Peshwas. The Peshwas, in return, took the help of the East India Company to destroy the Āngres. The result was the decline of the Maratha navy.

The Peshwas, being busy in their northern adventures, were dependent mainly on their cavalry. The forts of Maharashtra, particularly the hill forts, were not of much use to them. In the Peshwa period, the forts were mainly used as administrative headquarters and also as prisons. In the later Peshwa period they were also used as safe resorts for hiding from the British forces.

By 1818 AD, almost all the forts of Maharashtra were captured by the British. Of what use were now these Maratha forts for the British rulers? There were two alternatives. One was to preserve and garrison them. The other was to destroy them. Mount Stuart Elphinstone, who was an authority on the Maratha affairs, writes : " It is evident that these forts if kept up must be extremely expensive both in garrison and provision and repair and if merely abandoned by us could be liable to be occupied by insurgents and hill bandits, and being almost all exceedingly strong, might require a regular army to reduce them. It seemed, therefore, necessary to destroy them..."

Thus, most of the forts of Maharashtra were systematically dismantled, their defences and approaches were blown up and their water reservoirs destroyed.

The north Indian forts did not receive such treatment from the British. Why? Because the British finally took over the country from the Marathas, and they feared them the most.



महा दरवाजा, कुलाबा द्वीपदुर्ग
Mahā Darawājā, Kulābā sea fort



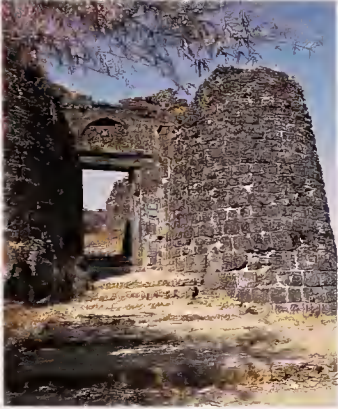
कान्होजी आंग्रे (1667-1729 ई.)
Kānhojī Āngre (1667-1729 AD)



नौगजी तोप, नरनाळा दुर्ग
Naugajī gun, Naranāḷa



वसई किले के भीतर का एक भग्न द्वार
A ruined gate at Vasaī fort



कल्याण द्वार, सिंहगढ़ दुर्ग
Kalyāṇa gate, Siṃhagaḍha fort



कमानी मस्जिद, शिवनेरी दुर्ग
Kamānī mosque, Śivanerī fort



लोहगढ़ दुर्ग के प्रवेश-मार्ग का एक द्वार
One of the main gates of Lohagaḍha fort

दिया। कान्होजी ने एक शक्तिशाली जहाजी बेड़ा तैयार किया और कई समुद्री दुर्गों को सुदृढ़ बनाया। कान्होजी ने यूरोपीय शक्तियों के कई हमलों को विफल कर दिया था। मगर इन शक्तियों पर काबू पाना उसके बस की बात नहीं थी। मुंबई के उत्तर में तटवर्ती समुद्र पर कान्होजी का अधिकार स्थापित नहीं हुआ था।

कान्होजी के उत्तराधिकारी पेशवाओं के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने में असफल रहे। दूसरी तरफ, आंग्रों की शक्ति को खत्म करने के लिए पेशवाओं ने ईस्ट इंडिया कंपनी की मदद ली ! परिणामतः मराठा नौसेना का पतन हो गया।

पेशवा ज्यादातर अपने उत्तरी अभियानों में व्यस्त रहते थे, इसलिए वे मुख्यतः अपनी अश्वारोही सेना पर आश्रित थे। महाराष्ट्र के दुर्ग, खासकर गिरिदुर्ग, अब उनके विशेष उपयोग के नहीं थे। पेशवा काल में दुर्गों का उपयोग प्रशासन के मुख्यालय और कारावासों के रूप में हुआ। उत्तर पेशवा काल में इन दुर्गों का उपयोग ब्रिटिश फौजों के हमलों से बचाव करने वाली शरणस्थलियों के रूप में भी हुआ। 1818 ई. तक अंग्रेजों ने महाराष्ट्र के लगभग सभी दुर्गों पर कब्जा कर लिया था। ब्रिटिश शासकों के लिए ये दुर्ग अब किस उपयोग के रह गए थे ? दो विकल्प थे। एक था - इन दुर्गों को कायम रखकर इनमें रक्षकसेना रखना। दूसरा था - इन्हें नष्ट कर देना। माउंट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन, जो मराठा मामलों का अच्छा जानकार था, लिखता है : “यह स्पष्ट है कि इन दुर्गों को यदि कायम रखा जाए, तो इनकी मरम्मत करने में और इनमें रक्षकसेना रखने तथा उसके लिए सामग्री जुटाने में काफी धन खर्च करना पड़ेगा। और, यदि इन्हें यूं ही खाली छोड़ दिया जाए, तो ये वागियों और पहाड़ी डाकुओं का बसेरा बन सकते हैं। चूंकि लगभग सभी दुर्ग अत्यंत मजबूत हैं, इसलिए विद्रोहियों को खत्म करने के लिए एक नियमित सेना भी रखनी होगी। इसलिए इन्हें नष्ट कर देना ही उपयुक्त लगता है...।”

इस प्रकार, महाराष्ट्र के अधिकांश दुर्गों के रक्षा-साधनों को बाकायदा तोड़ा गया, उनके प्रवेश-मार्गों को ध्वस्त कर दिया गया और उनके जलकुंडों को नष्ट कर डाला गया। उत्तर भारत के दुर्गों के साथ अंग्रेजों ने ऐसा सलूक नहीं किया। क्यों ? क्योंकि अंग्रेजों ने भारत का राज्य अंततः मराठों से हासिल किया था और उन्हें मराठों से ही अधिक भय था ।

आज महाराष्ट्र के प्रायः सभी दुर्ग खंडहर बने हुए हैं। फिर भी इतिहास और भावी पीढ़ियों के लिए काफी कुछ बचाया जा सकता है। इन दुर्गों के इतिहास का अर्थ है, महाराष्ट्र के विगत दो हजार वर्षों का इतिहास ।

* * *

Today most of the forts of Maharashtra are in utter ruin. Still, much can be salvaged and preserved for history and posterity. The history of these forts is the history of Maharashtra — of the last two thousand years.

* * *

दुर्ग शब्दावली

दुर्ग (Fort, Fortress) : यह शब्द संस्कृत के ‘दुर्गम’ शब्द से बना है, जिसका अर्थ है : ‘जहां पहुंचना कठिन हो’। दुर्ग के अर्थ में अन्य प्रचलित शब्द है - किला, कोट और गढ़। ‘किला’ शब्द अरबी का है, जिसका अर्थ है ‘लड़ाई के समय बचाव का एक सुदृढ़ स्थान’। इसी से ‘किलेदार’ और ‘किलेवंदी’ जैसे शब्द बने हैं। मराठी में ‘किला’ को ‘किल्ला’ कहते हैं। ‘कोट’ शब्द संस्कृत के ‘कोट्ट’ से बना है। हिंदी के ‘गढ़’ शब्द के लिए मराठी में सर्वत्र ‘गड’ शब्द का प्रयोग होता है; जैसे, रायगड, सिंहगड आदि। इसी से मराठी का ‘गडकरी’ शब्द बना है। वस्तुतः संस्कृत का मूल शब्द ‘गड’ ही है, जिसका अर्थ है: ‘घेरा हुआ स्थान’। ‘दुर्ग’ शब्द पहली बार ऋग्वेद में देखने को मिलता है। वैदिक काल में ‘पुर’ शब्द का अर्थ था - दुर्ग-सदृश वस्ती। **बालेकिल्ला** (Citadel) : मराठी में प्रचलित यह शब्द फारसी के ‘बाला-ए-किला’ के आध्दार पर बना है । फारसी के ‘बाला’ शब्द का अर्थ है: ‘ऊपर का’, इसलिए ‘बालेकिल्ला’ का अर्थ हुआ: ‘गिरिदुर्ग में सबसे ऊपर बना किला’। बालेकिल्ले में राजा अथवा किलेदार का निवास होता था।

प्राकार (Rampart) : किले की ऐसी दीवार, जिसका ऊपरी भाग काफी चौड़ा हो। इसे परकोटा या फसील भी कहते हैं। वास्तुशास्त्र के भारतीय ग्रंथों में निर्देश है कि प्राकार का ऊपरी भाग इतना चौड़ा होना चाहिए कि उस पर एक रथ आसानी से चलाया जा सके। प्राकार का उपयोग पहरेदारी के लिए होता था।

प्राचीर, दीवार (Wall) : ऐसी रक्षात्मक दीवार जिसके ऊपरी भाग पर चौड़ा रास्ता न हो। इसे परकोटा भी कहते हैं।

चिलखत (Cilakhata) : इसका शाब्दिक अर्थ है - जिरह, बख्तर या कवचा। पास-पास बनाई गई दो रक्षात्मक दीवारों को चिलखत कहते हैं। इसमें भीतरी दीवार से बाहरी दीवार अधिक ऊंची होती है। राजगढ़ और प्रतापगढ़ में चिलखत देखने को मिलते हैं।औ

पडकोट (Parapet or Battlement) : प्राकार के ऊपर उसके बाहरी किनारे के साथ बनाई गई एक से दो मीटर तक ऊंची दीवार, जिसका उपयोग सामने के शत्रु की गोलाबारी से सैनिकों की रक्षा के लिए होता था।

जंग्या (Loop-holes) : पडकोट में बनाए गए छिद्रों को मराठी में ‘जंग्या’ कहते हैं। फारसी के जंग (युद्ध) से ‘जंग्या’ शब्द बना है। नीचे के शत्रु पर गोलाबारी करने के लिए इनका उपयोग होता था।

अर्धदल (Merlons) : पडकोट में फालिका (देखिए नीचे) के बीच में एकांतर में बनाए गए ऊंचे भाग। इनके पीछे खड़े रहकर सैनिक अपनी रक्षा कर सकते थे और साथ ही जंग्या में से शत्रु पर गोलाबारी भी कर सकते थे।

फालिका (Embrasures) : पडकोट में बनाए गए खाली स्थान, जिनका उपयोग बाहर देखने और गोलाबारी के लिए होता था।

झरोखा (Machicolations) : दुर्ग-द्वार के ऊपर बनी गैलरी के तल में बने छिद्र, जिनका उपयोग शत्रु पर ठोस या तरल चीजें गिराने के लिए होता था।

बुर्ज (Bastions) : इसके लिए संस्कृत का पुराना शब्द ‘अट्टालक’ है। किले की दीवार या प्राकार में बना बाहर की ओर निकला हुआ उसका भाग, जो प्रायः अर्धगोलाकार होता है, बुर्ज या अट्टालक कहलाता है। इन्हें संपूर्ण प्राकार में और प्रायः प्रवेश-द्वार के दोनों ओर बनाया जाता था। आगे बढ़ रही शत्रु-सेना पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगातार मार कर सकने के लिए इनका उपयोग होता था।

परिखा (Moat) : दुर्ग के चहुंओर बनी चौड़ी और गहरी खाई। शत्रु को दुर्ग की दीवार से दूर रखने के लिए खाई में प्रायः पानी भरा जाता था और उसमें मगरमच्छ छोड़े जाते थे।

ग्लैसिस (Glacis) : परिखा के बाहरी तट पर चहुंओर बना मिट्टी का ढालू टीला। ऐसे टीले के अवशेष अहमदनगर के किले में देखे जा सकते हैं।

दुर्ग-द्वार (Gateways) : दुर्ग में आने-जाने के लिए प्राकार या दीवार में बनाई गई खुली जगह को द्वार कहते हैं। गिरिदुर्गों में आमतौर पर भीतरी द्वार के समकोण में बना एक भव्य मुख्य द्वार होता था। कहीं-कहीं एक के बाद एक कई द्वार बनाए जाते थे, जैसे कि शिवनेरी के किले में हैं। द्वारों के बीच का मार्ग सामान्यतः टेढ़ा-मेढ़ा होता था। रायगढ़ में समकोण में बने द्वारों की बजाए मुख्य प्रवेश-द्वार के दोनों ओर भव्य बुर्ज बनाए गए हैं। प्रवेश-द्वारों

Fort Glossary

Fortress : A very large construction specially designed for defence of a place against enemy attack.

Fort : From the French word *fortis*, meaning 'strong'. A small fortress.

Citadel : Called *bālā-e-kilā* in Persian and *bālekilā* in Marathi, it is the highest portion of the works of a hill-fort. Citadel was the inner fortified area where the king or the fort commander stayed.

Rampart : A flat-topped defensive wall which surrounds the fort. The wide surface at the top can be used for patrolling or taking up positions.

Wall : A high defensive structure narrow and rounded at the top with no flat surface. It cannot be used for observation or patrolling.

Cilakhata : Literally meaning 'body-armour', indicated a closely set double line of curtain walls, the second line being higher than the first. Examples of *cilakhata* exist at Rājagaḍha and Pratāpagaḍha.

Parapet : Also called **Battlement**. This is a 1 to 2 metre high wall built along the edge of a rampart to protect soldiers from the fire of an enemy in front.

Loop-holes : Called *jaṅgyā* in Marathi, they are made into the parapet to enable the defenders to fire upon the enemy below.

Merlons : The alternate high parts of a parapet between the embrasures (see below). They afforded protection to the soldiers standing behind it and firing through the loop-holes.

Embrasures : Openings made into the parapet for observation and firing.

Machicolations : Openings made in the floor of a projecting gallery on the top the gateway for dropping solids or liquids on an attacking enemy.

Bastions : A kind of tower at the angle of a fortification projecting outwards from the wall or rampart. Generally semicircular, they were built along the entire perimeter and invariably on either side of the gateway. Their main purpose was to provide continuous fire on any advancing enemy line from end to end.

Moat : A deep trench round a fortified place, often filled with water. It was for keeping the enemy away from the fort walls.

Glacis : A gently sloping earthen mound built round the outer edge of a moat.

Traces of glacis can still be seen at the Ahmadnagar land-fort.

Gateway : An opening in a wall or rampart for communication. In hill-forts there was usually one massive gate and an inner gate placed at right angle to the first. Often there were a succession of gates, as at Śivanerī fort. The passage between the gates was generally crooked or zigzag. In the case of hill-forts, like Rāyagaḍha, the massive bastions flanking the gates replaced the right-angled or crooked gateways. The doors of the gate were made of thick timber, and fitted with iron spikes to counter the battering of elephants.

Barbican : A projecting watch-tower over the gate of a fort.

Nagārakhānā : A gallery at the top of the gate where musicians played at fixed hours.

Postern : A small back door made into the wall of a fort.

Scarp : A near vertical rock face or cliff either natural or artificially made.



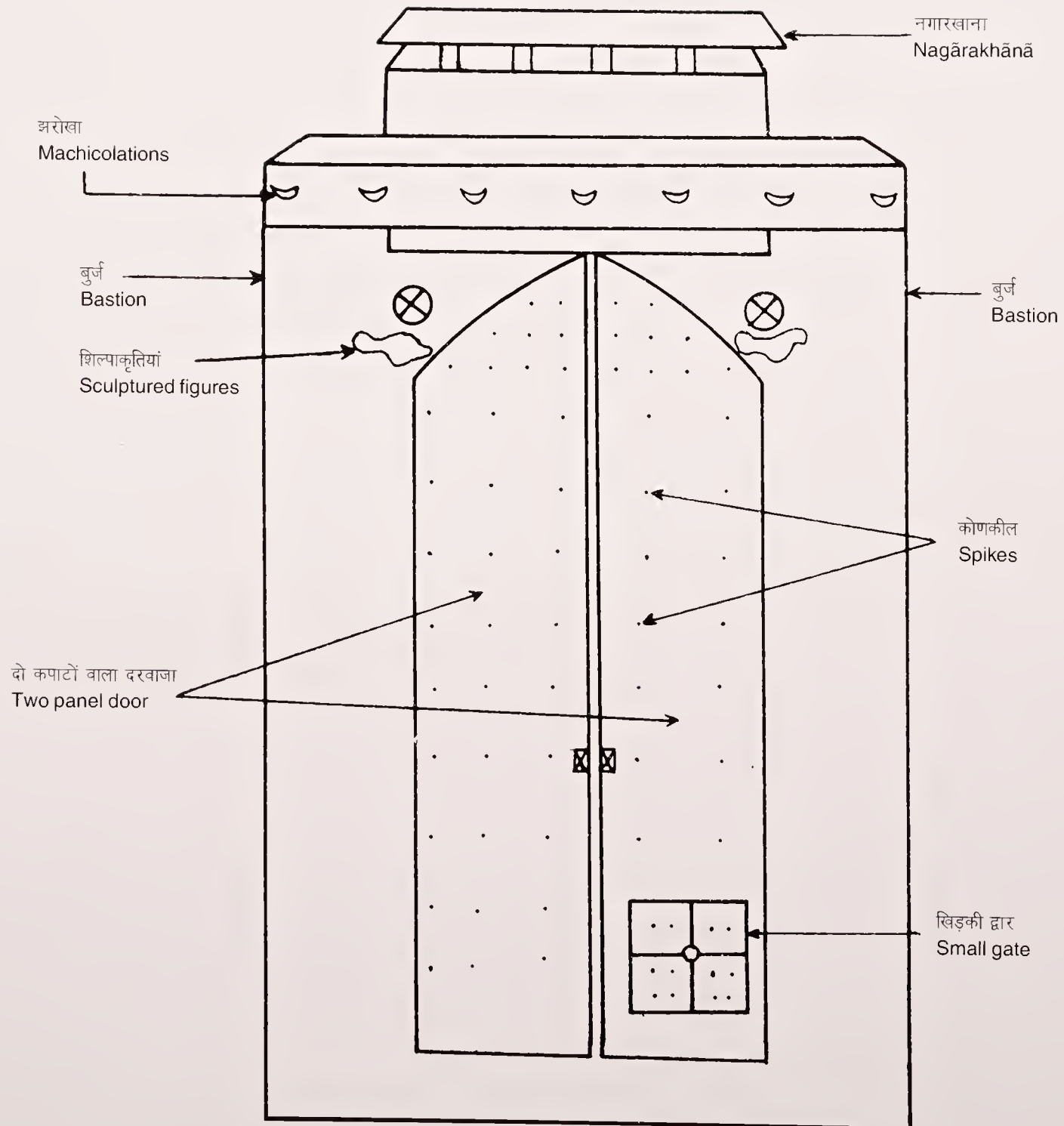
अचलपुर के किले का एक द्वार
A gateway of Acalapura fort



बाळापूर किला
Bājāpura fort

दुर्ग शब्दावली

Fort Terminology



After Naravane's *Forts of Maharashtra*

में बनाए गए फाटक मोटी लकड़ी के होते थे और उन्हें हाथियों की टक्कर से बचाने के लिए उनमें लोहे की नुकीली और मोटी कोणकीलें (मिथें) ठोकी जाती थीं।

गढ़गज (Barbican) : दुर्ग-द्वार पर बना रक्षक बर्ज।

नगारखाना (Nagārahānā) : प्रवेश-द्वार के ऊपर बनी गैलरी, जहां बैठकर संगीतज्ञ निश्चित समय पर वाद्य बजाते थे।

पश्चद्वार (Postern) : दुर्ग की दीवार में बना पिछला छोटा दरवाजा।

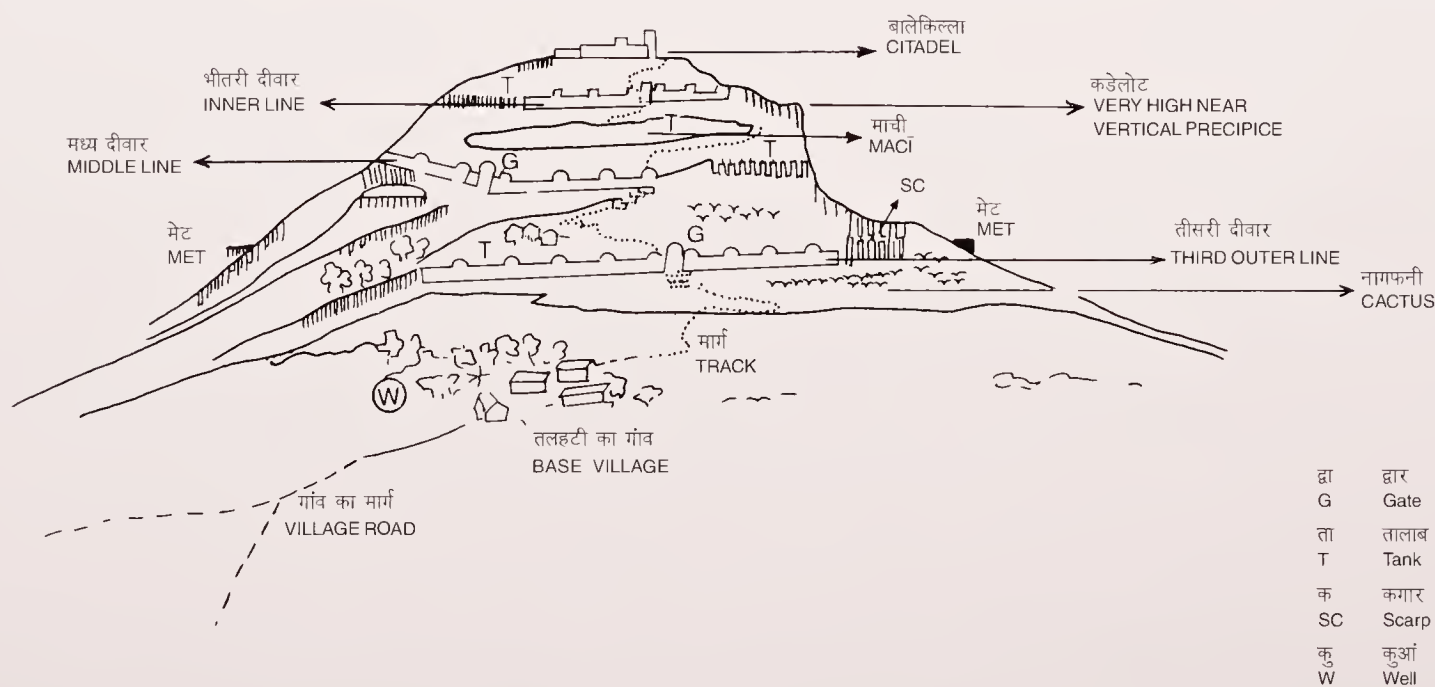
कगार (Scarp) : प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से निर्मित लगभग खड़ी चट्टान।

माची (Mācī) : मराठा में प्रचलित यह शब्द संस्कृत के 'मंच' शब्द से बना है। चौटी के पास की अथवा चौटी और निचले भाग के मध्य में स्थित समतल भूमि को 'माची' कहते हैं। माची की अच्छी तरह किलेबंदी की जाती थी, इसलिए यह एक तरह से स्वतंत्र दुर्ग की तरह होती थी।

मेट (Meta) : दुर्ग की ढाल पर बनी पहेरेदारी की छोटी जगह। सामान्यतः यह दुर्ग की चढ़ाई के रास्ते पर एक छोटी समतल जगह होती थी। दुर्ग की चढ़ाई के रास्ते पर अक्सर एक से अधिक मेट बनाए जाते थे।

Māci (from Sanskrit *māñca*): A level ground near the top or between the top and the foot of a hill. Being well fortified, *mācīs* were as good as an independent fort.

Meta : A small observational post on the slope of a fort. Generally, a *meta* was a flat piece of land on the road leading to the fort. There were often more than one *meta* on the way leading to the fort.



एक सर्वसामान्य गिरिदुर्ग का प्रतिरूप चित्रण
Diagrammatical Representation of a Typical Hill Fort

After Naravane's *Forts of Maharashtra*

छात्रों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

प्रत्येक पैकेज में दिए गए रंगीन चित्रों के २४ कार्डों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गते पर लगाकर इनके शीर्षक तथा चित्रों के पीछे दिए गए विवरण को क्षेत्रीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर इनसे संबंधित विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित करके चित्रों पर कार्य कर सकते हैं :

भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें और उसमें देश के विभिन्न दुर्गों को अंकित करें। इस पैकेज में दिए गए दुर्गों के स्थलों को खोजिए।

देश के दुर्गों का अध्ययन करके उनका निर्माण करने वाले राजाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें। इन स्मारकों की तिथियों का और इनके प्रयोजन का पता लगाइए। निम्नलिखित जानकारी एकत्रित करें :

- स्मारक के क्षेत्र की जलवायु।
- प्राकृतिक परिवेश, नदियां, पर्वत-श्रेणियां, वनस्पति और पशु-पक्षी।
- इन दुर्गों के निर्माता और इनमें रहने वाले लोग तथा उनके व्यवसाय।
- समकालीन संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्पकला आदि।
- उस क्षेत्र के रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार और संबंधित पौराणिक कथाएं।
- पैकेज में दिए स्मारकों के चित्रों से उनके रेखाचित्र बनाइए।

इस पैकेज में दिए गए दुर्गों को प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास के दौरान कई यात्रियों / इतिहासकारों / कलाकारों ने देखा और इनके सजीव एवं रोचक विवरण लिख छोड़े हैं, रेखाचित्र तैयार किए हैं। ऐसे यात्रा-वृत्तांतों / संस्मरणों / रेखाचित्रों को एकत्र कीजिए। उन यात्रा-विवरणों में वर्णन-शैली, स्थलनामों के उच्चारण और आसपास के स्मारकों को जानिए।

विभिन्न दुर्गों के बुनियादी खाकों को एकत्र करके उनका अध्ययन कीजिए और उनमें समानताएं खोजिए। इसी तरह, अपने घर, स्कूल अथवा कालेज का बुनियादी खाका तैयार कीजिए और उसमें खिड़कियों, दरवाजों और अन्य वास्तुगत विशेषताओं को दर्शाइए।

धार्मिक मान्यताओं को समझाना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर और संपूर्ण जीवन जिएं। धर्म के बाह्य रूप, जैसे कि अनुष्ठान तथा रीति-रिवाज, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक, यहां तक कि भौगोलिक कारणों से भी, एक-दूसरे से भिन्नता रखते हैं। कई धार्मिक अनुष्ठान और समारोह वार्षिक कृषिक्रम से जुड़े होते हैं और वे जीवन के उल्लास को अभिव्यक्त करते हैं। धार्मिक विश्वासों ने बीते युगों के वास्तुकारों, शिल्पकारों और चित्रकारों को प्रभावित किया है और उन्होंने प्रत्येक धर्म के प्रतीकों और अभिप्रायों का उपयोग करके सुंदर स्मारकों का सृजन किया है।

अध्यापक अपने छात्रों को भारतीय लोगों और उनके धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही, उन्हें हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि प्रत्येक धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए कहें।

स्थापत्य के प्राचीन ग्रंथों में विविध प्रकार के दुर्गों के बारे में जानकारी दी गई है। दुर्ग या किला उस भवन या भवन-समूह को कहते हैं, जो चतुर्दिक दीवार से घिरा होता है और जिसके भीतर बहुधा पूरा शहर बसा रहता है। इन ग्रंथों में महीदुर्ग या स्थलदुर्ग, गिरिदुर्ग, जलदुर्ग या द्वीपदुर्ग के अलावा वनदुर्ग और मरुदुर्ग के बारे में भी जानकारी देखने को मिलती है।

छात्रों को नजदीक के दुर्गों की शैक्षणिक भ्रमण-यात्रा पर ले जाकर उन्हें एक विशिष्ट क्षेत्र के स्थापत्य के इतिहास का अध्ययन करने को कहें।

देश के विभिन्न दुर्गों के ऐतिहासिक विकास पर एक प्रयोजना तैयार कीजिए।

दुर्गों के स्थापत्य से संबंधित शब्दों की सूची बनाकर उसमें उनके अर्थ भी दीजिए। उस सूची में बालेकिल्ला, पडकोट, परिखा, माची आदि शब्द शामिल कीजिए।

देश के विभिन्न दुर्गों के नामों की जानकारी प्राप्त करके उनके नामकरण के बारे में एक कहानी

The 24 picture-cards provided in this package can be displayed in the classroom or any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description in regional languages. It can also be studied in-depth with activities that bring out the educational value of Indian art and architecture. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below :

In a large outline map of India, mark the sites of various forts of our country. Find out the location of the forts given in the pictures in this package.

Make a study of the forts in India and collect information about the kings and emperors who built these forts.

- Climate of the location of the fort.
- Natural surroundings, rivers, mountain range and the flora and fauna.
- People who built and lived in these forts, their occupation, etc.
- Music, dance, drama, craft, etc. of the period.
- Customs, regional festivals and associated myths.
- Make sketches/rough outlines of some of the monuments from the pictures provided in the cultural package.

The forts mentioned in this package were visited by a number of travellers/historians in the ancient and medieval period of Indian history and these people have left a vivid and interesting account of these monuments including the drawings/sketches. Collect such travelogues/memoirs/sketches. Notice interesting details in these travelogues such as the style of description, pronunciation of places and other contemporary monuments in that area.

Collect and study the ground plans of different forts and find out the similarities and differences. Similar studies of ground plans can also be made of your school, home or collage showing windows, doors and other architectural details.

Understanding Religious Concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geophysical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with annual agricultural cycle and celebrations of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors and painters of the bygone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

Ancient texts on architecture describe a variety of forts. *Durg* or fort is a fortified building which many times encompasses whole city within its walls. In these texts there is mention of land, hill, water or island and also forest and desert forts.

Students can be taken on educational tours to nearby forts or asked to study the history of architecture of a specific region.

Conduct a Project on the historical development of forts in our country.

Make a list of the terms associated with the architecture of forts with their meaning. Some terms like citadel, parapet, merlons, moat, mǎci, etc. can be included.

लिखिए।

कल्पना कीजिए कि मध्यकाल के किसी किले में आपका निवास था। ऐसी स्थिति में सामान्य व्यक्ति, राजा और वास्तुविद अथवा स्थपति के रूप में अपने जीवन के बारे में लिखें। किसी दुर्ग से संबंधित घटनाओं को एक नाटक का रूप देकर उसे उस समय के संगीत से समृद्ध कीजिए।

विभिन्न दुर्गों को दशनि वाली एक पुस्तिका तैयार कीजिए और उसमें उनके बारे में महत्वपूर्ण विवरण दीजिए। इस कार्य के लिए आप इस पैकेज से चित्रों का चयन कर सकते हैं।

दुर्गों से संबंधित प्राचीन ग्रंथों से संदर्भों/उद्धरणों का संग्रह कीजिए।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के स्थापत्य/वास्तु से संबंधित अनुष्ठानों के चित्र और संदर्भ एकत्र कीजिए।

सुदृढ़ दुर्ग बनाने वाले हमारे देश के राजाओं और राजवंशों के बारे में कहानियां लिखिए।

देश के विभिन्न दुर्गों का अध्ययन करके उन्हें निम्न प्रकारों में सूचीबद्ध कीजिए :

वनदुर्ग

गिरिदुर्ग

द्वीपदुर्ग

महादुर्ग अथवा स्थलदुर्ग

मरुदुर्ग

Find out all that you can about the names of different forts of our country and write a story how these were named.

Imagine you lived in a fort of the medieval period. Now describe your life as an architect, a king or a common man.

Dramatise the events involved in the construction of a fort and enrich it with music of the period.

Make a scrap book displaying different forts with important description. You may choose pictures from this package also.

Collect reference/quotations from ancient books on different types of forts.

Collect pictures and references of the rituals connected with the architecture of different regions of India.

Write stories about the dynasties and kings who built formidable forts in our country.

Conduct a study of various forts in our country and categorize these monuments as per the following :

Forest Fort

Mountain Fort

Island Fort

Land Fort

Desert Fort



लोहगढ़ दुर्ग का एक प्रवेश-द्वार
A gate of Lohagaḍha fort



गाविलगढ़ किले की एक तोप
A gun at Gāvilagaḍha fort

संपादन : गिरीश जोशी

ऋषि वशिष्ठ

प्रोडक्शन : स्मृति चोपड़ा

चित्र : अनिल शर्मा

अनिल अग्रवाल

Editing : Girish Joshi

Rishi Vashist

Production : Samriti Chopra

Photography : Anil Sharma

Anil Aggarwal

सहायक ग्रंथ सूची

हिंदी

कोरोत्काया, अ. : भारत के नगर, मास्को, 1984.
दुबे, दीनानाथ : भारत के दुर्ग, नई दिल्ली, 1993.
दुबे, शुकदेव : हमारे किले, नई दिल्ली, 1977.
शुक्ल, द्विजेंद्रनाथ : भारतीय स्थापत्य, लखनऊ, 1968.

मराठी

कुलकर्णी, अ.रा. आणि खरे : मराठ्यांचा इतिहास (तीन खंड), पुणे, 1984-86.
काळे, यादव माधव : व हाडचा इतिहास, बुलडाणे, 1924.
काळे, यादव माधव : नागपूरकर भोसल्यांचा इतिहास, नागपूर, 1979.
कोलारकर आणि पुरंदरे : विदर्भाचा इतिहास, नागपूर, 1997.
दाण्डेकर, गोपाल नीलकण्ठ : दुर्ग भ्रमण गाथा, मुंबई, 1995
आवळसकर, शांताराम विष्णु : रायगडची जीवनकथा, पुणे, 1995.
अमात्य, रामचंद्र नीलकंठ : आज्ञापत्र, पुणे, 1980.
कामत, अ. आणि घाणेकर, प्र. : कोकणचा मानबिंदु सिंधुदुर्ग, मुंबई, 1985.

विविध

मराठी विश्वकोश
महाराष्ट्र के जिला गजेटियर
महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडळ लि. द्वारा महाराष्ट्र के किलों के बारे में अंग्रेजी व मराठी में प्रकाशित फोल्डर.

BIBLIOGRAPHY

Sanskrit

Kautilīya Arthaśāstra : Edited and translated by R. P. Kangle, Bombay, 1976
The Nītisāra by Kāmandakī : Edited by Rajendra Lala Mitra.
Mahābhārata (Sanskrit-Hindi) : Gīta Press, Gorakhpur.
Rāmāyaṇa (Sanskrit-Hindi) : Gīta Press, Gorakhpur.
Manusmṛti : Edited by Prānjīvana Pāndyā, Bombay, 1913.
Amarakosha : Edited by Pandit Śivadatta, Bombay, 1929

English

Naravane, M.S. : *Forts of Maharashtra*, New Delhi, 1995.
Naravane, M.S. : *Maritime and Coastal Forts of India*, New Delhi, 1998.
Desai, Ramesh : *Shivaji : The Last Great Fort Architect*, Bombay, 1987.
Sarkar, Jadunath : *Shivaji and His Times*, New Delhi, 1973.
Davies, Philip : *Monuments of India* (vol.2), London, 1989.
Tikekar, S.R. : *Maharashtra : The Land, its People and their Culture*, Bombay, 1966.
Edited : *Maharashtra State Gazetteers : History -Ancient Period*, Bombay, 1968.
Apte, B.K. : *A History of the Maratha Navy and Merchant Ships*, Bombay, 1973.
Pagadi, S.S. : *Shivaji*, New Delhi, 1990.



CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

15 A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110 075
Phone : 011-25309300 Fax : 91-11-25088637

email : dir.ccrt@nic.in

website : www.ccrtindia.gov.in

महाराष्ट्र के दुर्ग

1. मुरुड़-जंजीरा जलदुर्ग

भारत के सबसे मजबूत किलों मे से एक, यह समुद्री किला मुंबई से 165 कि. मी. दक्षिण में मुरुड़ बंदरगाह के पास है। राजापुरी गांव की जेटी से नाव लेकर किले पर जाना पड़ता है। एक अंडाकार चट्टान पर स्थापित इस जलदुर्ग का मुख्य द्वार, जो पूर्व दिशा में राजापुरी की ओर खुलता है, दो बुजों के बीच में है और एकदम नजदीक पहुंचने पर ही दिखाई देता है। खुले समुद्र की ओर से आपात स्थिति में बाहर निकलने के लिए किले के पिछवाड़े में भी एक छोटा दरवाजा है। किले में 19 गोलाकार बुर्ज हैं, जो अभी भी अच्छी हालत में हैं। किले के प्राकार और बुर्जों पर देशी और विदेशी बनावट की जंग लगी अनेक तोपें आज भी देखी जा सकती है। जंजीरा अब खंडहर बन गया है, परंतु इसके वैभव के दिनों में यहां सभी सुविधाएं मुहैया थीं – महल, मकान, मस्जिद, मीठे पानी का एक बड़ा तालाब, आदि। किले के मुख्य द्वार के दोनों ओर की दीवारों पर पंजों में हाथी पकड़े हुए शार्दूल (बाघ) की शिल्पाकृति उकेरी हुई है। इस तरह की शिल्पाकृति, जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है, महाराष्ट्र के अनेक किलों के दरवाजों पर देखने को मिलती है।

पता चलता है कि पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में कोळी सरदार रामाऊ ने इस द्वीप पर लकड़ी का एक किला बनाया था। फिर अहमदनगर के निजामशाह के एक सेनापति पीरखान ने इस पर अधिकार करके यहां एक मजबूत किला बनाया और इसे 'जजीरा मेहरूबा' नाम दिया। अरबी के इस जजीरा (द्वीप) शब्द से ही 'जंजीरा' शब्द बना है। 1617 ई. में निजामशाह ने यह किला अपने सिद्दी वजीर मलिक अंबर को सौंपा। तब से सिद्दी इसके मालिक बन गए ('सिद्दी' या 'हब्शी' भारत में आए अबीसिनिया के साहसी सिपाहियों द्वारा अपनाई गई उपाधि थी)। वे कभी बीजापुर की आदिलशाही के साथ होते, तो कभी मुगलों के साथ। मगर मराठों के साथ उनकी हमेशा दुश्मनी रही। शिवाजी ने जंजीरा लेने की कई बार कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। संभाजी भी असफल रहा तो उसने जंजीरा से 9 कि.मी. उत्तर में एक द्वीप पर एक किला बनवाया, जिसे 'कांसा' या 'पद्मदुर्ग' के नाम से जाना जाता है। 1947 ई. में देश के आजाद होने तक जंजीरा में सिद्दी नवाबों का राज्य कायम रहा। मुरुड़ के नजदीक उनका महल आज भी मौजूद है।

2. रायगढ़ किला

रायगढ़ शिवाजी की राजधानी थी। इसी गिरिदुर्ग पर 1674 ई. में उनका राज्याभिषेक हुआ था और यहीं पर 1680 ई. में उनकी मृत्यु हुई। रायगढ़ किला सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिस फानाकार पहाड़ी चट्टान पर स्थित है, उसे एक गहरी घाटी ने सद्माद्रि पर्वत-शृंखला की मुख्य श्रेणी से अलग कर रखा है और यह तीन दिशाओं से अगम्य है। रायगढ़, मुंबई से 210 कि.मी. दक्षिण में और महाड़ से 27 कि.मी. उत्तर में है।

रायगढ़ पहाड़ी के ऊपरी पठार का क्षेत्रफल 5.12 वर्ग कि.मी. है, और उसके तीन प्रमुख स्कंध है – पश्चिम में हिरकणी, उत्तर में टकमक और पूर्व में भवानी। रायगढ़ के लिए केवल एक ही प्रवेश मार्ग है, जो शिवाजी की रणनीति : “मित्र के लिए किले में प्रवेश आसान होना चाहिए, मगर शत्रु के लिए असंभव” को चरितार्थ करता है। किले की तलहटी के पाचाड़ गांव में शिवाजी की मां जीजाबाई की समाधि है। वहां से दो कि.मी. दूर घित दरवाजे तक पक्का रास्ता है। वहां से लंबी चढ़ाई के बाद महादरवाजा आता है, जिसके दोनों ओर दो विशाल बुर्ज और परकोटे की दीवार है।

ऊपरी पठार पर कई कुंओं, जलाशयों और बहुत सी इमारतों के अवशेष है। गंगासागर तालाब के पीछे मुस्लिम शैली की दो ऊंची मीनारें है। मीनारों के पीछे बालेकिल्ला है, जहां पालकी दरवाजे से जाना पड़ता है। आगे जाने पर दाईं ओर राज-परिवार की महिलाओं के लिए बने मकानों के और बाईं ओर शिवाजी के राज-दरबार के अवशेष है। वहीं के थोड़े ऊंचे मध्य स्थान पर शिवाजी का सिंहासन रहा है। आगे उत्तर की ओर दो पवित्रियों में बाजार का स्थान है। उसके आगे चारों ओर दीवारों से घिरा जगदीश्वर मंदिर और उसके पास शिवाजी की समाधि है। पास ही उनके प्यारे कुत्ते वाघ्या की समाधि है।

रायगढ़ का प्राचीन इतिहास अस्पष्ट है। पहले इसका नाम रायरी था। पता चलता है कि 12वीं सदी में यहां शिर्क-पाळेगार परिवार का निवास था। कई सत्ताओं के अधिकार से गुजरने के बाद शिवाजी ने 1656 ई. में रायगढ़ को चंद्रराव मोरे से छीन लिया। फिर शिवाजी ने रायरी को अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया और इसे रायगढ़ नाम दिया। विशाल पैमाने के निर्माण-कार्य की जिम्मेदारी आबाजी सोनदेव और हिरोजी इंदुलकर को सौंपी गई। अपने वैभव के दिनों में रायगढ़ में 300 से भी अधिक मकान और स्मारक थे। शिवाजी

के बाद यह किला 1689 ई. तक संभाजी के पास रहा और फिर यह मुगलों के हाथ में चला गया। 1735 ई. में इस पर पुनः मराठों का कब्जा हुआ, परंतु अंत में 1818 ई. में यह अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

3. राजगढ़ किला

महाराष्ट्र के गिरिदुर्गों में राजगढ़ का अपना एक विशिष्ट स्थान है। दक्खन के किलों की वास्तु शैली की सभी प्रमुख विशेषताएं इस किले में मौजूद है। सद्माद्रि पर्वत–शृंखला की मुरुम नामक एक शाखा-पहाड़ी पर स्थित राजगढ़, पुणे से करीब 35 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। समुद्र-तल से लगभग 1300 मीटर की ऊंचाई पर बसे राजगढ़ की तीन माधियां और एक बालेकिल्ला हैं। किले के चार प्रवेश-द्वारों के नाम है – गुंजण, पाली, आळु और कालेश्वरी या दिंडी। प्रथम दो दरवाजे पद्मावती माची पर पहुंचाते है, तीसरा दरवाजा संजीवनी माची पर और आखिरी दरवाजा सुवेला माची पर पहुंचाता है। राजगढ़ पंख फैलाए हुए आकाश में उड़ रहे एक पक्षी की तरह दिखाई देता है – पद्मावती और संजीवनी माधियां उसके दो पंखों की तरह है और बालेकिल्ला और सुवेला माची मानो उसका मुख्य शरीर है।

किले के चारों भागों में पुराने स्मारकों – निवास-स्थल, सदर यानी राजकीय कार्यालय, बाजार, धान्य-कोठार, बारुदखाना, मंदिर, आदि – के अवशेष पाए जाते हैं। किले पर तालाबों, कुंडों और कुओं के माध्यम से पर्याप्त पानी उपलब्ध था। पद्मावती माची पर पानी की बेहतर व्यवस्था थी, इसलिए किले की अधि कतर गतिविधियां वहीं पर केंद्रित थीं।

राजगढ़ किला, जिसका पुराना नाम मुरुमदेव था, पहले निजामशाही और आदिलशाही शासकों के अधिकार में रहा। 1648 ई. तक यह पक्के तौर पर शिवाजी के नियंत्रण में आ गया था और 1670 ई. तक उन्होंने यहां निर्माण-कार्य जारी रखा। उन्होंने इसे नया नाम दिया – राजगढ़। राज्याभिषेक (1674 ई.) के पहले लगभग पचीस वर्षों तक राजगढ़ किला शिवाजी की राजधानी रहा। अपने पचास वर्षों (18,306 दिनों) के अल्प जीवन के किलों पर बिताए गए कुल दिनों में से सबसे अधिक 2827 दिन शिवाजी ने राजगढ़ में गुजारे। मराठा काल की कई प्रमुख घटनाएं इस किले से जुड़ी हुई है। 1659 ई. में शिवाजी राजगढ़ से ही अफजल खान का मुकाबला करने गए थे। शिवाजी के आगरा के लिए रवाना होने और वहां से लौट आने की ऐतिहासिक घटनाएं यहां राजगढ़ में ही घटित हुईं। शिवाजी के दूसरे बेटे राजाराम का जन्म राजगढ़ में ही हुआ। 1665 ई. की पुरंदर की संधि के अंतर्गत शिवाजी ने 23 किले मुगल सत्ता को सौंप दिए थे, मगर राजगढ़ उन्होंने नहीं दिया ! पेशवा काल में राजगढ़ ने कोई महत्व की भूमिका अदा नहीं की। मुख्य कारण यह था कि तब तक राजनैतिक क्रियाकलाप गिरिदुर्गों से शहरों की ओर स्थानांतरित हो गए थे। राजगढ़ किला 1947 ई. तक भोर के सचिव परिवार के अधिकार में रहा।

4. प्रतापगढ़ किला

शिवाजी द्वारा 1656-58 ई. में निर्मित प्रतापगढ़ गिरिदुर्ग, महाबळेश्वर से 24 कि. मी. पश्चिम में और पुणे से करीब 145 कि.मी. दक्षिण में है। कोयना नदी की घने जंगलों वाली घाटी के सिरे पर स्थित यह गोलाकार व सपाट उत्तुंग पहाड़ी, शिवाजी के पहले, ‘भोरप्या’ के नाम से जानी जाती थी। किले के निर्माण की जिम्मेदारी मोरोपंत पिंगळे और हिरोजी इंदुलकर को सौंपी गई थी। हिरोजी एक सुयोग्य स्थपति थे और मोरोपंत बाद में शिवाजी के पेशवा (प्रधान मंत्री) बने। किले की मुख्य विशेषता है: इसकी दोहरी तटबंदी और चारों ओर बनी दीवारें, जिनकी ऊंचाई स्थान-स्थान की प्राकृतिक स्थिति के अनुसार कम-ज्यादा रखी गई थी। बालेकिल्ला, यानी ऊपरी किला पहाड़ी के पश्चिमोत्तर शिखर पर बनाया गया और इसका विस्तार 180 वर्ग मीटर है। निचला किला दक्षिण-पूर्वी कगारों पर बना है और इसकी दीवारों तथा बाहर को निकले इसके स्कंधों पर मजबूत बुर्ज बनाए गए थे। अन्य कई स्मारकों के अलावा, निचले किले के पूर्वी भाग में शिवाजी का बनवाया भोसलों के कुल-देवता भवानी का मंदिर है। अब किले के काफी नजदीक तक पक्की सड़क पहुंचती है।

प्रतापगढ़ में घटित सबसे महत्वपूर्ण घटना थी – शिवाजी-अफजल खान प्रसंग। इसी किले के नीचे के एक स्थान पर 10 नवंबर, 1659 को शिवाजी ने बीजापुर की आदिलशाही के शक्तिशाली सिपहसालार अफजल खान पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की थी। यह घटना, जिसमें शिवाजी ने अफजल खान पर काबू पाकर उसे मार डाला, सर्वविदित है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि एक अत्यंत नाजुक स्थिति में शिवाजी ने तत्काल-बुद्धि का परिचय दिया, तो अफजल खान को अपने दु:साहसी अतिविश्वास की भारी कीमत चुकानी पड़ी। किले के नीचे जिस ज़गह अफजल खान की मृत्यु हुई, वहां उसकी कब्र बनी हुई है। इस ऐतिहासिक घटना की तीन सौवीं जयंती की स्मृति में प्रतापगढ़ दुर्ग के सबसे ऊंचे स्थान पर 1959 ई. में शिवाजी की अश्वारोही प्रतिमा स्थापित की गई।

5. लोहगढ़-विसापुर किला

लोहगढ़ किला मुंबई-पुणे रेलमार्ग के मळवली स्टेशन से 7 कि.मी. दक्षिण में है। सद्माद्रि पर्वत-शृंखला की एक शाखा.पहाड़ी पर स्थित लोहगढ़ किला इंद्रायणी और पवना नदियों की घाटियों को विभाजित करता है। लोहगढ़ के नजदीक, इसकी पूर्व दिशा में, विसापुर नामक एक किला और है। इन दोनों किलों के बीच के निचले भाग में लोहगढ़वाड़ी गांव है, जहां से लोहगढ़ को ऊपर रास्ता जाता है। उत्तर की ओर से गांव की दिशा में चढ़ते समय बाईं ओर भाजा की प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएं दिखाई देती हैं। लोहगढ़ के चार प्रमुख प्रवेश-द्वारों की व्यूह-रचना बड़ी ही अनोखी है। उत्तर पेशवाकाल में नाना फडणीस (1742.1800 ई.) ने किले में कुछ इमारतें, कुंड और एक बावली बनवाई। ऊपर एक छोटा मंदिर और मुसलमान पीर की कब्र भी है। किले की पश्चिम दिशा में तटबंद-युक्त एक लंबा और संकीर्ण पर्वत-स्कंध है, जिसे उसके प्राकृतिक आकार के कारण, मराठी में *विंचूकाटा* (बिच्छू का डंक) कहते है।

विसापुर किला लोहगढ़ से बड़ा और उससे कुछ अधिक ऊंचाई पर स्थित है। अब लगभग खंडहर बने इस किले का इतिहास लोहगढ़ के इतिहास से जुड़ा हुआ है। विसापुर की ऊंचाई का लाभ उठाकर अंग्रेजों की सेना ने 1818 ई. में अपनी तोपें इस किले पर स्थापित कर दीं और वहां से लोहगढ़ पर बमबारी की। परिणामतः मराठों को लोहगढ़ छोड़ देना पड़ा। लोहगढ़ का इतिहास काफी लंबा है। इस पर कई राजवंशों का कब्जा रहा : सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव, बहामनी, निजामशाही, मुगल और मराठा। शिवाजी ने 1648 ई. में इस किले पर अधिकार कर लिया था, परंतु पुरंदर की संधि के अंतर्गत उन्हें इसे 1665 ई. में मुगलों को सौंप देना पड़ा। शिवाजी ने 1670 ई. में पुनः इसे जीत लिया और वे यहां अपना राजकोष रखने लगे। उसके बाद यह किला अधिकतर मराठों के ही कब्जे में रहा। अंत में 1818 ई. में अंग्रेजों ने लोहगढ़-विसापुर पर अधिकार कर लिया।

6. सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग जो कुरटे नामक एक चट्टानी द्वीप पर बना हुआ है, मालवण के समुद्रतट से करीब एक कि.मी. दूर है। मालवण शहर, मुंबई से 510 कि.मी. दक्षिण में और गोवा से 130 कि.मी. उत्तर में है। जब जंजीरा जलदुर्ग को जीतने के शिवाजी के सारे प्रयत्न विफल रहे, तो उन्होंने 1664.67 ई. में सिंधुदुर्ग का निर्माण करवाया। यह किला शिवाजी के एक योग्य स्थपति हिरोजी इंदुलकर के निर्देशन में बना। इसके निर्माण के लिए शिवाजी ने गोवा से 100 तृंगांली विशेषज्ञों को बुलाया, था। ऐसी मान्यता है कि इस किले को बनाने में 3000 कारीगरों ने तीन साल तक अहोरात्रा काम किया। सू्रत से लूटकर लाए धन को इस किले के निर्माण में लगाया गया था।

सिंधुदुर्ग 48 एकड़ में फैला हुआ है और आज भी काफी अच्छी हालत में है। इसकी टेढ़ी.मेढ़ी दीवार 9 मीटर ऊंची और 3 मीटर चौड़ी है, और इसमें 42 बुर्ज हैं। विशाल आकार के पत्थरों के अलावा, दीवार और बुर्जों के निर्माण में 2000 खंडी (72,576 किलोग्राम) लोहे का इस्तेमाल हुआ है। विशेष बात यह है कि इसकी नींव के पत्थरों की जुड़ाई में जगह.जगह पिघले सीसे का उपयोग किया गया।

मालवण के घाट से नौका लेकर धोनतारा और पद्मगढ़ नामक दो छोटे द्वीपों के बीच से एक तंग और उथले जलमार्ग द्वारा किले तक पहुंचना होता है। दो बुर्जों के बीच का प्रवेश.द्वार शहर की दिशा में है। प्रवेश.द्वार के नजदीक, प्राकार पर बने हुए दो छोटे गुम्बजों के अंदर चूना.मसाले में शिवाजी के पैर और प्रजे के छाप सुरक्षित है। किले में शिवाजी का एक मंदिर भी है, जो देश में अपनी तरह का अकेला है। उसमें शिवाजी की जो मूर्ति है वह बिना दाढ़ी की है। किले में कुछ मंदिर, कुंड और तीन कुएं है। करीब बीस हिन्दु,मुस्लिम वंशानुगत परिवार आज भी किले में बसते है। सिंधुदुर्ग और समुद्रतट के बीच में पद्मगढ़ नामक एक छोटा जलदुर्ग बनाया गया था, जो अब खंडहर बन गया है। पद्मगढ़ एक प्रकार से सिंधु दुर्ग का प्रहरी था और वहां जहाज भी बनते थे।

शिवाजी के बाद सिंधुदुर्ग राजाराम.ताराबाई, आंग्रे, पेशवा और कोल्हापुर के भोसलों के अधिकार में रहा। 1765 ई. में थोड़े समय के लिए सिंधुदुर्ग पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया था और तब उन्होंने इसे “फोर्ट आगस्टस” का नाम दिया था। 1818 ई. में जब इस किले पर अंग्रेजों का स्थायी कब्जा हो गया, तो उन्होंने इसके रक्षा-साधनों को नष्ट कर दिया।

7. कुलाबा.अलीबाग जलदुर्ग

कुलाबा किला मुंबई से 112 कि.मी. दक्षिण में स्थित अलीबाग शहर के समीप एक चट्टानी द्वीप पर बना हुआ है। इसका विस्तार उत्तर-दक्षिण में 275 मीटर और पूर्व-पश्चिम में 100 मीटर है। भाटे के समय इस किले तक पैदल पहुंचा जा

किले की दीवार

सकता है। किले की दीवार अलग-अलग जगह 6 से 8 मीटर तक ऊंची है। इसके चौड़े परकोटे में 17 बुर्ज हैं। पूर्वोत्तर कोने में बना इसका मुख्य प्रवेश-द्वार, जिसे ‘महादरवाजा’ कहते हैं, शहर की दिशा में खुलता है। सागौन की लकड़ी से बने इस दरवाजे में लोहे की मजबूत कोणकीलें ठुकी हुई थीं। किले की दक्षिण दिशा में भी एक छोटा दरवाजा है। किले की दीवार में घूने के गारे का इस्तेमाल नहीं हुआ है। दुर्ग के भीतर मीठे पानी की टंकी, एक कुआं और अनेक मंदिर हैं। यहां स्थित गणपति मंदिर अब भी अच्छी स्थिति में हैं। किले के प्राकार के उत्तरी कोने में खुले समुद्र की ओर मुंह किए आज भी दो अंग्रेजी तोपें देखी जा सकती है। दुर्ग के बाहर दक्षिण दिशा में नौकाओं की मरम्मत करने के लिए एक गोदी बनी हुई थी, जिसका एक भाग भाटे के समय आज भी नजर आ जाता हैं।

किला का दृश्य

शिवाजी द्वारा निर्मित कुलाबा ही अंतिम किला था। उनकी मृत्यु अप्रैल, 1680 में हुई। कुलाबा किले का निर्माण-कार्य उसके कुछ ही समय पहले पूर्ण हुआ था। किले का महत्व आंग्रे परिवार के समय में बढ़ा और तब यह मराठा नौसेना का प्रमुख गढ़ बन गया। इस किले में आंग्रे परिवार के लिए महल, उनके अधिाकारियों के लिए मकान, शस्त्रागार, धान्य-कोठार आदि की सुविधाएं थीं। अब पुरानी कोई भी इमारत बची नहीं हैं। कुलाबा पर आंग्रे परिवार का शासन 1840 ई. में समाप्त हो गया। वे ‘कुलाबकर’ के नाम से भी जाने जाते थे।

किला का दृश्य

मुख्य किले के पूर्वोत्तर में, थोड़े अंतर पर, एक गढ़ी-नुमा छोटा समुद्री किला है, जो सरजाकोट कहलाता है। उसे कुलाबा का 18वां बुर्ज भी कहा जाता है। सामने अलीबाग के तट पर बने हीराकोट से की जाने वाली बमबारी से कुलाबा किले की रक्षा के लिए सरजाकोट का निर्माण हुआ था।

8. कोंडाणा-सिंहगढ़ दुर्ग

किला का दृश्य

पुणे से करीब 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित सिंहगढ़, जिसके साथ अनेक शौर्यगाथाएं जुड़ी हुई हैं, एक गिरिदुर्ग है। इसका प्राचीन नाम कोंडाणा या कोंडाणा था। सह्याद्रि पर्वत शृंखला की एक शाखा, भूलेश्वर पहाड़ी की एक पृथक् चट्टान पर स्थित इस त्रिभुजाकार किले की समुद्र-तल से ऊंचाई 1380 मीटर है। खड़ी प्राकृतिक ढाल से सुरक्षित होने के कारण सिंहगढ़ की केवल कुछ ही जगहों पर दीवारों और बुर्जों का निर्माण किया गया है। इसके दो मुख्य दरवाजे हैं - दक्षिण-पूर्व में कल्याण दरवाजा और उत्तर-पूर्व में पुणे दरवाजा।

किला का दृश्य

सिंहगढ़ का इतिहास काफी लंबा हैं। 1328 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक ने यहां के कोळी सरदार नाग नाईक को हराकर इस किले पर कब्जा कर लिया। तीन सदियों बाद शिवाजी ने यहां के किलेदार को रिश्वत देकर इसे अपने अधिकार में ले लिया, परंतु पुरंदर की संधि (1665 ई.) के तहत यह मुगलों के कब्जे में चला गया। 1670 ई. में शिवाजी के एक सरदार तानाजी मालुसरे ने अदम्य साहस और शौर्य का परिचय देकर सेना-सहित किले में प्रवेश किया और अपने प्राणों की आहुति देकर अंत में जीत हासिल की। शिवाजी ने समाचार सुना, तो उनके दुःख भरे उद्गार थे : “गढ़ मिला, मगर सिंह चला गया !” तब से किले को नया नाम मिला - सिंहगढ़। अंत में 1818 ई. में अंग्रेजों ने सिंहगढ़ को पेशवा से छीन लिया। तब बमबारी में पुराने लगभग सभी स्मारक नष्ट हो गए। कायम रहे - केवल पुराने प्रवेश-द्वार और भग्न प्राचीर।

किला का दृश्य

किले का ऊपरी हिस्सा ऊंचा-नीचा है और वहां बहुत कम इमारतें बची हुई हैं। जहां-तहां मंदिरों, मकानों और मीनारों के भग्नावशेष बिखरे हुए हैं। महाखड्ग की तरफ वीर तानाजी की समाधि हैं। शिवाजी के पुत्र राजाराम (मृत्यु 1700 ई.) की समाधि भी यहीं पर है। यहां कुछ बंगले भी हैं, जिनमें एक लोकमान्य तिलक का हैं।

किला का दृश्य

मराठा शासनकाल में सिंहगढ़ ने पुणे के प्रहरी की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आज राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (खड़कवासला) के छात्र-सैनिकों को सिंहगढ़ की छत्रछाया में अभ्यास करते देखा जा सकता हैं।

9. शिवनेरी किला

जुन्नर शहर के नजदीक का शिवनेरी गिरिदुर्ग, जहां शिवाजी का जन्म हुआ, पुणे से करीब 85 कि.मी. उत्तर में हैं। करीब 300 मीटर ऊंची एक पृथक् पहाड़ी पर स्थित यह किला त्रिभुजाकार हैं; इसका चौड़ा आधार-भाग दक्षिण की ओर है एवं संकीर्ण शीर्ष-भाग उत्तर की ओर। किले की चढ़ाई का मार्ग सात प्रवेश-द्वारों से सुरक्षित है। इनमें से पांचवें प्रवेश-द्वार में लोहे की नुकीली कोणकीलें ठुकी हुई हैं, ताकि यह हाथी के आक्रमण को सह सके। किले में चट्टान को काटकर बनाए गए कई कुंड और तालाब हैं, जिनमें से दो के नाम गंगा और जमुना हैं। अब किले में कुछ ही स्मारक शेष बचे है। एक सिरे पर अस्तबल के अवशेष हैं, तो दूसरे सिरे पर मुगल काल की एक मस्जिद है। जिस मकान में शिवाजी का (फरवरी, 1627 ई. में) जन्म हुआ था, उसका हाल ही के वर्षों में पुनर्निर्माण किया गया है। पास ही में शिवकुंज नामक एक नया मंदिर है, जिसमें जीजाबाई

किला का दृश्य

और बालक शिवाजी की मूर्तियां हैं। सर् रिचर्ड टेंपल ने अपनी पुस्तक ‘शिवाजी और मराठों का उत्थान’ में शिवनेरी के बारे में लिखा है : “आप देखेंगे कि यह स्थान कितना ढलुआं और ऊंचा-नीचा है और एक जननायक के जन्म के लिए कितना उपयुक्त था !”

शिवनेरी गिरिदुर्ग का इतिहास सातवाहनों के समय से शुरू होता है। शिवनेरी पहाड़ी की तीनों ओर की ढलानों पर चट्टानों को काटकर बनाई गई कई गुफाएं हैं, जो दर्शाती है कि इसवी सन् की आरंभिक तीन सदियों में यह स्थल एक प्रमुख बौद्ध केंद्र रहा होगा। सातवाहनों के बाद शिवनेरी पहाड़ी शिलाहारों, यादवों, बहामनी सुल्तानों और मुगलों के अधिकार में रही। 1599 ई. में शिवनेरी किला शिवाजी के दादा मालोजी भोसले को जागीर के रूप में मिला और फिर यह शहाजी के अधिकार में आ गया। जन्मस्थान होने पर भी, शिवाजी को यह किला मुगलों को सौंपना पड़ा और वह अपने जीवनकाल में इसे वापस नहीं ले पाए।

किला का दृश्य

शिवनेरी दुर्ग-समूह, जिसमें हरिश्चंद्रगढ़, जुन्नर, जीवधन आदि किले शामिल हैं, नानेघाट के प्रसिद्ध दर्रे पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से बड़े महत्व का रहा हैं।

10. पुरंदर किला

किला का दृश्य

पुरंदर गिरिदुर्ग, पुणे से करीब 40 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में और सासवड़ से लगभग 10 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। एक विशाल पहाड़ी पर निर्मित इस किले की ऊंचाई समुद्र-तल से 1398 मीटर और इसके नीचे के मैदान से लगभग 700 मीटर हैं। यह वस्तुतः एक जुड़वां किला है। इनमें अधिक मजबूत और महत्वपूर्ण पुरंदर किला हैं। पूर्व की ओर आगे पहुंची इसकी पर्वत-श्रेणी की एक सपाट पहाड़ी पर बना वज्रगढ़ एक छोटा सहयोगी किला हैं। पुरंदर के दो भाग हैं : बालेंकिल्ला अथवा ऊपरी भाग के चारों ओर खड़ी कगार है और माघी अथवा नीचे का भाग मैदान से करीब 300 मीटर ऊपर हैं। निचले भाग की उत्तर दिशा में माघी का क्षेत्र काफी चौड़ा हैं, जहां किले की छावनी रही थी। इस क्षेत्र में नए और पुराने कई स्मारक है। इस विस्तृत क्षेत्र के पूर्व में, एक संकरी पर्वत-श्रेणी के परे की पहाड़ी पर बना वज्रगढ़ या रुद्रमाल किला है।

किला का दृश्य

छावनी क्षेत्र से एक घुमावदार रास्ता ऊपरी किले की ओर जाता हैं। इस रास्ते में जो प्रमुख प्रवेश-द्वार हैं, वह ‘दिल्ली दरवाजा’ कहलाता हैं। ऊपरी किले का प्राचीन प्रमुख स्मारक हैदूकेदारेश्वर का मंदिर।

किला का दृश्य

पुरंदर का इतिहास कम-से-कम 13वीं सदी से शुरू होता है। बहामनी सुल्तानों ने चौदहवीं सदी में यहां कुछ प्राचीर और बुर्ज खड़े किए थे। 1484 ई. से आगे के करीब सौ साल तक यह किला निजामशाही शासकों के कब्जे में रहा। 1596 ई. में पुरंदर किला शिवाजी के पितामह मालोजी भोसले को जागीर के रूप में मिला। मगर शिवाजी को इसे 1646 ई. में अपने प्रयास से ही हासिल करना पड़ा। 1665 ई. में विशाल मुगल सेना ने, जिसका नेतृत्व जयसिंह और दिलेर खान कर रहे थे, पुरंदर को घेर लिया। जो युद्ध हुआ उसमें शिवाजी का वीर किलेदार मुरार बाजी प्रभु मारा गया। उसके बाद जो संधि हुई उसके अंतर्गत शिवाजी ने 23 किले मुगल सत्ता को सौंप दिए। उनमें पुरंदर और वज्रगढ़ किले भी शामिल थे। पुरंदर के निचले हिस्से में मुरार बाजी प्रभु की स्मृति में उनकी एक योद्धारूप मूर्ति स्थापित की गई है। शिवाजी ने 1670 ई. में पुरंदर को पुनः प्राप्त कर लिया था। बाद में यह किला पेशवाओं की प्रिय शरणस्थली बन गया था।

किला का दृश्य

1818 ई. में अंग्रेजों ने पुरंदर को अपने अधिकार में ले लिया। दूसरे महायुद्ध के दौरान जर्मन युद्धबंदियों को यहां कैदी बनाकर रखा गया था। एक जर्मन कैदी डा. एच. गोएट्ज ने पुरंदर का व्यापक अध्ययन किया और इस किले के बारे में एक प्रामाणिक पुस्तक लिखी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद यहां राष्ट्रीय कडेट कोर (एन.सी.सी.) का प्रशिक्षण केंद्र रहा।

11. विजयदुर्ग

किला का दृश्य

रत्नागिरि से 48 कि.मी. दक्षिण में स्थित विजयदुर्ग भारत के पश्चिमी तट के मजबूत समुद्री किलों में से एक हैं। यह एक बढ़िया बंदरगाह भी है। वाघोटन नदी के मुहाने के पास की एक चट्टान पर बना यह किला तीन ओर समुद्र और पूर्व की ओर एक खाई से घिरा हुआ था। खाई अब भर दी गई हैं। पूर्व दिशा के प्रवेश-द्वार को पार करने के बाद रास्ता बीच की ऊंची दीवार के पास से होता हुआ छिपे हुए भीतरी दरवाजे तक पहुंचता है। तेहरी मजबूत तटबंदी वाले इस किले के 27 बुर्ज थे, जिनमें कुछ दोमंजिले भी थे। किले के अंदर कई इमारतें और भंडार-गृह थे। एक ‘विश्राम गृह’ को छोड़कर अब बाकी सभी पुरानी इमारतें लगभग नष्ट हो गई है। पानी के लिए किले के अंदर कई बड़े कुंड और कुएं बनाए गए थे।

किला का दृश्य

कुछ साल पहले किले के पश्चिम में, 100 मीटर की दूरी पर, पानी के अंदर पत्थरों की 3 मीटर ऊंची, 7 मीटर चौड़ी और 122 मीटर लंबी एक दीवार खोजी गई है। यह दीवार क्यों और किस तरह बनाई गई थी, यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया हैं। वाघोटन नदीतट पर, किले से तीन कि.मी. पूर्व की ओर, एक गोदी बनाई गई थी। वहां मराठों की नौकाएं बनाई जाती थीं एवं उनकी मरम्मत की जाती थीं।

किला का दृश्य

विजयदुर्ग एक काफी पुराना स्थल है। नजदीक ही गियें नामक गांव है, इसलिए इस किले को पहले ‘घेरिया’ के नाम से जाना जाता था। बीजापुर के शासकों ने इस किले का विस्तार किया था। उसके बाद 17वीं सदी के मध्य में शिवाजी ने किले पर कब्जा करके इसे तेहरी तटबंदी और अनेक बुर्जों वाले एक मजबूत किले में बदल डाला और इसे नया नाम दिया – विजयदुर्ग। मराठों के नौसेनाध्यक्ष (‘सरखेल’) कान्होजी आंग्रे (1667–1729 ई.) के समय में विजयदुर्ग को इतनी मजबूती प्रदान की गई थी कि यूरोप की समुद्री शक्तियां, काफी प्रयास करने पर भी, इस किले को जीत नहीं सकी थीं। बाद में, 1756 ई. में, पेशवा और अंग्रेजों के संयुक्त अभियान में विजयदुर्ग का पतन हुआ। यह किला सन् 1818 ई. तक पेशवा के अधिकार में रहा और उसके बाद अंग्रेजों के कब्जे में चला गया।

12. पन्हाळा गिरिदुर्ग

किला का दृश्य

कोल्हापुर से करीब 19 कि.मी. पश्चिमोत्तर में स्थित पन्हाळा या पन्हाळगढ़ दक्खन का संभवतः सबसे बड़ा किला है। लगभग त्रिभुजाकार यह गिरिदुर्ग समुद्र-तल से करीब 850 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसका घेरा करीब 7.24 कि.मी. लंबा है। अपनी आधी लंबाई तक यह किला प्राकृतिक ढलान और उस पर बनाए गए प्राकार से सुरक्षित हैं। इसकी शेष आधी लंबाई में इसे पत्थरों की मोटी प्राचीर और बुर्जों से मजबूत बनाया गया हैं। किले में दोहरी दीवार वाले तीन भव्य दरवाजे थे, जिनमें से दो अभी भी मौजूद है। पश्चिम दिशा का ‘तीन दरवाजा’ आलीशान और बहुत मजबूत है। किले में कई सारे भग्न स्मारक हैं। उनमें सबसे प्रभावशाली हैं: तीन अंबारखाने यानी, धान्य–कोठार, जिनमें से एक का नाम है गंगा कोठी। यह विशाल कोठार 10.7 मीटर ऊंचा है और करीब 950 वर्ग-मीटर जगह घेरता है। किले के पूर्वोत्तर कोने में सज्जा कोठी नामक दो मंजिली इमारत हैं; जहां शिवाजी ने अपने गुमराह बेटे संभाजी को नजरबंदी में रखा था।

किला का दृश्य

पन्हाळा में शिलाहार शासक भोज (द्वितीय) की 1178 ई. से 1209 ई. तक राजधानी रही। शिलाहारों के बाद यहां यादवों और बहामनियों का शासन रहा। 1489 ई. में यह किला और परिसर बीजापुर की आदिलशाही के अधिकार में चला गया। फिर 1659 ई. में शिवाजी ने इस किले पर कब्जा कर लिया। सिद्दी जोहार की फौज ने जब पन्हाळा को चार माह तक घेरे रखा, तो यहीं से शिवाजी बारिश की एक रात को विशालगढ़ की ओर प्रस्थान कर गए। बीच की कुछ अवधि को छोड़कर, जब पन्हाळा मुगलों के हाथ में चला गया था, यह किला मराठों के ही हाथ में रहा। स्वतंत्रता-प्राप्ति तक इस पर कोल्हापुर राजकुल का अधिकार बना रहा।

किला का दृश्य

मराठी के प्रख्यात कवि मोरोपंत (1729–94 ई.) का जन्म इसी किले में हुआ था और उनके जीवन के आरंभिक 24 वर्ष यहीं पर गुजरे। राजतंत्र से संबंधित मराठी पुस्तक ‘आज्ञापत्र’ के लेखक रामचंद्र अमात्य की समाधि भी यहीं पर है। इस पुस्तक में अमात्य ने दुर्ग-निर्माण के बारे में उपयोगी जानकारी दी है। आज पन्हाळा एक गिरिस्थल बन गया है, इसलिए यहां पर्यटकों के लिए प्रायः सभी सुविधाएं उपलब्ध है।

13. अजिंक्यतारा-सातारा किला

सातारा गिरिदुर्ग, जिसे अजिंक्यतारा भी कहते हैं, सातारा शहर के दक्षिणी सिरे से काफी नजदीक हैं। समुद्र-तल से 994 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह किला, पूर्व से पश्चिम करीब 1000 मीटर लंबा और 500 मीटर चौड़ा हैं। अपने वैभव के दिनों में यह किला पत्थरों की मजबूत दीवार और बुर्जों से सुरक्षित था। किले के दो द्वार थे। ऊंचे पुरतों से संरक्षित मुख्य प्रवेश-द्वार पश्चिमोत्तर कोने के पास है और अब वहां तक पक्की सड़क जाती हैं। दक्षिण-पूर्व के कोने में बना छोटा द्वार बाहर निकलने के लिए था। किले के भीतर जो भवन, कुएं, तालाब, मंदिर आदि थे, वे अब भग्नावस्था में हैं। किले के सबसे ऊंचे स्थान पर आज एक वायरलेस रिले स्टेशन है।

किला का दृश्य

1192 ई. के एक अभिलेख के अनुसार, पन्हाळा से शासन करने वाले शिलाहार शासक भोज-द्वितीय ने सातारा-कोल्हापुर परिसर में कम से कम 15 किले बनवाए थे, जिनमें एक सातारा-अजिंक्यतारा भी था। बहामनी सुल्तानों ने इस किले का विस्तार और नवीनीकरण किया। 1673 ई. में शिवाजी ने सातारा के किले पर अधिकार कर लिया। उसके बाद इस किले ने शिवाजी के सैनिक

अभियानों में काफी महत्व की भूमिका अदा की। 1700 ई. में सातारा किले पर औरंगजेब का अधिकार हो गया, तो उसने अपने तीसरे बेटे शाहजादे आजम के नाम पर इसे 'आजमतारा' नाम दिया। संभव है कि अजिंक्यतारा शब्द आजमतारा से बनाया गया हो। मराठों द्वारा 17०1 ई. में पुनः जीत लिए जाने के बाद इस किले में 1749 से 1848 ई. तक सातारा के भोसले राजाओं की गद्दी रही। उसके बाद यह किला ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार में चला गया।

14. सुवर्णदुर्ग

समुद्री किला सुवर्णदुर्ग रत्नागिरी जिले के हर्णे बंदरगाह के समीप है। यह प्राकृतिक बंदरगाह अपने मत्स्य-उद्योग और उसके व्यापार के लिए काफी प्रसिद्ध है। अत्यंत मजबूत सुवर्ण- दुर्ग की दीवार ठोस चट्टान को काटकर उठाई गई है और बड़े-बड़े चौकोर प्रस्तर-खंडों का उपयोग करके परकोटे को ऊंचा किया गया है। दीवारों की घुनाई के लिए किसी मसाले का इस्तेमाल नहीं हुआ है। किले की दीवार में कई बुर्ज बने है और इसकी पश्चिम दिशा में, खुले समुद्र की ओर, एक दरवाजा है। मुख्य प्रवेश-द्वार, जो भू-भाग से दृष्टिगत नहीं है, पूर्व की ओर है। दरवाजे की दहलीज पर एक कच्छप उकेरा हुआ है और उसके बगल की दीवार में मारुति (हनुमान) की मूर्ति बनाई गई है। किले के भीतर कई इमारतें, जलकुंड और बारूदखाना तथा शस्त्रागार के लिए स्थान थे। अब ये सभी इमारतें नष्ट हो गई है।

सुवर्णदुर्ग का निर्माण 1७वीं सदी में संभवतः बीजापुर के शासकों ने किया था। शिवाजी ने इस किले को जीतकर इसकी मरम्मत करवाई और इसे एक मजबूत जलदुर्ग में बदल डाला। सुवर्णदुर्ग भी मराठा नौसेना का एक प्रमुख गढ़ बन गया। आरंभ में यह कान्होजी आंग्रे का मुख्य समुद्री किला था। 1818 ई. तक सुवर्णदुर्ग पेशवा के अधिकार में रहा।

सुवर्णदुर्ग के समीप समुद्रतट पर तीन छोटे किले हैं—गोवा, कणकदुर्ग और फतहगढ़। इनके और सुवर्णदुर्ग के बीच में तीन-चार सौ मीटर का जलांतराल है। इन तीन छोटे किलों में गोवा किला सबसे मजबूत था। इसके दो दरवाजे हैं—एक जमीन की ओर और दूसरा समुद्र की ओर, सुवर्णदुर्ग की दिशा में। समुद्री द्वार की पार्श्व दीवार पर बाघ, गरुड़ और हाथियों की आकृतियां उकेरी हुई है। किले के भीतर की पुरानी इमारतें नष्ट हो गई है। कणकदुर्ग, की तीन दिशाओं में समुद्र है और अब इसके केवल दो खंडित बुर्ज कायम हैं। इस किले के सबसे ऊंचे स्थान पर एक दीपस्तंभ है। फतहगढ़ अब पूर्णतः नष्ट हो गया है। संभवतः इन तीनों तटवर्ती छोटे किलों को, सुवर्णदुर्ग की सुरक्षा के लिए, कान्होजी आंग्रे (1667—1729 ई.) ने बनवाया था।

15. त्र्यंबक और चाकण किले

त्र्यंबकेश्वर तीर्थ के समीप स्थित त्र्यंबक अथवा ब्रह्मगढ़ गिरिदुर्ग, नासिक शहर से 32 कि.मी. उत्तर में है। किला एक ऐसी ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है, जिसके लगभग चारों ओर खड़ी चट्टानी कगार है। इसके अलावा, किले को दीवार और बुर्जों से भी सुरक्षित बनाया गया था। किले पर जाने के केवल दो प्रवेश-मार्ग हैं। दक्षिण दिशा का मुख्य प्रवेश-मार्ग लगभग खड़ी कगार को काटकर बनाई गई करीब 300 सीढ़ियों से और चट्टान को ही काटकर बनाए गए द्वारों से होकर जाता है। उत्तरी मार्ग पर केवल एक द्वार है और वहां चट्टान को काटकर बनाए गए एक संकीर्ण मार्ग से होकर ऊपर पहुंचना पड़ता है। किला अब भग्नावस्था में है। किले के ऊंचे स्थान से आसपास के अंजनेरी, हरिहर और अन्य कुछ गिरिदुर्गों का भव्य दृश्य देखने को मिलते है।

त्र्यंबक किले का निर्माण काफी हद तक देवगिरि (दौलताबाद) गिरिदुर्ग की पद्धति के अनुसार हुआ है, इसलिए संभवतः यह राष्ट्रकूट-यादव काल में बना था। यादवों (1271 ई.) के बाद यह निजामशाही सुल्तानों, मुगलों और मराठों के अधिकार में रहा। त्र्यंबक और इसके आसपास के किले उत्तरी कोंकण के प्रवेश-मार्ग पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से इनका बड़ा महत्व रहा है। 1818 ई. में अंग्रेजों ने काफी कड़े मुकाबले के बाद त्र्यंबक को जीत लिया, तो फिर आसपास के किलों ने जल्दी ही आत्मसमर्पण कर दिया। गोदावरी नदी त्र्यंबक की पहाड़ी से ही निकलती है।

चाकण गांव और यहां का स्थलदुर्ग पुणे से 29 कि.मी. उत्तर में है। लगभग वर्गाकार यह किला भीतरी तथा बाहरी दीवारों और बुर्जों तथा इसके कोंनों में बने टावरों से सुरक्षित था। दीवार के बाहर चौड़ी खाई भी थी। किला अब खंडहर, बन गया है।

चाकण काफी पुराना किला है और यह कई राजवंशों के कब्जे में रहा है। पता चलता है कि अबीसिनीया के एक सरदार ने 1295 ई. में यहां किलेबंदी की थी। 1595 ई. में यह किला शिवाजी के पितामह मालोजी भोसले को जागीर में मिला। यहां एक महत्वपूर्ण घटना तब घटी, जब 1660 ई. में शायस्ता खां ने काफी कड़े मुकाबले के बाद इस पर कब्जा कर लिया था। अहमदनगर से

कोंकण जाने वाले सबसे कम दूरी के मार्ग पर स्थित होने के कारण चाकण स्थलदुर्ग का सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व था। अंग्रेजों ने इस किले को 1818 ई. में मराठों से छीन लिया।

16. वसई का किला

वसई शहर मुंबई से करीब 48 कि.मी. उत्तर में उल्हास नदी के परे बसा हुआ है। पुराने शहर में स्थित यह किला पुर्तगालियों का उत्तर में, गोवा के बाद, सबसे महत्वपूर्ण मुख्यालय रहा था। वसई का यह तटवर्ती जलदुर्ग तीन ओर समुद्र से एवं जमीन की ओर एक खाई द्वारा घिरा हुआ था। खाई, जिसमें समुद्र का पानी पहुंचता था, अब पाट दी गई है। इस दशमुजाकार किले की 4.5 कि.मी. लंबी पत्थर की दीवार में 11 बुर्ज थे। किले के दो प्रवेश-द्वार थे — पश्चिम की ओर भूमि-द्वार और पूर्व की ओर समुद्र-द्वार। भीतर एक छोटा बालेकिल्ला भी था। किले में जल-कुंडों, भंडार-गृहों, बारूदखाना, शस्त्रागार आदि साधन मुँहैया थे। किले में कुछ खेत भी थे, जहां अनाज और सब्जियां उगाई जाती थीं। अब किले के पुराने सभी स्मारक खंडहर बन गए है।

जब प्राचीन सोपारा बंदरगाह (वसई से 1० कि.मी. उत्तर का आज का नाला-सोपारा गांव) इस्तेमाल करने योग्य नहीं रहा, तो वसई का महत्व बढ़ता गया और यह एक व्यापारिक केंद्र बन गया। गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के एक सेनापति मलिक तोकन ने 1533 ई. में वसई में एक छोटा-सा किला खड़ा किया। 1534 ई. में बहादुर शाह को विवश होकर वसई का क्षेत्र पुर्तगालियों को सौंप देना पड़ा। यहां पुर्तगालियों ने पहले बालेकिल्ला बनाया और फिर 1590 ई. तक किले की दीवार और उसके भीतर के स्मारक अस्तित्व में आए। आगे के करीब 150 साल तक वसई में वैभव और सम्पन्नता का साम्राज्य रहा। पुर्तगालियों ने यहां कई शानदार आवास-गृहों, कॉन्वेंट्स, गिरिजाघरों और एक अनाथालय का निर्माण किया। तत्कालीन किले के भीतर केवल कुलीन पुर्तगाली (हिडाल्गो) ही रह सकते थे। वसई, पुर्तगालियों का एक प्रमुख नौसैनिक अड्डा और जहाज-निर्माण का केंद्र था। पुर्तगालियों का पतन 1739 ई. में हुआ, जब पेशवा बाजीराव के भाई चिमाजी आप्पा ने कठोर संघर्ष और भारी जनहानि के बाद किले पर कब्जा कर लिया। फिर 1802 ई. में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने यहीं पर उस अप्रिय "वसई संधि" पर हस्ताक्षर किए जिससे मराठा संघ का सदा के लिए विघटन हो गया। अंत में 1817 ई. में वसई शहर और किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

17. देवगिरि-दौलताबाद किला

औरंगाबाद से 11 कि.मी. पश्चिमोत्तर में स्थित देवगिरि (बाद का दौलताबाद) स्थान अपने दुर्जेय गिरिदुर्ग के लिए विख्यात है। किला एक ऐसी अलग-थलग खड़ी शंक्वाकार पहाड़ी पर स्थापित है, जो समीप के मैदान से एकाएक करीब 190 मीटर ऊंची उठी हुई है। किलेबंदी तीन रक्षात्मक दीवारों और बहुत सारे बुर्जों से हुई है। किले की प्रमुख विशेषताएं हैं — चौड़ी खाई, खड़ी कगार और ठोस चट्टान को काटकर बनाया गया भूमिगत मार्ग। इस मार्ग के ऊपरी सिरे पर लोहे की एक जाली रखी जाती थी और उस पर आग जलाकर शत्रु को नीचे ही रोक दिया जाता था। किले के भीतर के प्रमुख स्मारक है — चांद मीनार, चीनी महल और बारादरी।

चांद मीनार, जो करीब 63 मीटर ऊंची है, अलाउद्दीन बहमन शाह ने दौलताबाद को जीतने की यादगार में 1435 ई. में बनवाई थी। मीनार की दूसरी दिशा में जुम्मा मस्जिद है, जिसके स्तंभ किसी पुराने मंदिर के है। उसके समीप पत्थरों से निर्मित एक विशाल तालाब है। नीचे के किले के सिरे पर स्थित चीनी महल में औरंगजेब ने 1687 ई. में गोलकुंडा के अंतिम शासक अब्दुल हसन तानाशाह को कैद कर रखा था। नजदीक के एक बुर्ज पर मेढ़े के मुंहवाली किला शिकर्ना नामक एक विशाल तोप है।

किले के सबसे ऊपरी स्थान के समीप बारह कोनों वाली बारादरी इमारत है। किले के सबसे ऊपरी मुख्य बुर्ज पर भी एक तोप है।

देवगिरि की स्थापना हालांकि यादव शासक मिल्लम-पंचम ने (1187 ई.) की थी, परंतु किले का निर्माण सिंधण-द्वितीय के शासनकाल (1210-46 ई.) में हुआ। 1294 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे जीत लिया। किसी मुस्लिम शासक का दक्खन की ओर यह पहला अभियान था। अंत में 1318 ई. में मलिक काफूर ने देवगिरि के अंतिम यादव राजा हरपाल को मार डाला। फिर 1327 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली की सारी आबादी को देवगिरि ले जाकर उसे अपनी राजधानी बनाने का प्रयास किया और नगर को नया नाम दिया — दौलताबाद। उसके बाद दौलताबाद का किला 1526 ई. तक बहामनी शासकों के अधिकार में रहा। फिर औरंगजेब की मृत्यु (17०7 ई.) तक यह मुगलों के कब्जे में रहा। उसके बाद इस पर हैदराबाद के निजाम का अधिकार हो गया।

एलोरा की विख्यात गुफाएं देवगिरि-दौलताबाद से केवल 16 किलोमीटर दूर है।

18. बल्लाळपुर, चंद्रपुर और माणिकगढ़ किले

महाराष्ट्र के चंद्रपुर (पुराना चांदा) जिले में स्थित ये तीनों किले जनजाति मूल के है। अपने कागज कारखाने और इस परिसर की कोयला खानों के लिए प्रसिद्ध **बल्लाळपुर** कस्बा जिला-मुख्यालय चंद्रपुर से 16 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में है। सन् 1437-62 की कालावधि में बल्लाळपुर में गोंड राजा खांडक्या बल्लाळशाह की राजधानी थी। उसने यहां वर्धा नदी के पूर्वी तट पर दीवारों और बुर्जों से युक्त एक वर्गाकार भूमिदुर्ग बनाया था। एक-दूसरे के समकोण में बने किले के दो प्रवेश-द्वार आज भी कायम है। नदी तक जाने के लिए पीछे की तरफ भी एक द्वार है। किले का परकोटा भी अभी मौजूद है, मगर भीतर की सभी पुरानी इमारतें नष्ट हो गई हैं।

चंद्रपुर की स्थापना का श्रेय भी खांडक्या बल्लाळशाह को ही है। जब राजा्ानी बल्लाळपुर से चंद्रपुर स्थानांतरित हुई, तो बल्लाळ राजाओं ने यहां भी ऊंची दीवारों और बुर्जों वाले एक विशाल भूमिदुर्ग का निर्माण किया। किले के चारों दिशाविंदुओं में चार भव्य द्वार बनाए गए। पुरानी इमारतें अब नष्ट हो गई है, परंतु द्वार और परकोटे के कुछ भाग अभी भी मौजूद है। अठारहवीं सदी के मध्य में नागपुर के रघुजी भोसले ने चंद्रपुर पर कब्जा कर लिया। अंत में 1818 ई. में चंद्रपुर किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। चंद्रपुर अब महाराष्ट्र का एक औद्योगिक स्थल है और यह अपने प्राचीन महाकाली मंदिर के लिए भी प्रसिद्ध है।

माणिकगढ़, चंद्रपुर से करीब 35 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में है और आजकल इसके नजदीक स्थापित एक सीमेंट कारखाने के लिए अधिक जाना जाता है। नाग जनजाति के राजाओं द्वारा 9वीं सदी में निर्मित माणिकगढ़ गिरिदुर्ग समुद्र-तल से 5०7 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। मजबूत दीवारों और बुर्जों से इसकी किलेबंदी हुई थी। किले के भीतर कई तालाब और भवन थे। परंतु पुराने सभी स्मारक अब पूर्णतः नष्ट हो गए है और दुर्ग, वन्य पशुओं की शरणस्थली बन गया है। घने जंगलों से होता हुआ एक पक्का रास्ता किले के मुख्य द्वार के समीप पहुंचता है, जिसके नजदीक ही एक प्राचीन विष्णु मंदिर है।

19. बाळापुर का किला

बाळापुर तहसील का एक शहर है और जिला मुख्यालय अकोला से 26 किलोमीटर दूर है। माण और म्हैस नदियों के संगम पर बसा हुआ बाळापुर एक ऐतिहासिक शहर है एवं यहां का दुर्ग, विदर्भ और खानदेश का संभवतः सबसे मजबूत किला है। औरंगजेब के बेटे आजम शाह ने 1721 ई. में इस किले की नींव डाली थी और एलिचपुर (अब अचलपुर, जिला अमरावती) के नवाब इस्माइल खान ने 1757 ई. में इसे पूरा किया। किला काफी-कुछ अच्छी हालत में है और आजकल इसके भीतर कुछ सरकारी दफ्तर है।

दो नदियों के बीच की ऊंची भूमि पर स्थित इस किले के भारी-भरकम परकोटे और बुर्ज अपने समय की सर्वोत्तम ईंटों से निर्मित हैं। इस किले के एक के भीतर एक तीन दरवाजे है। बाहरी अथवा नीचे का किला दशमुजाकार है और इसके प्रत्येक कोण पर एक बुर्ज बना हुआ है। दीवारों की ऊंचाई के स्तर पर बना भीतरी किला पंचमुजाकार है और उसके भी प्रत्येक कोण पर एक बुर्ज है। सबसे ऊपर की दीवारें 3 मीटर चौड़ी है और उनके प्राकार में, तीन अलग-अलग दिशाओं में अस्त्र छोड़ने के लिए, अनेक रेखा-छिद्र बनाए गए है। किले के भीतर तीन कुएं और एक मस्जिद है। बारिश के दिनों में किला बाढ़ के पानी से घिर जाता है — सिर्फ एक जगह आने-जाने के लिए रास्ता खुला रहता है। जिस बाला देवी से शहर को बाळापुर नाम मिला है, उनका मंदिर दक्षिण दिशा में किले के ठीक नीचे है।

आई.न.ए.अकबरी में उल्लेख है कि बाळापुर, बरार के सूबे का एक सबसे सम्पन्न परगना है। बाळापुर को अहमदनगर राज्य से हासिल करने के बाद अकबर का बेटा मुराद यहां बस गया था। उस समय बाळापुर स्थानीय नदी से निकाले गए पत्थरों से निर्मित अपनी कलात्मक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध था। अपने उत्तम कपड़े और हाथ-कागज के लिए भी बाळापुर ने दूर-दूर तक ख्याति अर्जित कर ली थी।

20. गाविलगढ़ किला

सतपुड़ा की 11०3 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित गाविलगढ़ किला लोकप्रिय पर्वतीय स्थल चिखलदरा से 2.5 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में और विदर्भ की प्राचीन राजधानी अचलपुर से करीब 30 कि.मी. उत्तर दिशा में है। अब यह किला मेळघाट व्याघ्र परियोजना के अंतर्गत आता है। सदियों पहले पशुचारी गवळी लोगों ने इस स्थान पर एक छोटा सा किला बनाया था, जो कालांतर में गवळीगढ़ या गाविलगढ़ के नाम से जाना गया। नए किले का निर्माण बहामनी वंश के नौवें शासक अहमद शाह वली ने 1425 ई. में किया। उसके बाद विदर्भ

की इमादशाही के संस्थापक फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क ने 1488 ई. में गाविलगढ़ की मरम्मत की और इसका विस्तार किया।

गाविलगढ़ के दो स्तर है : भीतरी किला, बाहरी किले से कुछ अधिक ऊंचाई पर है। बाहरी किले की एक तीसरी दीवार है, जो उत्तर की ओर से इसकी रक्षा करती थी। किले के दो मुख्य दरवाजे है : बाहरी और भीतरी किले के मध्य में 'दिल्ली दरवाजा' एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा का 'फतेह दरवाजा', जिसे फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क ने बनवाया था। किले के बचे हुए स्मारकों में सबसे विशिष्ट है एक भव्य मस्जिद, जो भीतरी किले में दक्षिण की ओर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित है। पठान वास्तु शैली की इस मस्जिद के अग्रभाग में सात मेहराब हैं। मस्जिद की दो मीनारों में से पूर्वोत्तर कोने की केवल एक ही मीनार मौजूद है। पत्थर की अत्यंत सुंदर जाली से निर्मित इसकी चौकोर छतरी मस्जिद के गुम्बज के थोड़े ऊपर तक पहुंचती है। किले में कम-से-कम आठ तालाब थे, जिनमें से दो आज भी अच्छी हालत में है। किले में आज भी कुछ तोपें देखी जा सकती हैं, जिनमें सबसे बड़ी इसके दक्षिणी सिरे पर है।

गाविलगढ़ का इतिहास काफी लंबा है। किवदंती है कि "जो गाविलगढ़ का मालिक, वह बरार (विदर्भ) का मालिक"।

बहामनी राज्य के विघटन के बाद गाविलगढ़ पर कई शासकों का अधिकार रहा। 1488 ई. में यह एलिचपुर (अचलपुर) की इमादशाही के अधिकार में आया, 1574 ई. में निजामशाही के अधिकार में, 1599 ई. में मुगलों के अधिकार में और 1754 ई. में मराठों के अधिकार में। 1803 ई. में इसे अंग्रेजों ने जीत लिया। 1858 ई. में तात्यां टोपे सतपुड़ा की पहाड़ियों में पहुंच गए थे और दक्षिण भारत में जाकर आजादी के आंदोलन को पुनः उठाना चाहते थे। उस समय अंग्रेजों ने गाविलगढ़ को तहस-नहस कर डाला।

21. नरनाळा, अकोला और अचलपुर के किले

नरनाळा गिरिदुर्ग अकोला जिले के आकोट शहर से 18 कि.मी. उत्तर की ओर सतपुड़ा की एक पृथक पहाड़ी पर स्थित है। समुद्र-तल से 973 मीटर की ऊंचाई पर बने इस किले के तीन हिस्से हैं — पूर्वोत्तर में जाफराबाद, मध्य में मुख्य किला नरनाळा, और दक्षिण-पश्चिम में तेलीगढ़। यह विशाल किला करीब 9 मीटर ऊंची दीवारों, 67 बुर्जों और छह बड़े दरवाजों से सुरक्षित था। विदर्भ में इमादशाही के संस्थापक फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क द्वारा 1487 ई. में बनवाया गया यहां का शाहणुर अथवा 'महाकाली' दरवाजा सुल्तान शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सफेद बलुआ पत्थरों से निर्मित इस दरवाजे पर अरबी में अभिलेख खुदे हैं और इसके दोनों ओर कोठरियां व गैलरियां बनी हुई हैं, जो कि संभवतः सुरक्षाकर्मियों द्वारा प्रयोग में लायी जाती थीं। इस दरवाजे का वैशिष्ट्य इसके दोनों ओर निर्मित लटकते छज्जों वाली दो-दो खूबसूरत खिड़कियां हैं। किले के भीतर कई तालाब व कुंड, एक 'नौ गजी' तोप, महल, बारादरी, शस्त्रागार और मस्जिद के अलावा कई इमारतों के खंडहर हैं।

परंपरा के अनुसार नरनाळा बहुत प्राचीन किला है। जानकारी मिलती है कि अहमद शाह बहामनी ने 1425 ई. के आसपास इस किले की मरम्मत करवाई थी और 1487 ई. में फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क का इस किले पर कब्जा हो गया था। अकबर के शासनकाल में नरनाळा एक सूबा था, फिर परसोजी भोसले (प्रथम) ने 1701 ई. में इस किले को मुगलों से जीत लिया। मगर 1803 ई. में यह किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

अकोला में मोर्णा नदी के किनारे जो किला है, उसे औरंगजेब के शासनकाल में असद खान ने 1697 ई. में बनवाया था। किले का बहुत-सा भाग नष्ट हो गया है, मगर महल के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं। कुछ बुर्जों की मरम्मत की गई है और किले के मुख्य हिस्से को बगीचे में बदल दिया गया है।

अचलपुर (पुराना नाम एलिचपुर) का इतिहास एक प्रकार से विदर्भ का इतिहास है। अपने वंश के प्रथम शासक नवाब सुल्तान खान ने 1754 ई. में एलिचपुर के सुल्तानपुरा में सर्पण नदी के दक्षिणी छोर पर एक किला बनवाया था। फिर सुल्तान खान के बेटे इस्माइल खान ने शहर के चारों ओर एक ऊंची और मजबूत दीवार बनवाई, जिसमें चार दरवाजे थे। उस दीवार के कई हिस्से और दरवाजे आज भी कायम हैं।

22. अहमदनगर किला

अहमदनगर किला संरचना की दृष्टि से भारत के संभवतः सबसे सुदृढ़ स्थलदुर्गों में से एक है। यह किला नगर के पूर्व में छावनी क्षेत्र के मध्य में स्थित है। इस दीर्घवृत्ताकार किले की दीवार करीब 1.7 किलोमीटर लंबी है और इसे 24 बुर्जों ने मजबूती प्रदान की है। दीवार के बाहर की खाई कमोबेश 30 मीटर तक चौड़ी और 4 से 6 मीटर तक गहरी है। खाई के दूसरी ओर पुश्ते पर पेड़ लगे हुए हैं। काटे गए पत्थरों से निर्मित विशाल ठोस दीवार खाई के तल से 25

मीटर ऊंची है। किले के दोनों प्रवेश-द्वारों तक पहुंचने के लिए खाई पर ऐसे झूला-पुल बने थे, जिन्हें उठाया जा सकता था। किले के भीतर की कई नई और पुरानी इमारतें काफी-कुछ अच्छी हालत में हैं। आजकल यह किला भारतीय सेना के अधिकार में है।

अहमदनगर किले का निर्माण हुसैन निजाम शाह ने 1559 ई. में किया था। 1596 ई. में विशाल मुगल सेना ने इस किले को चार महीने तक घेरे रखा था। उस समय चांदबीबी की रक्षा सेना ने मुगलों की सेना के छक्के छुड़ा दिए और उन्हें संधि के लिए विवश कर दिया। जब मुगल सेना ने 1600 ई. में किले पर दुबारा आक्रमण किया, तब इस पर अकबर का अधिकार हो गया। 1759 ई. में तीसरे पेशवा के चचेरे भाई सदाशिव भाऊ ने इसे मुगल किलेदार से खरीद लिया। 1797 ई. में अहमदनगर का यह किला दौलतराव शिंदे के अधिकार में चला गया। फिर 1797 ई. में जनरल वेलेंजली ने इसे जीत लिया, मगर इस पर मराठों का अधिकार बना रहा। अंत में पुणे संधि (जून, 1817 ई.) के अंतर्गत बाजीराव पेशवा (द्वितीय) ने अहमदनगर का यह किला अंग्रेजों को सौंप दिया।

अहमदनगर के इस किले का मराठों और अंग्रेजों ने राजकारावास के रूप में अक्सर इस्तेमाल किया। नाना फडणीस ने इस किले में राजपरिवार के कई व्यक्तियों को बंदी बनाकर रखा था। मगर वह अवसर भी आया, जब नाना फडणीस को भी दौलतराव शिंदे ने इसी किले में बंद कर दिया ! 1942 ई. के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान कांग्रेस कार्यकारिणी के सभी सदस्य यहां बंदी थे। पं. जवाहरलाल नेहरू ने *डिस्कवरी आफ इंडिया* (भारत की खोज) पुस्तक इसी किले में लिखी थी।

23. माहूर किला

माहूर गांव, जिसे माहोर भी कहते हैं, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा विभाग के नांदेड जिले के किनवट शहर से 40 कि.मी. पश्चिमोत्तर में है। पहले माहूर एक बड़ा नगर और दक्षिणी विदर्भ का सूबा था। सह्याद्रि पर्वत-शृंखला की पूर्वी पहाड़ी पर स्थित यहां का गिरिदुर्ग काफी पुराना है और कम से कम यादवों के समय से इसका अस्तित्व रहा है। बाद में यह किला कई सत्ताओं — गोंड, बहामनी, आदिलशाही और निजामशाही के कब्जे में रहा। तदनंतर इस पर मुगलों और उनके प्रतिनिधियों का अधिकार हो गया। यह गिरिदुर्ग तीन ओर से पैनगंगा नदी से घिरा हुआ है।

दो जुड़वां पहाड़ियों पर बना यह विशाल किला प्राचीरों, प्राकारों और बुर्जों से सुरक्षित था। इसके दो मुख्य प्रवेश द्वार थे — एक दक्षिण दिशा में और दूसरा उत्तर दिशा में। उत्तरी द्वार अभी काफी अच्छी हालत में है। दक्षिण दिशा की करीब पांच मीटर चौड़े प्राकार वाली दीवार भी अभी मौजूद है। किले में जो महल, मस्जिद, धन्यागार, बारूदखाना आदि थे वे सभी खंडहर बन गए हैं। किले के लगभग मध्यभाग में 'ईजाळ तलाव' नामक एक बड़ा जलाशय है।

उत्तर भारत से दक्खन जाने वाले एक महत्वपूर्ण मार्ग पर स्थित होने के कारण माहूर का इतिहास काफी पुराना है। प्रमाण मिलते हैं कि माहूर, जिसका प्राचीन नाम मातापुर था, सातवाहनों और राष्ट्रकूटों के समय में एक महत्वपूर्ण स्थान था। किले के समीप की एक पहाड़ी पर स्थित रेणुका मंदिर यादवों के समय में बना था। कुछ समय तक गोंडों के अधिकार में रहने के बाद 15 वीं सदी में माहूर बहामनियों के कब्जे में चला गया, तो उन्होंने इसे एक सूबा बना दिया। निजामशाही, आदिलशाही और ईमादशाही — इन तीनों सत्ताओं के बीच, 16वीं सदी में, हुए संघर्ष में माहूर की बड़ी क्षति हुई। उसके बाद 17 वीं सदी में माहूर पर मुगलों और उनके सूबेदारों का अधिकार हुआ। जब शाहजहां ने अपने पिता जहांगीर के खिलाफ बगावत की तो उसने अपनी बेगम और बच्चों के साथ, जिनमें छह साल का औरंगजेब भी था, माहूर के किले में शरण ली थी।

माहूर के बस-स्टैंड से करीब दो कि.मी. की दूरी पर एलिफेंटा (मुम्बई के समीप के द्वीप पर स्थित गुफा-मंदिर) की तरह की चट्टान को काटकर बनाई गई राष्ट्रकूट काल की दो गुफाएं हैं।

24. पौनी और नगरधन के किले

भंडारा जिले का पौनी स्थान नागपुर से 82 कि.मी. दक्षिणपूर्व में है। वैनगंगा नदी से करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर बसा पौनी शहर भव्य दरवाजों से युक्त मध्ययुगीन परकोटे से घिरा था। मगर अब केवल पश्चिम की ओर की किलेबंदी का कुछ ही भाग साबूत बचा है। किले की दीवार कही-कहीं करीब 20 मीटर ऊंची है और उसके बाहर चारों ओर करीब 20 मीटर चौड़ी खाई थी। वह पुरानी खाई अब एक मौसमी झील में बदल गई है, और 'बाळ समुद्र' कहलाती है। किले का निर्माण 18वीं सदी के आरंभ में गोंड राजा बख्त बुलंद ने करवाया था और लगभग 1740 ई. में रघुजी भोसले (प्रथम) ने इस पर कब्जा कर लिया था।

पौनी एक काफी प्राचीन स्थल है। हाल ही के वर्षों में यहां एक बहुत बड़े बौद्ध स्तूप के अवशेष मिले हैं, जिससे पता चलता है कि यह स्थान बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केंद्र रहा है। पौनी के परकोटे से इस क्षेत्र पर शासन करने वाले वाकाटक नरेश प्रवरसेन-द्वितीय का एक ताम्रपट भी मिला है। अतः यह संभव है कि परकोटे का भीतरी कच्चा भाग मध्ययुग से काफी पहले का हो।

नगरधन का प्राचीन नाम नंदिवर्धन था। वर्तमान नगरधन गांव नागपुर से 34 कि. मी. दक्षिण-पूर्व में है। यह प्रसिद्ध पर्वतीय तीर्थस्थल रामटेक से 5 कि.मी. दक्षिण में है। नगरधन का वर्तमान भूमिदुर्ग, पूर्व की ओर से नागपुर की सुरक्षा की दृष्टि से, संभवतः रघुजी भोसले ने 1740 ई. में बनवाया था। इस वर्गाकार किले की बाहरी दीवार बुर्जों से सुरक्षित रही है और भीतरी दीवार इमारतों की रक्षा करती थी। किले का मुख्य दरवाजा पश्चिमोत्तर दिशा में है और आज भी अच्छी स्थिति में है। किले के भीतर कुएं-नुमा एक मंदिर है, जिसमें मूर्ति को उसकी एक कगार में स्थापित किया गया है। किले की बाकी इमारतें नष्ट हो गई हैं।

मौजूदा किले से थोड़ी दूरी पर एक ऐसा स्थान है, जहां से यदा-कदा बड़े आकार की पुरानी ईंटें प्राप्त होती हैं। कहा जाता है कि यह वाकाटकों की प्राचीन राजधानी और उनके दुर्ग का स्थान है।

विवरण : गुणाकर मुळे

Forts of Maharashtra

1. Murud-Janjira Fort

Situated on a rock of oval shape near the port town of Murud, 165 kms south of Mumbai, Janjira is one of the strongest marine forts of India (the word 'Janjira' is a corruption of the Arabic word *jazira* for island). The fort is approached by sail-boats from Rajapuri jetty. The main gate of the fort faces Rajapuri on the shore and can be seen only when one is quite close to it. It has a small postern gate towards the open sea for escape. The fort has 19 rounded bastions, still intact. There are many canons of native and European make rusting on the bastions. Now in ruins, the fort in its heyday had all necessary facilities, e.g., palaces, quarters for officers, mosque, a big fresh water tank, etc. On the outer wall flanking the main gate, there is a sculpture depicting a tiger-like beast clasping elephants in its claws. This sculpture, its meaning difficult to interpret, appears on many fort-gates of Maharashtra.

Originally the fort was a small wooden structure built by a Koli chief in the late 15th century. It was captured by Pir Khan, a general of Nizamshah of Ahmednagar. Later the fort was strengthened by Malik Ambar, the Abyssinian Siddi regent of Ahmednagar kings. From then onward Siddis became independent, owing allegiance to Adilshah and the Mughals as dictated by the times. Despite their repeated attempts, the Portuguese, the British and the Marathas failed to subdue the Siddi power. Shivaji's all attempts to capture Janjira fort failed due to one reason or the other. When Sambhaji also failed, he built another island fort, known as Kansa or Padmadurg, just 9 kms north of Janjira. The Janjira state came to an end after 1947. The palace of the Nawabs of Janjira at Murud is still in good shape.

2. Raigarh Fort

Raigarh was Shivaji's capital, the hillfort where he was crowned (1674 AD) and where he died (1680 AD). Strategically situated on an irregular wedge-shaped mass of rock, detached from the main body of Sahyadri mountains by a deep valley and inaccessible from three sides, Raigarh is 210 kms south of Mumbai and 27 kms north of Mahad. The fort's 5.12 sq. kms hill-top plateau has three main points : Hirakani in the west, Takamak in the north and Bhavani in the east. There is only one pathway to Raigarh, probably in keeping with Shivaji's strategy : "the fort's approach should be easy for friends and impossible for foes". A motorable road leads to Chit Darwaja, about 2 kms from Pachad, the village at the base, where lies the *samadhi* of Jijabai, Shivaji's mother. A long climb from Pachad takes one to the Mahadarwaza, flanked by two massive bastions and a high curtain wall.

The top plateau is covered with a large number of remains of buildings and reservoirs. Behind the Ganga Sagar reservoir are two high towers, in Muslim style. Behind the towers is the Balekilla or citadel, entered by the Palakhi-darwaza. On way to the right are remains of chambers of women of Royal families and on the left those of the Darbar of Shivaji. On a low mound in the centre is the site of Shivaji's throne. Further north is the two-row market place, the Jagadishwar temple in an enclosure and the *samadhi* of Shivaji, and also that of his favourite dog, Waghya.

The history of Raigarh, earlier known as Rairi, is obscure. In the 12th century Rairi was a seat of the Shirke-palegar family. After changing several hands, it was captured by Shivaji from Chandrarao More in 1656 AD. Shivaji chose Rairi for his capital and renamed it as Raigarh. The gigantic construction work was entrusted to Abaji Sondev and Hiroji Indulkar. In its heyday Raigarh had more than 300 houses and structures. After

Shivaji, the fort remained in the hands of Sambhaji till 1689 AD, when it was captured by the Mughals. Reverted to the Marathas in 1735 AD, Raigarh was surrendered to the British in 1818 AD.

3. Rajgarh Fort

Rajgarh enjoys a unique position among the hillforts of Maharashtra. It possesses all the salient features of fort architecture which are peculiar to the Deccan region. Situated on one of the spurs of the Sahyadri mountains known as Murum hill, Rajgarh is about 35 kms south-west of Pune. The fort is at a height of approx. 1300 metres from sea-level and comprises three terraces (*machis*) and a citadel (*Balekilla*). There are four gates called Gunjavane, Pali, Alu and Kaleshwari or Dindi gate. The first two gates lead to the Padmavati *machi*, the third to the Sanjivani and the last to the Suvela *machi*. Rajgarh looks like a winged bird flying in the sky – the Padmavati and the Sanjivani *machis* forming its two wings and the *Balekilla* and the Suvela *machi* its main body.

All the four parts of the fort have remains of buildings which included residential quarters, *sadar* or state offices, bazar or business quarter, granary, armoury, temples, etc. The fort had ample supply of water through tanks, cisterns and wells. The water-supply being better on the Padmavati *machi*, it was a major centre of activity on the fort.

Rajgarh, formerly known as Murumdeo, was earlier held by the Nizamshahi and Adilshahi rulers. By 1648 AD, it was under the firm control of Shivaji, who gave it the new name Rajgarh, the king's fort.. Shivaji's construction activities here continued till 1670 AD. For nearly twenty five years Rajgarh was the pre-coronation capital of Shivaji. Out of Shivaji's short life of fifty years (18,306 days) his stay of 2827 days at Rajgarh was the longest. The fort witnessed a number of major political events of the Maratha period.

It was from Rajgarh that Shivaji went to meet Afzal Khan in 1659 AD. His departure to Agra and return from there, both these historic events took place at Rajgarh. Rajaram, Shivaji's second son, was born here. By the 'Treaty of Purandar' in 1665 AD, Shivaji ceded 23 forts to the Mughals, but not Rajgarh. During the Peshwa period Rajgarh did not play any significant part mainly due to the shifting of political activities from the hillforts to the cities. Rajgarh remained with the Sachiv family of Bhor till 1947 AD.

4. Pratapgarrh Fort

Pratapgarh, a very strong hillfort built by Shivaji in 1656-58 AD, is 24 kms west of Mahabaleshwar and about 145 kms south of Pune. Before Shivaji, the hill, known as Bhorapya, was a flat-topped high round rock at the head of the densely forested Koyana basin. The construction of the fort was entrusted to Moropant Pingale, who later became Shivaji's Peshwa, and Hiroji Indulkar, the architect. A special feature of the fort is its double line of fortification and walls on all sides, their heights varying according to the nature of the ground. The upper fort is built across the northern and western crest of the hill measuring about 180×180 sq. metres. The lower fort is built on the southern and the eastern terraces with walls and strong bastions at corners on projecting spurs. Apart from other monuments, there is on the eastern portion of the lower fort the temple of Bhavani, the family deity of the Bhosales, built by Shivaji. Today a motorable road takes the traveller quite close to the fort.

The most important event connected with Pratapgarrh is the Shivaji-Afzal Khan episode. It was at the base of this fort that Shivaji, on 10th November 1659, scored a historic victory against the mighty Afzal Khan, commander of the Bijapur Adilshahi forces. The episode, in which Afzal Khan was overpowered and killed by Shivaji, is well known. In short, it can be said that in a very critical situation Shivaji showed the presence of mind and Afzal Khan paid the price for his rash

overconfidence. Now there exists a grave at the place where Afzal Khan was killed. To commemorate the tricentenary of that historic event, an equestrian statue of Shivaji was installed at the top of the Pratapgarrh fort in 1959 AD.

5. Lohagarh-Visapur Fort

Lohagarh fort is 7 kms south of Malavali station on the Pune-Mumbai railway line. Situated on a side range of Sahyadri mountains, it divides the basins of Indrayani and Pavana rivers. Close to Lohagarh, on its eastern side, there is another fort, called Visapur. The approach to Lohagarh is from the village Lohagadwadi, situated in the depression between Lohagarh and Visapur. Climbing from the north towards the village, one can see on the left side the famous Buddhist caves of Bhaja. The four large gates of Lohagarh are very intricately arranged and are still intact. In the later Peshwa period, Nana Fadanis (1742-1800 AD) built several structures in the fort including a big tank and a step-well (*bawali*). There is also a small temple and grave of a muslim *pir*. On the west side of the fort there is a long and narrow wall-like fortified spur called *Vinchukata* in Marathi (scorpion sting) because of its natural shape.

Visapur Fort is larger and also higher than Lohagarh fort. Now in ruins, its history is closely linked with that of Lohagarh. Making use of its higher position, the British troops in 1818 AD set up their canons on Visapur and bombarded Lohagarh, forcing the Marathas to leave the fort. Lohagarh has a long history. It was occupied by many dynasties: Satavahanas, Chalukyas, Rashtrakutas, Yadavas, Bahamanis, Nizamshahis, Mughals and Marathas. Lohagarh was captured by Shivaji in 1648 AD, but by theTreaty of Purandar he had to surrender it to the Mughals in 1665 AD. It was recaptured by Shivaji in 1670 AD and was used for keeping the treasury. Then on, the fort remained with the Marathas. Ultimately Lohagarh-Visapur was taken over by the British in 1818 AD.

6. Sindhudurg Fort

Sindhudurg fort stands on a rocky island, known as Kurte, barely a km. from the Malavan coast. Malavan is 510 kms south of Mumbai and 130 kms north of Goa. Sindhudurg was built in 1664-67 AD by Shivaji when all his attempts to take the island fort of Janjira proved futile. The construction was done under the supervision of Hiroji Indulkar, an able architect. Shivaji had invited 100 Portuguese experts from Goa for the construction of the fort. It is also recorded that 3000 workers were employed round the clock for three years to build Sindhudurg. It was the booty from the sack of Surat that went into the building of Sindhudurg.

One of the best preserved forts of the Marathas, the 48 acre Sindhudurg fort has a four kms long zig-zag line of 9 metres high and 3 metres wide rampart with 42 bastions. Apart from the huge stones, the building material involved 2000 *khandis* (72,576 kgs) of iron for erecting the massive curtain wall and bastions. A notable feature is that the foundation stones were laid down firmly in molten lead.

The fort is approachable from the Malavan pier by a boat through a narrow navigable channel between two smaller islands of Dhontara and Padmagad. The main gate, flanked by massive bastions, faces the city. On the parapet, close to the entrance, under two small domes Shivaji's palm and footprint in dry lime are preserved. Also, in the fort there is the Shivaji temple - the only one of its kind in the country - where the image of Shivaji is without a beard ! Inside the fort there are some temples, tanks and three wells. It also houses some twenty Hindu-Muslim hereditary families. On a rocky island between Sindhudurg and the coast stood the small fort of Padmagad, now in ruins. It acted as a screen for Sindhudurg and was also used for ship-building.

After Shivaji, Sindhudurg passed through the hands of Rajaram-Tarabai, Angres, Peshwa and the Bhosales of Kolhapur. It was briefly captured by the British in 1765 AD and was renamed by them as ‘Fort Augustus’. Later in 1818 AD, the British dismantled the fort’s defence structures.

7. Kulaba-Alibag Fort

Built on a rock island near Alibag town, 112 kms south of Mumbai, the Kulaba fort is an imposing structure, measuring roughly 275 metres from north to south and 100 metres from east to west. At low tide one can walk across to the fort. The height of the fort-wall varies from 6 to 8 metres at different places. It has a wide parapet with 17 bastions. The main gateway of the fort, called *Maha Darwaja*, is in the north-east corner and faces the city. The teak-door had strong iron-spikes driven in them. There is also a small gate on its southern side. The masonry of the fort is without lime mortar. Inside the fort there is a fresh water tank, a well and several temples, the *Ganapati* temple being still in good condition. In the northern corner of the parapet, there still stand two English canons facing the open sea. To the south of the fort was a ship-dock, visible even now at low-tide.

The Kulaba fort was Shivaji’s last construction and was completed almost on the eve of his death in April, 1680. It attained importance under the Angres and was the main base of the Maratha navy. It had palaces for the members of the Angre family, houses for their officers and storing arrangements for grain and other necessities. None of the buildings have survived. The rule of the Angres, who were also known as *Kulabkar*, came to an end in 1840 AD.

To the north of the main fort there is a small fort-like structure called Sarjyakot, sometimes referred to as the 18th bastion of Kulaba. Sarjyakot was constructed to answer the artillery of Hirakot situated on the Alibag shore.

8. Kondana-Sinhagarh Fort

Sinhagarh fort, whose earlier name was Kondana or Kondhana, stands 20 kms south-west of Pune. Perched on an isolated cliff of the Bhuleswar range of the Sahyadri mountains, its height above sea-level is 1380 metres. Given natural protection by its very steep slopes, the walls and bastions were constructed at only key places. It has two gates - the *Kalyan Darwaza* in the south-east and the *Pune Darwaza* in the north-east.

Sinhagarh has a long history. It was captured from the Koli tribal chieftain, Nag Naik, by Muhammad bin Tughlaq in 1328 AD. Three centuries later, Shivaji wrested it away by bribing the commander, but by the Treaty of Purandar (1665 AD) had to cede the fort to the Mughals. Sinhagarh was the scene of one of the most daring exploits in Maratha history when, in 1670 AD, it was recaptured by Shivaji’s forces under Tanaji Malusare, who laid down his life in the battle. On his death, a saddened Shivaji said, “The fort is won, but the lion is gone !” Whereupon the fort got its new name : *Sinha* (lion) *gadha* (fort). Finally the British seized the fort from the Peshwas in 1818 AD, destroying its almost all ancient monuments. Only the traditional gates and broken walls remain now.

The upper surface of the fort is undulating and retains few buildings. Ruins of temples, tombs and towers are scattered about. Near the gorge is a monument (*samadhi*) commemorating the bravery of Tanaji. There is also a tiny tomb of Rajaram, Shivaji’s son, who died here in 1700 AD. Also, there are few bungalows, including that of Lokamanya Tilak.

In the Maratha period, Sinhagarh played the crucial role of defending Pune. Today the National Defence Academy (Kharakwasla) trains its army cadets right under the shadows of Sinhagarh.

9. Shivaneri Fort

Shivaneri hillfort, birth-place of Shivaji, is near Junnar town, about 85 kms north of Pune. Situated on a 300 metre high isolated hill, the fort is triangular in shape. The wide base of the fort is towards the south and the narrow point is towards the north. The ascending path to the fort is defended by seven gates, the fifth one being armoured with anti-elephant spikes. The fort has several rock-hewn cisterns and ponds, of which two large ones are known as Ganga and Jamuna. Today, there are only a few structures remaining in the fort. At one end there is a ruined stable and at the other end a mosque of the Mughal period. The house where Shivaji was born (in February, 1630 AD) has been recently restored and a temple with statues of Shivaji and Jijabai, called *Shivakunja*, has also been built. Sir Richard Temple in his book ‘Shivaji and the Rise of Marathas’ wrote about Shivaneri : “ You will see what a rugged precipitous place this is and what a fitting spot it was for a hero to be born in !”

The Shivaneri hill, on which the fort is built, has a long history going back to the Satavahanas. There are remains of rock caves on all the three faces of Shivaneri, which show that it was a Buddhist centre during the first three centuries AD. After the Satavahanas, the Shivaneri fort was occupied by the Shilaharas, the Yadavas, the Bahamanis and the Mughals. In 1599 AD the hillfort was granted to Shivaji’s grandfather, Maloji Bhosale and passed down to Shahaji. Though Shivaji was born here, he had to surrender the fort to the Mughals and could not take it back in his lifetime.

The Shivaneri cluster of forts, comprising Harishchandragarh, Junnar, Jivadhan, etc., was very important strategically, because it controlled the ancient Nane Ghat Pass.

10. Purandar Fort

Purandar is about 40 kms south-east of Pune and some 10 kms south-west of Sasawad. Perched on a gigantic mountain mass, its height above sea-level is 1398 metres and about 700 metres above the plain at its foot. It really comprises two fortresses : Purandar, the stronger and more important of the two, and Vajragarh, a small sister fort situated on a ridge running out east of it. Purandar has two parts : the upper part or *Balekilla* with precipitous sides all around and the lower part or *machi* about 300 metres above the plain. On the north side of the lower part there is a broad terrace comprising the cantonment area of the fortifications. There are many monuments, old and new, on the terrace. Towards the east of the terrace, beyond a narrow ridge, lies the fort of Vajragarh, also called Rudramal.

From the cantonment area of the terrace a winding path leads to the upper fort. The approach is commanded by the *Dilli Darwaza*, the main gate. The most important monument on the summit of the hill is the old temple of Kedareshwar.

The history of the Purandar fort goes back to the 13th century. The Bahamani Sultans in the 14th century built here some walls and bastions. From 1484 AD, for about a hundred years, the fort remained in the hands of the Nizamshahi rulers. In 1596 AD, the fort was given as *Jagir* to Maloji Bhosale, grandfather of Shivaji. However, Shivaji had to struggle very hard to establish his control over the fort in 1646 AD. In 1665 AD, Purandar was besieged by the mighty Mughal forces under the command of Jai Singh and Dilir Khan. In the ensuing battle Murar Baji Prabhu, the gallant commander of the fort, was killed. Shivaji, under a treaty, had to surrender to the Mughals his 23 forts, including Purandar and Vajragarh. At the lower fort a statue of Murar Baji Prabhu has been installed in his memory.

Purandar was recaptured by Shivaji in 1670 AD. Later it became a favourite retreat of the Peshwas. Purandar was captured by the British in 1818 AD. During the Second World War, the British kept here the German war prisoners. Dr. H. Goetz, one

of the German prisoners, thoroughly studied Purandar and wrote a monograph on it. After Independence there also functioned a National Cadet Corps (N.C.C.) Training unit at the top.

11. Vijayadurg Fort

Vijayadurg, situated 48 kms south of Ratnagiri, is one of the strongest marine forts on the west coast of India. It is also an excellent harbour. Built on a hill on the mouth of Vaghotan river, the fort was protected on three sides by the sea and on the east side by a ditch, now filled up. After crossing the front gate on the east, the path, skirting round the massive middle wall, enters the hidden inner gateway. The strong triple line of fortifications had 27 bastions, some of them two-storeyed. Within the citadel there were many buildings and storehouses, now all in ruins except a structure called Rest House. For the supply of water there were several wells and large tanks.

In recent years a submerged wall 100 metres east of the fort has been discovered. The under-sea wall is 3 metres high, 7 metres wide and 122 metres long. How and why this sea-wall was built is not clear. On the bank of the Vaghotan river, about 3 kms from the fort, there was a wet dock where the Marathas used to build and repair their ships.

Vijayadurg is an ancient site. Initially known as Gheria, it was enlarged by the Bijapur rulers and then strengthened and enlarged in the mid-17th century by Shivaji, to whom it owes its triple line of fortifications, towers and also its new name, Vijayadurg - Victory Fort. During the time of Kanhoji Angre (1667-1729 AD), the naval chief of the Marathas, the fort was so strong and firmly held that it successfully withstood assaults of the European maritime powers. Later in 1756 AD it fell to the combined operations of the English and the Peshwas. However, it remained in the hands of the Peshwas till 1818 AD when finally it was surrendered to the English.

12. Panhala Fort

Panhala or Panhalgarh, about 19 kms north-west of Kolhapur, is possibly the largest and most important fort of the Deccan. Roughly triangular in shape, the hillfort stands at a height of about 850 metres and has a circumference of approximately 7.25 kms. Half of its length is protected by a natural scarp reinforced by a parapet wall and the remaining half is surrounded by a strong stone wall strengthened with bastions. The fort had three magnificent double walled gates, out of which two have survived. The *Teen Darwaza* to the west is an imposing and powerful structure. There are a number of ruined monuments in the fort. The most impressive among them are the three huge granaries. The largest among them, the Ganga Kothi, covers nearly 950 sq m space and is 10.7 metres high. In the north-east corner there is a double story building, called *Sajja Kothi*, where Shivaji had imprisoned his errant son, Sambhaji.

Panhala was the capital of the Shilahara king Bhoja II during 1178-1209 AD. It was successively held by the Yadava and Bahamani kings. In 1489 AD, the fort and the territory was taken over by the Adil Shahi dynasty of Bijapur. Shivaji seized the fort in 1659 AD. It was from here that Shivaji, when encircled by the forces of Siddi Johar, escaped one rainy night to Vishalgarh. Later, the fort remained with the Marathas, except for a short period in between, when it went to the Mughals. The fort remained with the Kolhapur State till India achieved independence.

The famous Marathi poet Moropanta (1729-94 AD) was born and brought up at Panhala. There is also the *samadhi* of Ramachandra Amatya, the author of *Ajnapatra*, an important work on statercraft, including fort construction. Today, Panhala is a sort of hill station and provides all the necessary facilities for tourists.

13. Ajinkyatara-Satara Fort

Satara hillfort, also known as Ajinkyatara, is very close to the south of the Satara city. Situated 994 metres above sea level, the fort has a east-west length of about 1000 metres and a breadth of about 500 metres. In its heyday the fort was protected by a strong masonry wall with bastions. There were two gates. The main gate, made formidable by high buttresses, is close to the north-west corner, now approachable by a *pukka* road. The small gate in the south-east corner was a postern one. Inside the fort there were tanks, wells, buildings, temples and stores, all in ruins now. Today there is a wireless relay station located at the top in the fort.

According to an inscription dated 1192 AD, the Shilahara king Bhoj II, who ruled from Panhala, constructed at least 15 forts around Satara-Kolhapur, which included among others, the Ajinkyatara or Satara fort. The fort was extended and renovated by Bahamani Sultans. Captured by Shivaji in 1673 AD, the fort played an important role in his military operations. When Aurangzeb took it over in 1700 AD he named it ‘Azamtara’, after his third son Prince Azam. The name ‘Ajinkyatara’ might be a corruption of Azamtara. Recaptured by the Marathas in 1701 AD, the fort was the seat of the Bhosale Rajas of Satara from 1749 to 1848 AD when the state was annexed by the East India Company.

14. Suvarnadurg Fort

The island fort of Suvarnadurg stands close to Hame in Ratnagiri District, a natural harbour famous for fishing and its marketing. A very strong fort, its walls are cut out of solid rock and the ramparts are raised by using huge square blocks. No mortar was used in the walls. The fort has many bastions and a postern gate on the western side. The hidden main gate opens towards the east. It has on its threshold a carved figure of a tortoise and on the side wall, that of *Maruti* (Hanuman). Inside the fort there were several buildings, water tanks and a place for ordinance. All the buildings are now in ruins.

The fort was probably built by the Bijapur kings in the 17th century. Captured and strengthened by Shivaji, it became a stronghold of Maratha navy and remained with the Peshwas till 1818 AD. It was one of the main naval bases of the Angres.

Gova, Kanakadurg and Fatehgarh forts on the mainland are separated from Suvarnadurg by a narrow channel. The small Gova fort was stronger than the other two. It has two gates, one towards the land and another towards the sea. On the wall of the sea-gate there are carved figures of a tiger, eagle and elephants. The old buildings inside the fort are in ruins.

Kanakadurg has the sea on three sides. Nothing remains of the fort, except two broken bastions. There is a light house at its highest point. Fatehgarh is in complete ruin. Most probably, these three small forts were built by Kanhoji Angre (1667-1729 AD) to protect Suvarnadurg from the land route.

15. Tryambak and Chakan Forts

Tryambak or Brahmagarh hillfort, overlooking the holy temple of Tryambakeshwar, is 32 kms south-west of Nasik town. The fort was built on a high hill with steep scarps to its each face. Besides, it was fortified by walls and bastions. There are only two gateways. The main southern access is through the steep steps (about 300 in numbers) cut out of a near vertical scarp and passing through rockcut gates. The northern access is through only a single gate approached by a narrow passage with steps cut from the rock. The fort is now in ruins. From the top of Tryambak, one can have a grand view of the Harihar, Anjaneri and a few other hillforts.

Being in the category of Devagiri, Tryambak fort seems to be of Rashtrakuta-Yadava origin. After the Yadavas (1271 AD) it was occupied by the Nizamshahi sultans, the Mughals and the Marathas. Tryambak and its cluster of forts provided cover to upper Konkan and so was of strategic importance. In 1818 AD, when Tryambak was taken over by the British with a tough fight, the surrounding forts surrendered without any resistance. The river Godavari originates from the Tryambak hill.

Chakan village and its landfort is 29 kms north of Pune. Nearly square, the fort was protected by a strong wall with bastions and corner towers surrounded by a moat. There was also an inner wall. The fort is now in ruins.

The Chakan fort is quite old and was occupied by several powers. An Abyssinian chief is said to have made the first fortification in 1295 AD. In 1595AD, it was given in *jagir* to Shivaji's grandfather, Maloji Bhosale. An important event occurred here when the fort was captured by Shaista Khan in 1660 AD. Being on the shortest route from Ahmadnagar to Konkan, Chakan was a place of great strategic importance. The fort was captured from the Marathas by the British in 1818 AD.

16. Vasai Fort

Vasai, also called Bassein, lies about 48 kms north of Mumbai just across the Ulhas river. The fort in the old city was the headquarter of the Portuguese in the north, next in importance to Goa. The coastal land-fort of Vasai was surrounded by sea on three sides and to the landside it had a moat which was filled by sea-water. Its 4.5 kms long strong stone wall had 11 bastions. The fort had two gates - the westward land-gate and the eastward sea-gate. There was also a small citadel in the fort. Well-equipped with water-tanks, store-houses, armoury, etc., the fort also had fields for growing grains and vegetables. All the old structures inside the wall are now in ruins.

Vasai came into prominence when the ancient harbour of Sopara (now Nalsopara village, 10 kms north of Vasai) became unfit for use. However, Vasai continued to be a trading centre. A small fort-like structure was erected here in 1533 AD by Malik Tughan, the commander of Bahadur Shah, Sultan of Gujarat. In 1534 AD, the Portuguese forced Bahadur Shah to cede Vasai in perpetuity. Here, first they constructed the citadel (Balekilla), and then in 1590 AD, the present fort with its ramparts and other structures came into being. For the next about 150 years Vasai enjoyed opulence and prosperity. The Portuguese built here magnificent houses, convents, churches and an orphanage. Only the Hidalgos (Portuguese nobles) were allowed to reside within the fort walls. Vasai was the main naval base and a sort of ship-building centre of the Portuguese. The end came in 1739 AD, when Chimaji Appa, Peshwa Bajirav's brother, stormed the fort and captured it with great loss of life. It was here in 1802 AD, the Peshwa Bajirav II signed the infamous "Treaty of Bassein" which virtually dissolved the Maratha Confederacy. Finally, the fort and the city of Vasai was ceded to the British in 1817 AD.

17. Devagiri-Daulatabad Fort

Devagiri (Daulatabad of the later period), 11 kms north-west of Aurangabad, is famous for its formidable hillfort. The fort is situated on an isolated cone-shaped hill rising abruptly from the plain to the height of about 190 metres. The fortification constitutes of three concentric lines of defensive walls with large number of bastions. The noteworthy features of the fort are the moat, the scarp and the sub-terranean passage, all hewn of solid rock. The upper outlet of the passage was filled with an iron grating, on which a large fire could be used to prevent the progress of the enemy. The Chand Minar, the Chini Mahal and the Baradari are the important structures within the fort.

The Chand Minar, about 63 metres in height, was erected by Alauddin Bahman Shah in 1435 AD to commemorate his conquest of Daulatabad. Opposite the Minar is the Jumma masjid, whose pillars originally belonged to a temple. Close to it, there is a large masonry tank. The Chini Mahal at the end of the lower fort is the place where Abdul Hasan Tana Shah, the last king of Golconda, was confined by Aurangzeb in 1687 AD. Nearby is a round bastion topped with a huge canon with ram's head, called Kila Shikan or Fort breaker. The Baradari, octagonal in shape, stands near the summit of the fort. The principal bastion at the summit also carries a large canon.

Though the city of Devagiri was founded in 1187 AD by the Yadava king Bhillam V, the fort was constructed during the reign of Singhana II (1210-46 AD). It was captured by Ala-ud-Din Khalji in 1294 AD, marking the first Muslim invasion of the Deccan. Finally in 1318 AD, Malik Kafur killed the last Yadava Raja, Harapal. Then in 1327 AD, Muhammed -bin-Tughluq sought to make it his capital, by transferring the entire population of Delhi and changing the name from Devagiri to Daulatabad. Then it was in the possession of the Bahamanis till 1526 AD. The fort remained in Mughal control till Aurangzeb's death in 1707 AD., when it passed on to the Nizam of Hyderabad. The famous Ellora Caves are just 16 kms away from Devagiri-Daulatabad.

18. Ballalpur, Chandrapur and Manikgarh Forts

Situated in Chandrapur (old Chanda) district of Maharashtra, all the three forts are of tribal origin. **Ballalpur**, now known for its coal mines and paper mills, is 16 km south-east of Chandrapur, the district headquarters. Ballalpur was the capital of the Gond king Khandakya Ballalshah during 1437-62 AD. The landfort, that he built here on the eastern bank of the Wardha river, is square in shape with walls and bastions. There are still two intact gates set at right angle to each other. There is also a small postern gate on the river side. The fort walls are still intact, but all the old buildings are in total ruins.

The credit for establishing **Chandrapur** also goes to Khandakya Ballalshah. When the capital was shifted from Ballalpur to Chandrapur, the Ballal kings built here an extensive landfort with high walls and bastions. The fort had at its four cardinal points four impressive gates. The original buildings have vanished, but the gates and a portion of the wall still exists. Chandrapur was annexed by Raghuji Bhosale of Nagpur in the middle of the 18th century. Finally the fort was captured by the Britishers in 1818 AD. Now an industrial town, Chandrapur is also famous for its old Mahakali temple.

Manikgarh, made famous by a newly established cement factory near by, is about 35 kms south-west of Chandrapur. Built by tribal Naga kings in the 9th century, the Manikgarh hillfort stands at the height of 507 metres above sea-level. It was strongly fortified with walls and bastions. There were several tanks and buildings inside the fort. Today, the fort is in complete ruins and has become a sanctuary for wild animals. A *pukka* road through a dense forest leads very close to the gateway of the fort. Nearby is an old temple of Vishnu.

19. Balapur Fort

Balapur, a taluka town, is 26 kms from Akola, the district headquarters. Situated at the junction of the rivers Man and Mhais, Balapur is a historical town and has a massively built fort, probably the strongest in Vidarbha and Khandesh regions of Maharashtra. The fort was started in 1721 AD by Azam Shah, the son of Emperor Aurangzeb, and was completed by Ismail Khan, the *Nawab* of Ellichpur (now Achalpur, Amaravati District) in 1757 AD. The fort is in a reasonably good condition and today houses some government offices.

Situated on a high ground between the rivers, the fort has very lofty walls and bastions built of the best brickwork of its time.

The fort has three gateways, one within the other. The outer or the lower fort is a decagon with a bastion at each angle, and above it rises, by the height of its walls, the inner fort which is a pentagon, each angle having a bastion, as in the lower fort. The innermost walls are 3 metres thick and their ramparts are pierced with numerous slits at three different angles for the discharge of missiles. Inside the fort are three wells and one mosque. During the rains the fort gets surrounded by floodwater except at one point. The temple of Bala Devi, from which the town has derived its name, lies just under the fort on the southern side.

The *Ain-i-Akbari* mentions Balapur as one of the richest *paraganas* of the *Subha* of Berar. Murad, the son of Akbar, settled at Balapur after acquiring it from the Ahmadnagar kingdom. At that time Balapur was famous for its artistic articles manufactured from the stone quarried from the local river. It had also acquired wide fame for the production of quality cloth and paper.

20. Gavilgarh Fort

Gavilgarh fort is situated on a 1103 metres high lower Satpuda range, now under the Melghat Tiger Project. It is 2.5 kms south-east of Chikhaldara, a popular hill-station, and about 30 kms north of Achalpur, the old capital of Berar, now a taluka town. Gavilgarh took its name from the pastoral *Gavalis* who, centuries ago, had a mud fort on this hill. The new fort was built by Ahmad Shah Wali, the ninth king of the Bahamani dynasty in 1425 AD. In 1488 AD, the fort was repaired and extended by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk, the founder of Imadshahi in Berar.

Gavilgarh has two levels, the outer fort being slightly lower than the inner one. This outer fort has a third wall which covers the approach to it from the north. The fort has two main gateways, the *Delhi Darwaza*, between the inner and outer fort, and the *Fateh Darwaza*, the south-western gate, built by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk. The most conspicuous of the remains in the fort is the great mosque which stands upon the highest point towards the south side of the inner fort. Built in the Pathan style of architecture, the mosque has seven arches in its facade. Of the two minarets, the one at the north-eastern angle of the building still exists. Its square canopy, with very exquisite stone lattice-work, rises little above the domes of the mosque. There were not less than eight tanks in the fort, two of them still in good condition. There still remain in the fort several canons, the one at the southern end being the largest.

Gavilgarh has a long history. The saying was : “One who controls Gavilgarh; controls Berar.” After the split of the Bahamani kingdom, it passed through many hands. It was with the Imadshahi in 1488 AD, the Nizamshahi in 1574 AD, the Mughals in 1599 AD and the Marathas in 1754 AD, before it fell to the British in 1803 AD. Gavilgarh was dismantled in 1858 AD lest it should be seized by Tatya Tope, who in that year attempted to break from the Satpuda hills into the Deccan in order to stir up the country for the independence movement.

21. Narnala, Akola and Achalpur Forts

Narnala fort, standing upon an isolated hill of the Satpuda range, is 18 kms north of Akot, a taluka town in Akola district. It is 973 metres above sea-level and consists of three distinct hill forts : Jafarabad in the north-east, Narnala, the principal fort, in the centre, and Teliagarh in the south-west. It was protected by a curtain wall about 9 metres high with 67 bastions and six large gates. The Shahnur or “Mahakali” gate, built by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk in 1487 AD, is a notable example of Sultanate architecture. The white sandstone gateway has Arabic inscriptions on it and is flanked upon on either side by galleries and rooms, probably for guards, but the most striking feature of the gateway is the overhanging balconied windows, two on either side. Within the fort are a number of tanks and cisterns, a large

cannon, known as *nau-gazi top*, an old palace, an armoury, a baradari, a mosque and other buildings, all in ruins.

According to tradition a very old fort, Naranala was repaired by Ahmad Shah Bahamani around 1425 AD, and in 1487 AD it came under the control of Fateh-ullah Imad-ul-Mulk, the founder of Imadshahi at Ellichpur, now called Achalpur. During Akbar’s rule, Naranala was a *Suba*. Naranala was captured by Parsoji Bhosale I in 1701 AD and remained with the Marathas till it was taken over by the British in 1803 AD.

The fort at **Akola** situated on the bank of the Morna river was constructed by Asad Khan in 1697 AD during the reign of Aurangzeb. Much of the fortifications have crumbled down, but the remains of a palace can still be seen. Some of the old bastions have been repaired and the main area of the fort has been converted into a public park.

The history of **Achalpur**, formerly known as Ellichpur, could well be said to be the history of Vidarbha (Berar) itself. Nawab Sultan Khan, the first of his dynasty, built the fort at Sultanapura in Achalpur on the south the bank of the Sarpan river in about 1754 AD. Much of the part of the fort is now in completely dilapidated condition. The city was fortified by Sultan Khan’s son Ismail Khan by a huge and solid rampart wall of masonry with four gates. Most of the fortifications and the gates are still intact.

22. Ahmadnagar Fort

One of the most well planned and strongly built, the Ahmadnagar land-fort is situated in the centre of the cantonment in the eastern part of the city. Oval in shape, the fort is about 1.70 km in circumference and is strengthened by 24 bastions. It is surrounded by a moat, now dry, about 30 metres wide and 4 to 6 metres deep, and beyond it there is a wooded glaxis. The massive curtain wall, built of cut stone masonry, rises above 25 metres from the bottom of the ditch. The two entrances to the fort could be reached only after crossing the moat over the suspension drawn bridges. Inside the fort there are some old and new buildings, fairly in good condition. Presently the fort is under Indian military command .

The Ahmadnagar fort was built by Husain Nizam Shah in 1559 AD. The fort was besieged by the vast Mughal army in 1596 AD, but the garrison led by Chandbibī valiantly defied the attack for four months and the Mughals had to beat a retreat. In the next attack in 1600 AD, the fort was captured by Akbar. It remained with the Mughals till 1759 AD, when it was sold to Sadashiv Bhau, the cousin of the third Peshwa. In 1797 AD, the fort was assigned to Daulatrao Shinde, from whom it was captured by General Wellesley in August, 1803. Finally, under the Treaty of Pune (June, 1817 AD) the fort was handed over to the British by Bajirav Peshwa II.

The Ahmadnagar fort was often used as a royal prison, both by the Marathas and the British. Nana Phadnis, who was instrumental in imprisoning many Maratha noblemen in this fort was himself locked up in the fort by Daulatrao Shinde. During the Quit India Movement of 1942, the entire Congress Working Committee was detained here. Pt. Jawaharlal Nehru wrote his famous work *Discovery of India* while in confinement at the Ahmadnagar fort.

23. Mahur Fort

Mahur village, also called Mahor, is 40 kms north-west of Kinwat town in Nanded district in the Marathawada division of Maharashtra. Earlier Mahur was a big city and a Suba of southern Berar. Situated on an eastern branch of Sahyadri mountains, the hillfort here is very old and exists at least from the time of the Yadavas. It was subsequently occupied by many powers — the Gonds, the Bahamanis, the Adilshahi and the Nizamshahi rulers and finally the Mughals and their vassals.

The fort on its three sides is girded by the Painganga river.

The fort, built on top of two adjoining hills, was protected by walls, ramparts and bastions. It had two main gateways — one on the southern side and the other on the northern side. The northern gate is still in a reasonably good condition, and so is its southern rampart nearly five metres wide. The fort had a palace, a mosque, a granary, an armoury, etc., now all in ruins. At the centre of the fort, there is a big tank call *Ijalatalav*.

Being situated on the main route from the north to the Deccan, Mahur has a long history. There is evidence to show that Mahur, ancient Matapur, was an important place at the time of the Satavahanas and the Rashtrakutas. The Renuka temple on an adjoining hill was built by the Yadavas. After remaining with the Gond rulers for some time, Mahur passed on to the Bahamanis in the 15th century and was made a Suba. In the 16th century, Mahur, being strategically placed at their centre, faced a lot of fire from the infighting between the Nizamshahi, Adilshahi and Imadshahi rulers. Then in the early 17th century, Mahur became a part of the Mughal empire and came to be ruled by their Subedars. When Shahjahan rebelled against his father Jahangir, he took refuge in the Mahur fort along with his wife and children, including 6 years old Aurangzeb.

About 2 kms from Mahur bus-stand, there are two Elephanta type (situated on an island near Mumbai) rock-cut caves of the Rashtrakuta period.

24. Pauni and Nagardhan Forts

Pauni, in Bhandara district, is 82 kms south-east of Nagpur. The present town, about three kms south-west of the Wainganga river, is engirdled by medieval fortifications embellished by imposing gateways, of which those situated to the west are almost intact. The majestic fortifications, which at some places are extant to a height of about 20 metres, were encircled by a moat of about 20 metres in width. The ancient moat has now turned into a small seasonal lake and is called *Balasamudra*. The fort was constructed by the Gond ruler Bakht Buland in the early 18th century and was taken over by Raghuji Bhosale I around 1740 AD.

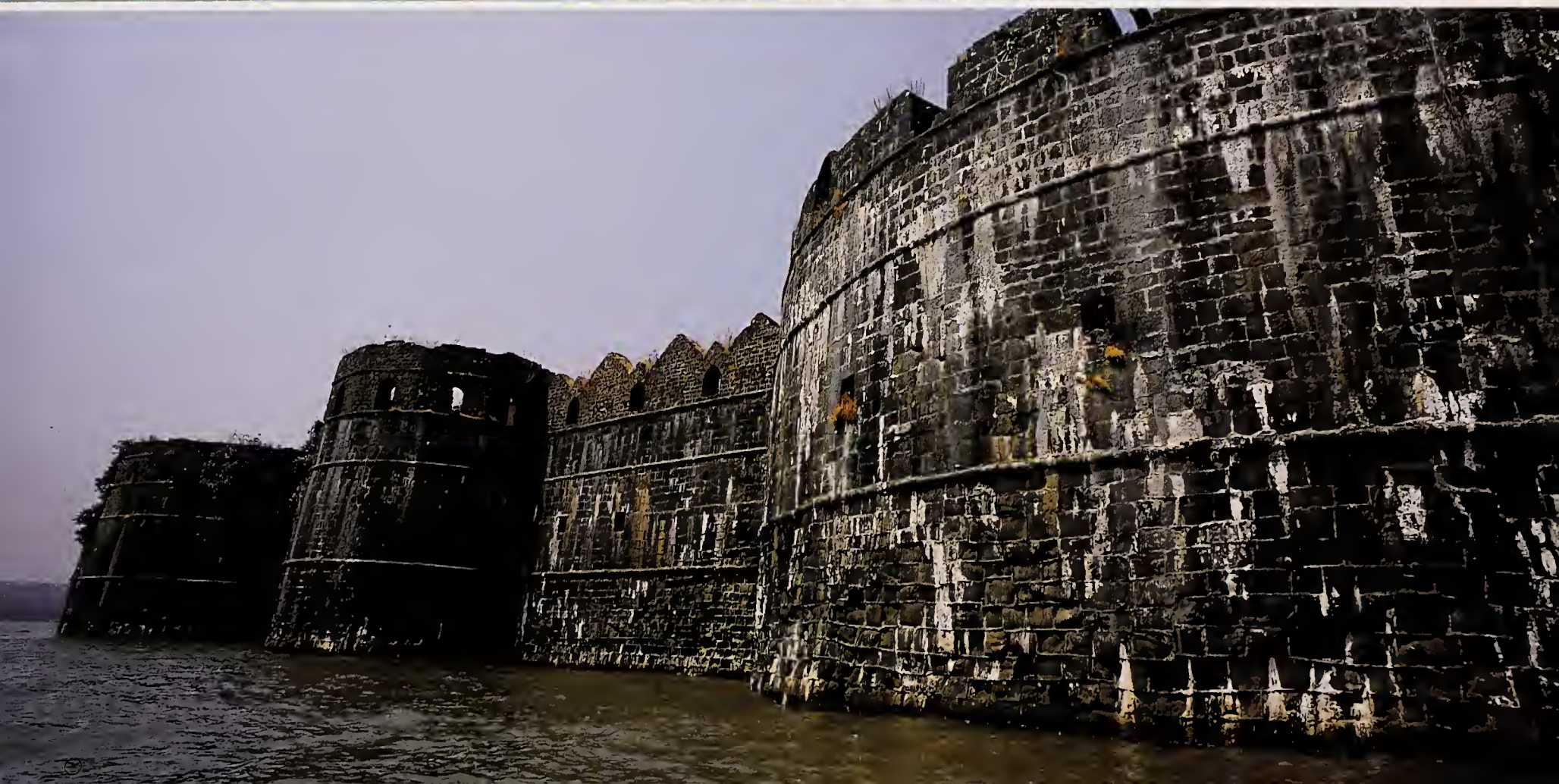
Pauni, an ancient place, has yielded the relics of one of the greatest Stupas of India and definite evidence of a flourishing Buddhist establishment. The Pauni rampart has yielded the copper plate grant of Pravarasena II of the Vakatakas who ruled over this region. So, it is possible that the clay core of the rampart goes back to a period much earlier than the medieval.

Nagardhan, ancient Nandivardhan, the first capital of the Vakatakas, is 34 kms northeast of Nagpur and about 5 kms south of Ramtek, famous for its fortified hill temple.

The present land fort at Nagardhan, probably built by Raghuji Bhosale I around 1740 AD, must have served the purpose of guarding the eastern approaches to Nagpur. Square in shape, it has an outer rampart with bastions and had an inner wall surrounding the buildings. The main gate, still in good condition, is on the north-west side. In the fort there is a temple below the ground level and the idol is placed on a ledge of a well like structure.

Not far away from the present fort there is a place where big sized bricks of ancient periods are often discovered. This is said to be a site of the capital-cum-fort of the Vakatakas.

Text : Gunakar Muley



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

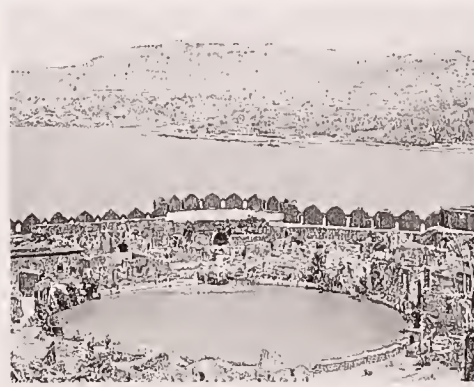
1. मुरुड़-जंजीरा जलदुर्ग

भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक, यह समुद्री किला मुंबई से 165 कि.मी. दक्षिण में मुरुड़ बंदरगाह के पास है। राजापुरी गांव की जेटी से नाव लेकर किले पर जाना पड़ता है। एक अंडाकार चट्टान पर स्थापित इस जलदुर्ग का मुख्य द्वार, जो पूर्व दिशा में राजापुरी की ओर खुलता है, दो बुर्जों के बीच में है और एकदम नजदीक पहुंचने पर ही दिखाई देता है। खुले समुद्र की ओर से आपात स्थिति में बाहर निकलने के लिए किले के पिछवाड़े में भी एक छोटा दरवाजा है। किले में 19 गोलाकार बुर्ज हैं, जो अभी भी अच्छी हालत में हैं। किले के प्राकार और बुर्जों पर देशी और विदेशी बनावट की जंग लगी अनेक तोपें आज भी देखी जा सकती हैं। जंजीरा अब खंडहर बन गया है, परंतु इसके वैभव के दिनों में यहां सभी सुविधाएं मुहैया थीं — महल, मकान, मस्जिद, मीठे पानी का एक बड़ा तालाब, आदि। किले के मुख्य द्वार के दोनों ओर की दीवारों पर पंजों में हाथी पकड़े हुए शार्दूल (बाघ) की शिल्पाकृति उकेरी हुई है। इस तरह की शिल्पाकृति, जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है, महाराष्ट्र के अनेक किलों के दरवाजों पर देखने को मिलती है।

पता चलता है कि पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में कोळी सरदार रामाऊ ने इस द्वीप पर लकड़ी का एक किला बनाया था। फिर अहमदनगर के निजामशाह के एक सेनापति पीरखान ने इस पर अधिकार करके यहां एक मजबूत किला बनाया और इसे 'जंजीरा मेहरूबा' नाम दिया। अरबी के इस जंजीरा (द्वीप) शब्द से ही 'जंजीरा' शब्द बना है। 1617 ई. में निजामशाह ने यह किला अपने सिद्दी वजीर मलिक अंबर को सौंपा। तब से सिद्दी इसके मालिक बन गए ('सिद्दी' या 'हब्शी' भारत में आए अबीसिनिया के साहसी सिपाहियों द्वारा अपनाई गई उपाधि थी)। वे कभी बीजापुर की आदिलशाही के साथ होते, तो कभी मुगलों के साथ। मगर मराठों के साथ उनकी हमेशा दुश्मनी रही। शिवाजी ने जंजीरा लेने की कई बार कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। संभाजी भी असफल रहा तो उसने जंजीरा से 9 कि.मी. उत्तर में एक द्वीप पर एक किला बनवाया, जिसे 'कांसा' या 'पद्मदुर्ग' के नाम से जाना जाता है। 1947 ई. में देश के आजाद होने तक जंजीरा में सिद्दी नवाबों का राज्य कायम रहा। मुरुड़ के नजदीक उनका महल आज भी मौजूद है।

चित्र: दक्षिण की ओर से जंजीरा जलदुर्ग का दूरदृश्य (ऊपर), और किले के भीतर मीठे पानी का विशाल ताल (आंतरचित्र)।

पूर्व की ओर से जंजीरा किले का एक नजदीकी दृश्य (नीचे)। समुद्र के पानी ने दीवार के जलस्तर वाले पत्थरों को कुछ खोखला कर दिया है।



1. Murud-Janjira Fort

Situated on a rock of oval shape near the port town of Murud, 165 kms south of Mumbai, Janjira is one of the strongest marine forts of India (the word 'Janjira' is a corruption of the Arabic word *jazira* for island). The fort is approached by sailboats from Rajapuri jetty. The main gate of the fort faces Rajapuri on the shore and can be seen only when one is quite close to it. It has a small postern gate towards the open sea for escape. The fort has 19 rounded bastions, still intact. There are many canons of native and European make rusting on the bastions. Now in ruins, the fort in its heyday had all necessary facilities, e.g., palaces, quarters for officers, mosque, a big fresh water tank, etc. On the outer wall flanking the main gate, there is a sculpture depicting a tiger-like beast clasping elephants in its claws. This sculpture, its meaning difficult to interpret, appears on many fort-gates of Maharashtra.

Originally the fort was a small wooden structure built by a Koli chief in the late 15th century. It was captured by Pir Khan, a general of Nizamshah of Ahmednagar. Later the fort was strengthened by Malik Ambar, the Abyssinian Siddi regent of Ahmednagar kings. From then onward Siddis became independent, owing allegiance to Adilshah and the Mughals as dictated by the times. Despite their repeated attempts, the Portuguese, the British and the Marathas failed to subdue the Siddi power. Shivaji's all attempts to capture Janjira fort failed due to one reason or the other. When Sambhaji also failed, he built another island fort, known as Kansa or Padmadurg, just 9 kms north of Janjira. The Janjira state came to an end after 1947. The palace of the Nawabs of Janjira at Murud is still in good shape.

Pictures : A distant view of Janjira from the southern side (above), and the huge sweet water tank inside the fort (inset). A close view of the eastern side of the island fort (below). The sea water has scooped away some portions of the stone wall near the water line.



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

2. रायगढ़ किला

रायगढ़ शिवाजी की राजधानी थी। इसी गिरिदुर्ग पर 1674 ई. में उनका राज्याभिषेक हुआ था और यहीं पर 1680 ई. में उनकी मृत्यु हुई। रायगढ़ किला सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिस फानाकार पहाड़ी चट्टान पर स्थित है, उसे एक गहरी घाटी ने सह्याद्री पर्वत-शृंखला की मुख्य श्रेणी से अलग कर रखा है और यह तीन दिशाओं से अगम्य है। रायगढ़, मुंबई से 210 कि.मी. दक्षिण में और महाड़ से 27 कि.मी. उत्तर में है।

रायगढ़ पहाड़ी के ऊपरी पठार का क्षेत्रफल 5.12 वर्ग कि.मी. है, और उसके तीन प्रमुख स्कंध हैं – पश्चिम में हिरकणी, उत्तर में टकमक और पूर्व में भवानी। रायगढ़ के लिए केवल एक ही प्रवेश मार्ग है, जो शिवाजी की रणनीति : “मित्र के लिए किले में प्रवेश आसान होना चाहिए, मगर शत्रु के लिए असंभव” को चरितार्थ करता है। किले की तलहटी के पाचाड़ गांव में शिवाजी की मां जीजाबाई की समाधि है। वहां से दो कि.मी. दूर चित दरवाजे तक पक्का रास्ता है। वहां से लंबी चढ़ाई के बाद महादरवाजा आता है, जिसके दोनों ओर दो विशाल बुर्ज और परकोटे की दीवार हैं।

ऊपरी पठार पर कई कुडों, जलाशयों और बहुत सी इमारतों के अवशेष हैं। गंगासागर तालाब के पीछे मुस्लिम शैली की दो ऊंची मीनारें हैं। मीनारों के पीछे बालेकिल्ला है, जहां पालकी दरवाजे से जाना पड़ता है। आगे जाने पर दाईं ओर राज-परिवार की महिलाओं के लिए बने मकानों के और बाईं ओर शिवाजी के राज-दरबार के अवशेष हैं। वहीं के थोड़े ऊंचे मध्य स्थान पर शिवाजी का सिंहासन रहा है। आगे उत्तर की ओर दो पंक्तियों में बाजार का स्थान है। उसके आगे चारों ओर दीवारों से घिरा जगदीश्वर मंदिर और उसके पास शिवाजी की समाधि है। पास ही उनके प्यारे कुत्ते वाघ्या की समाधि है।

रायगढ़ का प्राचीन इतिहास अस्पष्ट है। पहले इसका नाम रायरी था। पता चलता है कि 12वीं सदी में यहां शिर्के-पालेगार परिवार का निवास था। कई सत्ताओं के अधिकार से गुजरने के बाद शिवाजी ने 1656 ई. में रायगढ़ को चंद्रराव मोरे से छीन लिया। फिर शिवाजी ने रायरी को अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया और इसे रायगढ़ नाम दिया। विशाल पैमाने के निर्माण-कार्य की जिम्मेदारी आबाजी सोनदेव और हिरोजी इंदुलकर को सौंपी गई। अपने वैभव के दिनों में रायगढ़ में 300 से भी अधिक मकान और स्मारक थे। शिवाजी के बाद यह किला 1689 ई. तक संभाजी के पास रहा और फिर यह मुगलों के हाथ में चला गया। 1735 ई. में इस पर पुनः मराठों का कब्जा हुआ, परंतु अंत में 1818 ई. में यह अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

चित्र: तलहटी के पाचाड़ गांव से रायगढ़ का दक्षिणी-पश्चिमी दृश्य (ऊपर), और किले की इमारतों के अवशेष (आंतरचित्र)। बाहर कोनों वाली दो मंजिली मीनारें (नीचे)।



2. Raigarh Fort

Raigarh was Shivaji's capital, the hillfort where he was crowned (1674 AD) and where he died (1680 AD). Strategically situated on an irregular wedge-shaped mass of rock, detached from the main body of Sahyadri mountains by a deep valley and inaccessible from three sides, Raigarh is 210 kms south of Mumbai and 27 kms north of Mahad. The fort's 5.12 sq. kms hill-top plateau has three main points : Hirakani in the west, Takamak in the north and Bhavani in the east. There is only one pathway to Raigarh, probably in keeping with Shivaji's strategy : “the fort's approach should be easy for friends and impossible for foes”. A motorable road leads to Chit Darwaja, about 2 kms from Pachad, the village at the base, where lies the *samadhi* of Jijabai, Shivaji's mother. A long climb from Pachad takes one to the Mahadarwaza, flanked by two massive bastions and a high curtain wall.

The top plateau is covered with a large number of remains of buildings and reservoirs. Behind the Ganga Sagar reservoir are two high towers, in Muslim style. Behind the towers is the Balekilla or citadel, entered by the Palakhi-darwaza. On way to the right are remains of chambers of women of Royal families and on the left those of the Darbar of Shivaji. On a low mound in the centre is the site of Shivaji's throne. Further north is the two-row market place, the Jagadishwar temple in an enclosure and the *samadhi* of Shivaji, and also that of his favourite dog, Waghya.

The history of Raigarh, earlier known as Rairi, is obscure. In the 12th century Rairi was a seat of the Shirke-palegar family. After changing several hands, it was captured by Shivaji from Chandrarao More in 1656 AD. Shivaji chose Rairi for his capital and renamed it as Raigarh. The gigantic construction work was entrusted to Abaji Sondev and Hiroji Indulkar. In its heyday Raigarh had more than 300 houses and structures. After Shivaji, the fort remained in the hands of Sambhaji till 1689 AD, when it was captured by the Mughals. Reverted to the Marathas in 1735 AD, Raigarh was surrendered to the British in 1818 AD.

Pictures : South-western view of Raigarh from Pachad, the base village (above), and remains of buildings in the fort (inset). The 12-sided two-storey towers (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

3. राजगढ़ किला

महाराष्ट्र के गिरिदुर्गों में राजगढ़ का अपना एक विशिष्ट स्थान है। दक्खन के किलों की वास्तु शैली की सभी प्रमुख विशेषताएं इस किले में मौजूद हैं। सह्याद्री पर्वत-शृंखला की मुरुम नामक एक शाखा-पहाड़ी पर स्थित राजगढ़, पुणे से करीब 35 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। समुद्र-तल से लगभग 1300 मीटर की ऊंचाई पर बसे राजगढ़ की तीन माचियां और एक बालेकिल्ला हैं। किले के चार प्रवेश-द्वारों के नाम हैं – गुंजण, पाली, आळु और कालेश्वरी या दिंडी। प्रथम दो दरवाजे पद्मावती माची पर पहुंचाते हैं, तीसरा दरवाजा संजीवनी माची पर और आखिरी दरवाजा सुवेला माची पर पहुंचाता है। राजगढ़ पंख फैलाए हुए आकाश में उड़ रहे एक पक्षी की तरह दिखाई देता है – पद्मावती और संजीवनी माचियां उसके दो पंखों की तरह हैं और बालेकिल्ला और सुवेला माची मानो उसका मुख्य शरीर है।

किले के चारों भागों में पुराने स्मारकों – निवास-स्थल, सदर यानी राजकीय कार्यालय, बाजार, धान्य-कोठार, बारुदखाना, मंदिर, आदि – के अवशेष पाए जाते हैं। किले पर तालाबों, कुंडों और कुओं के माध्यम से पर्याप्त पानी उपलब्ध था। पद्मावती माची पर पानी की बेहतर व्यवस्था थी, इसलिए किले की अधिकतर गतिविधियां वहीं पर केंद्रित थीं।

राजगढ़ किला, जिसका पुराना नाम मुरुमदेव था, पहले निजामशाही और आदिलशाही शासकों के अधिकार में रहा। 1648 ई. तक यह पक्के तौर पर शिवाजी के नियंत्रण में आ गया था और 1670 ई. तक उन्होंने यहां निर्माण-कार्य जारी रखा। उन्होंने इसे नया नाम दिया – राजगढ़। राज्याभिषेक (1674 ई.) के पहले लगभग पचीस वर्षों तक राजगढ़ किला शिवाजी की राजधानी रहा। अपने पचास वर्षों (18,306 दिनों) के अल्प जीवन के किलों पर बिताए गए कुल दिनों में से सबसे अधिक 2827 दिन शिवाजी ने राजगढ़ में गुजारे। मराठा काल की कई प्रमुख घटनाएं इस किले से जुड़ी हुई हैं। 1659 ई. में शिवाजी राजगढ़ से ही अफजल खान का मुकाबला करने गए थे। शिवाजी के आगरा के लिए रवाना होने और वहां से लौट आने की ऐतिहासिक घटनाएं यहां राजगढ़ में ही घटित हुईं। शिवाजी के दूसरे बेटे राजाराम का जन्म राजगढ़ में ही हुआ। 1665 ई. की पुरंदर की संधि के अंतर्गत शिवाजी ने 23 किले मुगल सत्ता को सौंप दिए थे, मगर राजगढ़ उन्होंने नहीं दिया ! पेशवा काल में राजगढ़ ने कोई महत्व की भूमिका अदा नहीं की। मुख्य कारण यह था कि तब तक राजनैतिक क्रियाकलाप गिरिदुर्गों से शहरों की ओर स्थानांतरित हो गए थे। राजगढ़ किला 1947 ई. तक भोर के सचिव परिवार के अधिकार में रहा।

चित्र: राजगढ़ का पाली दरवाजा (ऊपर), और दोहरी दीवार और बुर्जों से घिरी संजीवनी माची (नीचे)।



3. Rajgarh Fort

Rajgarh enjoys a unique position among the hillforts of Maharashtra. It possesses all the salient features of fort architecture which are peculiar to the Deccan region. Situated on one of the spurs of the Sahyadri mountains known as Murum hill, Rajgarh is about 35 kms south-west of Pune. The fort is at a height of approx. 1300 metres from sea-level and comprises three terraces (*machis*) and a citadel (*Balekilla*). There are four gates called Gunjavane, Pali, Alu and Kaleshwari or Dindi gate. The first two gates lead to the Padmavati *machi*, the third to the Sanjivani and the last to the Suvela *machi*. Rajgarh looks like a winged bird flying in the sky – the Padmavati and the Sanjivani *machis* forming its two wings and the *Balekilla* and the Suvela *machi* its main body.

All the four parts of the fort have remains of buildings which included residential quarters, *sadar* or state offices, bazar or business quarter, granary, armoury, temples, etc. The fort had ample supply of water through tanks, cisterns and wells. The water-supply being better on the Padmavati *machi*, it was a major centre of activity on the fort.

Rajgarh, formerly known as Murumdeo, was earlier held by the Nizamshahi and Adilshahi rulers. By 1648 AD, it was under the firm control of Shivaji, who gave it the new name Rajgarh, the king's fort.. Shivaji's construction activities here continued till 1670 AD. For nearly twenty five years Rajgarh was the pre-coronation capital of Shivaji. Out of Shivaji's short life of fifty years (18,306 days) his stay of 2827 days at Rajgarh was the longest. The fort witnessed a number of major political events of the Maratha period.

It was from Rajgarh that Shivaji went to meet Afzal Khan in 1659 AD. His departure to Agra and return from there, both these historic events took place at Rajgarh. Rajaram, Shivaji's second son, was born here. By the 'Treaty of Purandar' in 1665 AD, Shivaji ceded 23 forts to the Mughals, but not Rajgarh. During the Peshwa period Rajgarh did not play any significant part mainly due to the shifting of political activities from the hillforts to the cities. Rajgarh remained with the Sachiv family of Bhore till 1947 AD.

Pictures : The Pali gate of Rajgarh fort (above), and the Sanjivani *machi* girded by double walls and bastions (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

4. प्रतापगढ़ किला

शिवाजी द्वारा 1656-58 ई. में निर्मित प्रतापगढ़ गिरिदुर्ग, महाबलेश्वर से 24 कि.मी. पश्चिम में और पुणे से करीब 145 कि.मी. दक्षिण में है। कोयना नदी की घने जंगलों वाली घाटी के सिरे पर स्थित यह गोलाकार व सपाट उत्तुंग पहाड़ी, शिवाजी के पहले, 'भोरप्या' के नाम से जानी जाती थी। किले के निर्माण की जिम्मेदारी मोरोपंत पिंगळे और हिरोजी इंदुलकर को सौंपी गई थी। हिरोजी एक सुयोग्य स्थपति थे और मोरोपंत बाद में शिवाजी के पेशवा (प्रधान मंत्री) बने। किले की मुख्य विशेषता है: इसकी दोहरी तटबंदी और चारों ओर बनी दीवारें, जिनकी ऊंचाई स्थान-स्थान की प्राकृतिक स्थिति के अनुसार कम-ज्यादा रखी गई थी। बालेकिल्ला, यानी ऊपरी किला पहाड़ी के पश्चिमोत्तर शिखर पर बनाया गया और इसका विस्तार 180 वर्ग मीटर है। निचला किला दक्षिण-पूर्वी कगारों पर बना है और इसकी दीवारों तथा बाहर को निकले इसके स्कंधों पर मजबूत बुर्ज बनाए गए थे। अन्य कई स्मारकों के अलावा, निचले किले के पूर्वी भाग में शिवाजी का बनवाया भोसलों के कुल-देवता भवानी का मंदिर है। अब किले के काफी नजदीक तक पक्की सड़क पहुंचती है।

प्रतापगढ़ में घटित सबसे महत्वपूर्ण घटना थी – शिवाजी-अफजल खान प्रसंग। इसी किले के नीचे के एक स्थान पर 10 नवंबर, 1659 को शिवाजी ने बीजापुर की आदिलशाही के शक्तिशाली सिपहसालार अफजल खान पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की थी। यह घटना, जिसमें शिवाजी ने अफजल खान पर काबू पाकर उसे मार डाला, सर्वविदित है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि एक अत्यंत नाजुक स्थिति में शिवाजी ने तत्काल-बुद्धि का परिचय दिया, तो अफजल खान को अपने दुःसाहसी अतिविश्वास की भारी कीमत चुकानी पड़ी। किले के नीचे जिस जगह अफजल खान की मृत्यु हुई, वहां उसकी कब्र बनी हुई है। इस ऐतिहासिक घटना की तीन सौवीं जयंती की स्मृति में प्रतापगढ़ दुर्ग के सबसे ऊंचे स्थान पर 1959 ई. में शिवाजी की अश्वारोही प्रतिमा स्थापित की गई।

चित्र: दक्षिण-पूर्वी दिशा से प्रतापगढ़ का दूरदृश्य (ऊपर, बाएं)। दीवार और बुर्ज से घिरा किले का दक्षिण-पूर्वी स्कंध (ऊपर, दाएं)। किले का पुराना राजमार्ग, जिसे अब बंद कर दिया गया है (नीचे, बाएं)। किले की एक दीवार पर उत्कीर्ण शार्दूल का प्रतीक (नीचे, दाएं)।



4. Pratapgarh Fort

Pratapgarh, a very strong hillfort built by Shivaji in 1656-58 AD, is 24 kms west of Mahabaleshwar and about 145 kms south of Pune. Before Shivaji, the hill, known as Bhorapya, was a flat-topped high round rock at the head of the densely forested Koyana basin. The construction of the fort was entrusted to Moropant Pingale, who later became Shivaji's Peshwa, and Hiroji Indulkar, the architect. A special feature of the fort is its double line of fortification and walls on all sides, their heights varying according to the nature of the ground. The upper fort is built across the northern and western crest of the hill measuring about 180×180 sq. metres. The lower fort is built on the southern and the eastern terraces with walls and strong bastions at corners on projecting spurs. Apart from other monuments, there is on the eastern portion of the lower fort the temple of Bhavani, the family deity of the Bhosales, built by Shivaji. Today a motorable road takes the traveller quite close to the fort.

The most important event connected with Pratapgarh is the Shivaji-Afzal Khan episode. It was at the base of this fort that Shivaji, on 10th November 1659, scored a historic victory against the mighty Afzal Khan, commander of the Bijapur Adilshahi forces. The episode, in which Afzal Khan was overpowered and killed by Shivaji, is well known. In short, it can be said that in a very critical situation Shivaji showed the presence of mind and Afzal Khan paid the price for his rash overconfidence. Now there exists a grave at the place where Afzal Khan was killed. To commemorate the tricentenary of that historic event, an equestrian statue of Shivaji was installed at the top of the Pratapgarh fort in 1959 AD.

Pictures : A distant south-eastern view of Pratapgarh fort (above, left). The fort's south-eastern spur girded by a wall and a bastion (above, right). The fort's old royal gateway, now closed (below, left). The Tiger emblem carved on a wall of the fort (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

5. लोहगढ़-विसापुर किला

लोहगढ़ किला मुंबई-पुणे रेलमार्ग के मळवली स्टेशन से 7 कि.मी. दक्षिण में है। सह्याद्री पर्वत-शृंखला की एक शाखा पहाड़ी पर स्थित लोहगढ़ किला इंद्रायणी और पवना नदियों की घाटियों को विभाजित करता है। लोहगढ़ के नजदीक, इसकी पूर्व दिशा में, विसापुर नामक एक किला और है। इन दोनों किलों के बीच के निचले भाग में लोहगढ़वाड़ी गांव है, जहां से लोहगढ़ को ऊपर रास्ता जाता है। उत्तर की ओर से गांव की दिशा में चढ़ते समय बाईं ओर भाजा की प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएं दिखाई देती हैं। लोहगढ़ के चार प्रमुख प्रवेश-द्वारों की व्यूह-रचना बड़ी ही अनोखी है। उत्तर पेशवाकाल में नाना फडणीस (1742-1800 ई.) ने किले में कुछ इमारतें, कुंड और एक बावली बनवाई। ऊपर एक छोटा मंदिर और मुसलमान पीर की कब्र भी है। किले की पश्चिम दिशा में तटबंद-युक्त एक लंबा और संकीर्ण पर्वत-स्कंध है, जिसे उसके प्राकृतिक आकार के कारण, मराठी में *विंचूकाटा* (बिच्छू का डंक) कहते हैं।

विसापुर किला लोहगढ़ से बड़ा और उससे कुछ अधिक ऊंचाई पर स्थित है। अब लगभग खंडहर बने इस किले का इतिहास लोहगढ़ के इतिहास से जुड़ा हुआ है। विसापुर की ऊंचाई का लाभ उठाकर अंग्रेजों की सेना ने 1818 ई. में अपनी तोपें इस किले पर स्थापित कर दीं और वहां से लोहगढ़ पर बमबारी की। परिणामतः मराठों को लोहगढ़ छोड़ देना पड़ा। लोहगढ़ का इतिहास काफी लंबा है। इस पर कई राजवंशों का कब्जा रहा : सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव, बहामनी, निजामशाही, मुगल और मराठा। शिवाजी ने 1648 ई. में इस किले पर अधिकार कर लिया था, परंतु पुरंदर की संधि के अंतर्गत उन्हें इसे 1665 ई. में मुगलों को सौंप देना पड़ा। शिवाजी ने 1670 ई. में पुनः इसे जीत लिया और वे यहां अपना राजकोष रखने लगे। उसके बाद यह किला अधिकतर मराठों के ही कब्जे में रहा। अंत में 1818 ई. में अंग्रेजों ने लोहगढ़-विसापुर पर अधिकार कर लिया।

चित्र: लोहगढ़ की चढ़ाई के रास्ते का एक मुख्य दरवाजा (ऊपर, बाएं), और उस दरवाजे तक ले जाने वाली सीढ़ियां (आंतरचित्र)। किले की ऊंचाई से चढ़ाई के मार्ग का और पीछे की पवना नदी का दूरदृश्य (ऊपर, दाएं)। लोहगढ़ किले के ऊपर से इसके प्रवेश-द्वारों की अनोखी व्यूह-रचना का भव्य दृश्य (नीचे)।



5. Lohagarh-Visapur Fort

Lohagarh fort is 7 kms south of Malavali station on the Pune-Mumbai railway line. Situated on a side range of Sahyadri mountains, it divides the basins of Indrayani and Pavana rivers. Close to Lohagarh, on its eastern side, there is another fort, called Visapur. The approach to Lohagarh is from the village Lohagadwadi, situated in the depression between Lohagarh and Visapur. Climbing from the north towards the village, one can see on the left side the famous Buddhist caves of Bhaja. The four large gates of Lohagarh are very intricately arranged and are still intact. In the later Peshwa period, Nana Fadanis (1742-1800 AD) built several structures in the fort including a big tank and a step-well (*bawali*). There is also a small temple and grave of a muslim *pir*. On the west side of the fort there is a long and narrow wall-like fortified spur called *Vinchukata* in Marathi (scorpion sting) because of its natural shape.

Visapur Fort is larger and also higher than Lohagarh fort. Now in ruins, its history is closely linked with that of Lohagarh. Making use of its higher position, the British troops in 1818 AD set up their canons on Visapur and bombarded Lohagarh, forcing the Marathas to leave the fort. Lohagarh has a long history. It was occupied by many dynasties: Satavahanas, Chalukyas, Rashtrakutas, Yadavas, Bahamanis, Nizamshahis, Mughals and Marathas. Lohagarh was captured by Shivaji in 1648 AD, but by the Treaty of Purandar he had to surrender it to the Mughals in 1665 AD. It was recaptured by Shivaji in 1670 AD and was used for keeping the treasury. Then on, the fort remained with the Marathas. Ultimately Lohagarh-Visapur was taken over by the British in 1818 AD.

Pictures : The steep approach to Lohagarh (above, left) and steps leading to one of its main gates (inset). Distant view of the pathways leading to the top of the fort and the Pavana river in the background (above, right). The intricate pattern of the main doorways of Lohagarh, as seen from the top of the fort (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

6. सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग, जो कुरटे नामक एक चट्टानी द्वीप पर बना हुआ है, मालवण के समुद्रतट से करीब एक कि.मी. दूर है। मालवण शहर, मुंबई से 510 कि.मी. दक्षिण में और गोवा से 130 कि.मी. उत्तर में है। जब जंजीरा जलदुर्ग को जीतने के शिवाजी के सारे प्रयत्न विफल रहे, तो उन्होंने 1664-67 ई. में सिंधुदुर्ग का निर्माण करवाया। यह किला शिवाजी के एक योग्य स्थपति हिरोजी इंदुलकर के निर्देशन में बना। इसके निर्माण के लिए शिवाजी ने गोवा से 100 पुर्तगाली विशेषज्ञों को बुलाया था। ऐसी मान्यता है कि इस किले को बनाने में 3000 कारीगरों ने तीन साल तक अहोरात्र काम किया। सूरत से लूटकर लाए धन को इस किले के निर्माण में लगाया गया था।

सिंधुदुर्ग 48 एकड़ में फैला हुआ है और आज भी काफी अच्छी हालत में है। इसकी टेढ़ी-मेढ़ी दीवार 9 मीटर ऊंची और 3 मीटर चौड़ी है, और इसमें 42 बुर्ज हैं। विशाल आकार के पत्थरों के अलावा, दीवार और बुर्जों के निर्माण में 2000 खंडी (72,576 किलोग्राम) लोहे का इस्तेमाल हुआ है। विशेष बात यह है कि इसकी नींव के पत्थरों की जुड़ाई में जगह-जगह पिघले सीसे का उपयोग किया गया।

मालवण के घाट से नौका लेकर धोनतारा और पद्मगढ़ नामक दो छोटे द्वीपों के बीच से एक तंग और उथले जलमार्ग द्वारा किले तक पहुंचना होता है। दो बुर्जों के बीच का प्रवेश-द्वार शहर की दिशा में है। प्रवेश-द्वार के नजदीक, प्राकार पर बने हुए दो छोटे गुम्बजों के अंदर चूना-मसाले में शिवाजी के पैर और पंजे के छाप सुरक्षित हैं। किले में शिवाजी का एक मंदिर भी है, जो देश में अपनी तरह का अकेला है। उसमें शिवाजी की जो मूर्ति है वह बिना दाढ़ी की है। किले में कुछ मंदिर, कुंड और तीन कुएं हैं। करीब बीस हिन्दु-मुस्लिम वंशानुगत परिवार आज भी किले में बसते हैं। सिंधुदुर्ग और समुद्रतट के बीच में पद्मगढ़ नामक एक छोटा जलदुर्ग बनाया गया था, जो अब खंडहर बन गया है। पद्मगढ़ एक प्रकार से सिंधुदुर्ग का प्रहरी था और वहां जहाज भी बनते थे।

शिवाजी के बाद सिंधुदुर्ग राजाराम-ताराबाई, आंग्रे, पेशवा और कोल्हापुर के भोसलों के अधिकार में रहा। 1765 ई. में थोड़े समय के लिए सिंधुदुर्ग पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया था और तब उन्होंने इसे “फोर्ट आगस्टस” का नाम दिया था। 1818 ई. में जब इस किले पर अंग्रेजों का स्थायी कब्जा हो गया, तो उन्होंने इसके रक्षा-साधनों को नष्ट कर दिया।

चित्र: पूर्वोत्तर दिशा से सिंधुदुर्ग का दृश्य; मुख्य दरवाजा दो बुर्जों के अंदर छिपा हुआ है (ऊपर)। पश्चिमी दीवार के बाहर ‘रानीची वेला’ नामक एक छोटा सा बालू-तट है, जहां रानी ताराबाई समुद्र-स्नान करती थीं (नीचे)।



6. Sindhudurg Fort

Sindhudurg fort stands on a rocky island, known as Kurte, barely a km. from the Malavan coast. Malavan is 510 kms south of Mumbai and 130 kms north of Goa. Sindhudurg was built in 1664-67 AD by Shivaji when all his attempts to take the island fort of Janjira proved futile. The construction was done under the supervision of Hiroji Indulkar, an able architect. Shivaji had invited 100 Portuguese experts from Goa for the construction of the fort. It is also recorded that 3000 workers were employed round the clock for three years to build Sindhudurg. It was the booty from the sack of Surat that went into the building of Sindhudurg.

One of the best preserved forts of the Marathas, the 48 acre Sindhudurg fort has a four kms long zig-zag line of 9 metres high and 3 metres wide rampart with 42 bastions. Apart from the huge stones, the building material involved 2000 *khandis* (72,576 kgs) of iron for erecting the massive curtain wall and bastions. A notable feature is that the foundation stones were laid down firmly in molten lead.

The fort is approachable from the Malavan pier by a boat through a narrow navigable channel between two smaller islands of Dhontara and Padmagad. The main gate, flanked by massive bastions, faces the city. On the parapet, close to the entrance, under two small domes Shivaji's palm and footprint in dry lime are preserved. Also, in the fort there is the Shivaji temple - the only one of its kind in the country - where the image of Shivaji is without a beard! Inside the fort there are some temples, tanks and three wells. It also houses some twenty Hindu-Muslim hereditary families. On a rocky island between Sindhudurg and the coast stood the small fort of Padmagad, now in ruins. It acted as a screen for Sindhudurg and was also used for ship-building.

After Shivaji, Sindhudurg passed through the hands of Rajaram-Tarabai, Angres, Peshwa and the Bhosales of Kolhapur. It was briefly captured by the British in 1765 AD and was renamed by them as 'Fort Augustus'. Later in 1818 AD, the British dismantled the fort's defence structures.

Pictures : Sindhudurg from the eastern side; the main gate is hidden behind the two bastions (above). Outside the southern wall there is a small beach, called *Ranichi Vela* in Marathi, where Tarabai used to enjoy her sea-bath (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

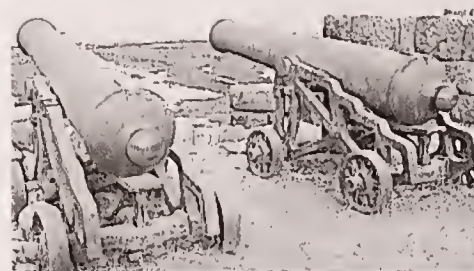
7. कुलाबा-अलीबाग जलदुर्ग

कुलाबा किला मुंबई से 112 कि.मी. दक्षिण में स्थित अलीबाग शहर के समीप एक चट्टानी द्वीप पर बना हुआ है। इसका विस्तार उत्तर-दक्षिण में 275 मीटर और पूर्व-पश्चिम में 100 मीटर है। भाटे के समय इस किले तक पैदल पहुंचा जा सकता है। किले की दीवार अलग-अलग जगह 6 से 8 मीटर तक ऊंची है। इसके चौड़े परकोटे में 17 बुर्ज हैं। पूर्वोत्तर कोने में बना इसका मुख्य प्रवेश-द्वार, जिसे 'महादरवाजा' कहते हैं, शहर की दिशा में खुलता है। सागौन की लकड़ी से बने इस दरवाजे में लोहे की मजबूत कोणकीलें ठुकी हुई थीं। किले की दक्षिण दिशा में भी एक छोटा दरवाजा है। किले की दीवार में चूने के गारे का इस्तेमाल नहीं हुआ है। दुर्ग के भीतर मीठे पानी की टंकी, एक कुआं और अनेक मंदिर हैं। यहां स्थित गणपति मंदिर अब भी अच्छी स्थिति में है। किले के प्राकार के उत्तरी कोने में खुले समुद्र की ओर मुंह किए आज भी दो अंग्रेजी तोपें देखी जा सकती हैं। दुर्ग के बाहर दक्षिण दिशा में नौकाओं की मरम्मत करने के लिए एक गोदी बनी हुई थी, जिसका एक भाग भाटे के समय आज भी नजर आ जाता है।

शिवाजी द्वारा निर्मित कुलाबा ही अंतिम किला था। उनकी मृत्यु अप्रैल, 1680 में हुई। कुलाबा किले का निर्माण-कार्य उसके कुछ ही समय पहले पूर्ण हुआ था। किले का महत्व आंग्रे परिवार के समय में बढ़ा और तब यह मराठा नौसेना का प्रमुख गढ़ बन गया। इस किले में आंग्रे परिवार के लिए महल, उनके अधिकारियों के लिए मकान, शस्त्रागार, धान्य-कोठार आदि की सुविधाएं थीं। अब पुरानी कोई भी इमारत बची नहीं है। कुलाबा पर आंग्रे परिवार का शासन 1840 ई. में समाप्त हो गया। वे 'कुलाबकर' के नाम से भी जाने जाते थे।

मुख्य किले के पूर्वोत्तर में, थोड़े अंतर पर, एक गढ़ी-नुमा छोटा समुद्री किला है, जो सरजाकोट कहलाता है। उसे कुलाबा का 18वां बुर्ज भी कहा जाता है। सामने अलीबाग के तट पर बने हीराकोट से की जाने वाली बमबारी से कुलाबा किले की रक्षा के लिए सरजाकोट का निर्माण हुआ था।

चित्र: कुलाबा किले का 'महादरवाजा' (ऊपर)। कुलाबा किले का दक्षिणी द्वार (नीचे), और प्राकार के उत्तरी कोने पर स्थित दो अंग्रेजी तोपें (आंतरचित्र)।



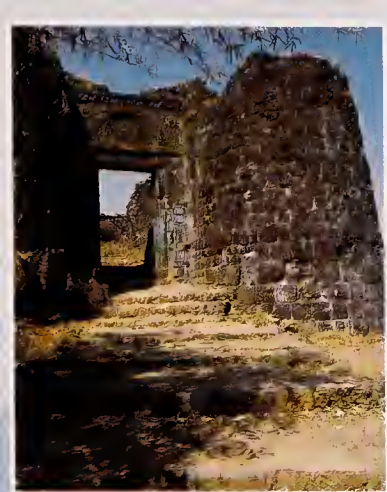
7. Kulaba-Alibag Fort

Built on a rock island near Alibag town, 112 kms south of Mumbai, the Kulaba fort is an imposing structure, measuring roughly 275 metres from north to south and 100 metres from east to west. At low tide one can walk across to the fort. The height of the fort-wall varies from 6 to 8 metres at different places. It has a wide parapet with 17 bastions. The main gateway of the fort, called *Maha Darwaja*, is in the north-east corner and faces the city. The teak-door had strong iron-spikes driven in them. There is also a small gate on its southern side. The masonry of the fort is without lime mortar. Inside the fort there is a fresh water tank, a well and several temples, the *Ganapati* temple being still in good condition. In the northern corner of the parapet, there still stand two English canons facing the open sea. To the south of the fort was a ship-dock, visible even now at low-tide.

The Kulaba fort was Shivaji's last construction and was completed almost on the eve of his death in April, 1680. It attained importance under the Angres and was the main base of the Maratha navy. It had palaces for the members of the Angre family, houses for their officers and storing arrangements for grain and other necessities. None of the buildings have survived. The rule of the Angres, who were also known as *Kulabkar*, came to an end in 1840 AD.

To the north of the main fort there is a small fort-like structure called Sarjyakot, sometimes referred to as the 18th bastion of Kulaba. Sarjyakot was constructed to answer the artillery of Hirakot situated on the Alibag shore.

Pictures : The *Maha Darwaja* of the Kulaba fort (above). The southern gate of the fort (below), and the two English canons on the parapet facing the open sea (inset).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

8. कोंडाणा-सिंहगढ़ दुर्ग

पुणे से करीब 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित सिंहगढ़, जिसके साथ अनेक शौर्यगाथाएं जुड़ी हुई हैं, एक गिरिदुर्ग है। इसका प्राचीन नाम कोंडाणा या कोंढाणा था। सह्याद्री पर्वत शृंखला की एक शाखा, भूलेश्वर पहाड़ी की एक पृथक् चट्टान पर स्थित इस त्रिभुजाकार किले की समुद्र-तल से ऊंचाई 1380 मीटर है। खड़ी प्राकृतिक ढाल से सुरक्षित होने के कारण सिंहगढ़ की केवल कुछ ही जगहों पर दीवारों और बुर्जों का निर्माण किया गया है। इसके दो मुख्य दरवाजे हैं - दक्षिण-पूर्व में कल्याण दरवाजा और उत्तर-पूर्व में पुणे दरवाजा।

सिंहगढ़ का इतिहास काफी लंबा है। 1328 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक ने यहां के कोली सरदार नाग नाईक को हराकर इस किले पर कब्जा कर लिया। तीन सदियों बाद शिवाजी ने यहां के किलेदार को रिश्वत देकर इसे अपने अधिकार में ले लिया, परंतु पुरंदर की संधि (1665 ई.) के तहत यह मुगलों के कब्जे में चला गया। 1670 ई. में शिवाजी के एक सरदार तानाजी मालुसरे ने अदम्य साहस और शौर्य का परिचय देकर सेना-सहित किले में प्रवेश किया और अपने प्राणों की आहुति देकर अंत में जीत हासिल की। शिवाजी ने समाचार सुना, तो उनके दुःख भरे उद्गार थे : "गढ़ मिला, मगर सिंह चला गया !" तब से किले को नया नाम मिला - सिंहगढ़। अंत में 1818 ई. में अंग्रेजों ने सिंहगढ़ को पेशवा से छीन लिया। तब बमबारी में पुराने लगभग सभी स्मारक नष्ट हो गए। कायम रहे - केवल पुराने प्रवेश-द्वार और भग्न प्राचीर।

किले का ऊपरी हिस्सा ऊंचा-नीचा है और वहां बहुत कम इमारतें बची हुई हैं। जहां-तहां मंदिरों, मकानों और मीनारों के भग्नावशेष बिखरे हुए हैं। महाखड्ड की तरफ वीर तानाजी की समाधि है। शिवाजी के पुत्र राजाराम (मृत्यु 1700 ई.) की समाधि भी यहीं पर है। यहां कुछ बंगले भी हैं, जिनमें एक लोकमान्य तिलक का है।

मराठा शासनकाल में सिंहगढ़ ने पुणे के प्रहरी की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आज राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (खड़कवासला) के छात्र-सैनिकों को सिंहगढ़ की छत्रछाया में अभ्यास करते देखा जा सकता है।

चित्र: सिंहगढ़ और उसके कल्याण प्रवेश-द्वार के दो बुर्जों का दूरदृश्य, और पुणे दरवाजा (आंतरचित्र)।



8. Kondana-Sinhagarh Fort

Sinhagarh fort, whose earlier name was Kondana or Kondhana, stands 20 kms south-west of Pune. Perched on an isolated cliff of the Bhuleswar range of the Sahyadri mountains, its height above sea-level is 1380 metres. Given natural protection by its very steep slopes, the walls and bastions were constructed at only key places. It has two gates - the *Kalyan Darwaza* in the south-east and the *Pune Darwaza* in the north-east.

Sinhagarh has a long history. It was captured from the Koli tribal chieftain, Nag Naik, by Muhammad bin Tughlaq in 1328 AD. Three centuries later, Shivaji wrested it away by bribing the commander, but by the Treaty of Purandar (1665 AD) had to cede the fort to the Mughals. Sinhagarh was the scene of one of the most daring exploits in Maratha history when, in 1670 AD, it was recaptured by Shivaji's forces under Tanaji Malusare, who laid down his life in the battle. On his death, a saddened Shivaji said, "The fort is won, but the lion is gone !" Whereupon the fort got its new name : *Sinha (lion) gadha* (fort). Finally the British seized the fort from the Peshwas in 1818 AD, destroying its almost all ancient monuments. Only the traditional gates and broken walls remain now.

The upper surface of the fort is undulating and retains few buildings. Ruins of temples, tombs and towers are scattered about. Near the gorge is a monument (*samadhi*) commemorating the bravery of Tanaji. There is also a tiny tomb of Rajaram, Shivaji's son, who died here in 1700 AD. Also, there are few bungalows, including that of Lokamanya Tilak.

In the Maratha period, Sinhagarh played the crucial role of defending Pune. Today the National Defence Academy (Kharakwasla) trains its army cadets right under the shadows of Sinhagarh.

Pictures : Sinhagarh fort with its Kalyan gate flanked by two ruined bastions, and the *Pune Darwaza* (inset).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

9. शिवनेरी किला

जुन्नर शहर के नजदीक का शिवनेरी गिरिदुर्ग, जहां शिवाजी का जन्म हुआ, पुणे से करीब 85 कि.मी. उत्तर में है। करीब 300 मीटर ऊंची एक पृथक् पहाड़ी पर स्थित यह किला त्रिभुजाकार है, इसका चौड़ा आधार-भाग दक्षिण की ओर है एवं संकीर्ण शीर्ष-भाग उत्तर की ओर। किले की चढ़ाई का मार्ग सात प्रवेश-द्वारों से सुरक्षित है। इनमें से पांचवें प्रवेश-द्वार में लोहे की नुकीली कोणकीलें टुकी हुई हैं, ताकि यह हाथी के आक्रमण को सह सके। किले में चट्टान को काटकर बनाए गए कई कुंड और तालाब हैं, जिनमें से दो के नाम गंगा और जमुना हैं। अब किले में कुछ ही स्मारक शेष बचे हैं। एक सिरे पर अस्तबल के अवशेष हैं, तो दूसरे सिरे पर मुगल काल की एक मस्जिद है। जिस मकान में शिवाजी का (फरवरी, 1627 ई. में) जन्म हुआ था, उसका हाल ही के वर्षों में पुनर्निर्माण किया गया है। पास ही में शिवकुंज नामक एक नया मंदिर है, जिसमें जीजाबाई और बालक शिवाजी की मूर्तियां हैं। सर् रिचर्ड टेंपल ने अपनी पुस्तक 'शिवाजी और मराठों का उत्थान' में शिवनेरी के बारे में लिखा है : "आप देखेंगे कि यह स्थान कितना ढलुआं और ऊंचा-नीचा है और एक जननायक के जन्म के लिए कितना उपयुक्त था !"

शिवनेरी गिरिदुर्ग का इतिहास सातवाहनों के समय से शुरू होता है। शिवनेरी पहाड़ी की तीनों ओर की ढलानों पर चट्टानों को काटकर बनाई गई कई गुफाएं हैं, जो दर्शाती हैं कि ईसवी सन् की आरंभिक तीन सदियों में यह स्थल एक प्रमुख बौद्ध केंद्र रहा होगा। सातवाहनों के बाद शिवनेरी पहाड़ी शिलाहारों, यादवों, बहामनी सुल्तानों और मुगलों के अधिकार में रही। 1599 ई. में शिवनेरी किला शिवाजी के दादा मालोजी भोसले को जागीर के रूप में मिला और फिर यह शहाजी के अधिकार में आ गया। जन्मस्थान होने पर भी, शिवाजी को यह किला मुगलों को सौंपना पड़ा और वह अपने जीवनकाल में इसे वापस नहीं ले पाए।

शिवनेरी दुर्ग-समूह, जिसमें हरिश्चंद्रगढ़, जुन्नर, जीवधन आदि किले शामिल हैं, नानेघाट के प्रसिद्ध दर्रे पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से बड़े महत्व का रहा है।

चित्र: शिवनेरी किले के सात प्रवेश-द्वारों में से एक (ऊपर), और ऊपरी किले के मध्यभाग में स्थित ऊंची पहाड़ी (आंतरचित्र)। किले में स्थित कमानी मस्जिद (नीचे, बाएं), और शिवाजी का पुनर्निर्मित जन्मस्थान (नीचे, दाएं)।



9. Shivaneri Fort

Shivaneri hillfort, birth-place of Shivaji, is near Junnar town, about 85 kms north of Pune. Situated on a 300 metre high isolated hill, the fort is triangular in shape. The wide base of the fort is towards the south and the narrow point is towards the north. The ascending path to the fort is defended by seven gates, the fifth one being armoured with anti-elephant spikes. The fort has several rock-hewn cisterns and ponds, of which two large ones are known as Ganga and Jamuna. Today, there are only a few structures remaining in the fort. At one end there is a ruined stable and at the other end a mosque of the Mughal period. The house where Shivaji was born (in February, 1630 AD) has been recently restored and a temple with statues of Shivaji and Jijabai, called *Shivakunja*, has also been built. Sir Richard Temple in his book 'Shivaji and the Rise of Marathas' wrote about Shivaneri : "You will see what a rugged precipitous place this is and what a fitting spot it was for a hero to be born in !"

The Shivaneri hill, on which the fort is built, has a long history going back to the Satavahanas. There are remains of rock caves on all the three faces of Shivaneri, which show that it was a Buddhist centre during the first three centuries AD. After the Satavahanas, the Shivaneri fort was occupied by the Shilaharas, the Yadavas, the Bahamanis and the Mughals. In 1599 AD the hillfort was granted to Shivaji's grandfather, Maloji Bhosale and passed down to Shahaji. Though Shivaji was born here, he had to surrender the fort to the Mughals and could not take it back in his lifetime.

The Shivaneri cluster of forts, comprising Harishchandragarh, Junnar, Jivadhan, etc., was very important strategically, because it controlled the ancient Nane Ghat Pass.

Pictures : One of the seven gates of the Shivaneri fort (above), and the central hilltop at the centre of the fort top (inset). The Kamani mosque in the fort (below, left), and the restored birth place of Shivaji (below, right)



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

10. पुरंदर किला

पुरंदर गिरिदुर्ग, पुणे से करीब 40 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में और सासवड़ से लगभग 10 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। एक विशाल पहाड़ी पर निर्मित इस किले की ऊंचाई समुद्र-तल से 1398 मीटर और इसके नीचे के मैदान से लगभग 700 मीटर है। यह वस्तुतः एक जुड़वां किला है। इनमें अधिक मजबूत और महत्वपूर्ण पुरंदर किला है। पूर्व की ओर आगे पहुंची इसकी पर्वत-श्रेणी की एक सपाट पहाड़ी पर बना वज्रगढ़ एक छोटा सहयोगी किला है। पुरंदर के दो भाग हैं : बालेकिल्ला अथवा ऊपरी भाग के चारों ओर खड़ी कगार है और माची अथवा नीचे का भाग मैदान से करीब 300 मीटर ऊपर है। निचले भाग की उत्तर दिशा में माची का क्षेत्र काफी चौड़ा है, जहां किले की छावनी रही थी। इस क्षेत्र में नए और पुराने कई स्मारक हैं। इस विस्तृत क्षेत्र के पूर्व में, एक संकरी पर्वत-श्रेणी के परे की पहाड़ी पर बना वज्रगढ़ या रुद्रमाल किला है।

छावनी क्षेत्र से एक घुमावदार रास्ता ऊपरी किले की ओर जाता है। इस रास्ते में जो प्रमुख प्रवेश-द्वार है, वह 'दिल्ली दरवाजा' कहलाता है। ऊपरी किले का प्राचीन प्रमुख स्मारक है—केदारेश्वर का मंदिर।

पुरंदर का इतिहास कम-से-कम 13वीं सदी से शुरू होता है। बहामनी सुल्तानों ने चौदहवीं सदी में यहां कुछ प्राचीर और बुर्ज खड़े किए थे। 1484 ई. से आगे के करीब सौ साल तक यह किला निजामशाही शासकों के कब्जे में रहा। 1596 ई. में पुरंदर किला शिवाजी के पितामह मालोजी भोसले को जागीर के रूप में मिला। मगर शिवाजी को इसे 1646 ई. में अपने प्रयास से ही हासिल करना पड़ा। 1665 ई. में विशाल मुगल सेना ने, जिसका नेतृत्व जयसिंह और दिलेर खान कर रहे थे, पुरंदर को घेर लिया। जो युद्ध हुआ उसमें शिवाजी का वीर किलेदार मुरार बाजी प्रभु मारा गया। उसके बाद जो संधि हुई उसके अंतर्गत शिवाजी ने 23 किले मुगल सत्ता को सौंप दिए। उनमें पुरंदर और वज्रगढ़ किले भी शामिल थे। पुरंदर के निचले हिस्से में मुरार बाजी प्रभु की स्मृति में उनकी एक योद्धारूप मूर्ति स्थापित की गई है। शिवाजी ने 1670 ई. में पुरंदर को पुनः प्राप्त कर लिया था। बाद में यह किला पेशवाओं की प्रिय शरणस्थली बन गया था।

1818 ई. में अंग्रेजों ने पुरंदर को अपने अधिकार में ले लिया। दूसरे महायुद्ध के दौरान जर्मन युद्धबंदियों को यहां कैदी बनाकर रखा गया था। एक जर्मन कैदी डा. एच. गोएट्ज ने पुरंदर का व्यापक अध्ययन किया और इस किले के बारे में एक प्रामाणिक पुस्तक लिखी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद यहां राष्ट्रीय कडेट कोर (एन.सी.सी.) का प्रशिक्षण केंद्र रहा।

चित्र: पूर्व दिशा से पुरंदर गिरिदुर्ग का दूरदृश्य (ऊपर)। बालेकिल्ले पर पहुंचने के मार्ग का एक प्रवेश-द्वार (नीचे)।



10. Purandar Fort

Purandar is about 40 kms south-east of Pune and some 10 kms south-west of Sasawad. Perched on a gigantic mountain mass, its height above sea-level is 1398 metres and about 700 metres above the plain at its foot. It really comprises two fortresses : Purandar, the stronger and more important of the two, and Vajragarh, a small sister fort situated on a ridge running out east of it. Purandar has two parts : the upper part or *Balekilla* with precipitous sides all around and the lower part or *machi* about 300 metres above the plain. On the north side of the lower part there is a broad terrace comprising the cantonment area of the fortifications. There are many monuments, old and new, on the terrace. Towards the east of the terrace, beyond a narrow ridge, lies the fort of Vajragarh, also called Rudramal.

From the cantonment area of the terrace a winding path leads to the upper fort. The approach is commanded by the *Dilli Darwaza*, the main gate. The most important monument on the summit of the hill is the old temple of Kedareshwar.

The history of the Purandar fort goes back to the 13th century. The Bahamani Sultans in the 14th century built here some walls and bastions. From 1484 AD, for about a hundred years, the fort remained in the hands of the Nizamshahi rulers. In 1596 AD, the fort was given as *Jagir* to Maloji Bhosale, grandfather of Shivaji. However, Shivaji had to struggle very hard to establish his control over the fort in 1646 AD. In 1665 AD, Purandar was besieged by the mighty Mughal forces under the command of Jai Singh and Dilir Khan. In the ensuing battle Murar Baji Prabhu, the gallant commander of the fort, was killed. Shivaji, under a treaty, had to surrender to the Mughals his 23 forts, including Purandar and Vajragarh. At the lower fort a statue of Murar Baji Prabhu has been installed in his memory.

Purandar was recaptured by Shivaji in 1670 AD. Later it became a favourite retreat of the Peshwas. Purandar was captured by the British in 1818 AD. During the Second World War, the British kept here the German war prisoners. Dr. H. Goetz, one of the German prisoners, thoroughly studied Purandar and wrote a monograph on it. After Independence there also functioned a National Cadet Corps (N.C.C.) Training unit at the top.

Pictures : A distant view of Purandar from the eastern side (above). Gateway leading to the upper portion of the fort (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

11. विजयदुर्ग

रत्नागिरि से 48 कि.मी. दक्षिण में स्थित विजयदुर्ग भारत के पश्चिमी तट के मजबूत समुद्री किलों में से एक है। यह एक बढ़िया बंदरगाह भी है। वाघोटन नदी के मुहाने के पास की एक चट्टान पर बना यह किला तीन ओर समुद्र और पूर्व की ओर एक खाई से घिरा हुआ था। खाई अब भर दी गई है। पूर्व दिशा के प्रवेश-द्वार को पार करने के बाद रास्ता बीच की ऊंची दीवार के पास से होता हुआ छिपे हुए भीतरी दरवाजे तक पहुंचता है। तेहरी मजबूत तटबंदी वाले इस किले के 27 बुर्ज थे, जिनमें कुछ दोमंजिले भी थे। किले के अंदर कई इमारतें और भंडार-गृह थे। एक 'विश्राम गृह' को छोड़कर अब बाकी सभी पुरानी इमारतें लगभग नष्ट हो गई हैं। पानी के लिए किले के अंदर कई बड़े कुंड और कुएं बनाए गए थे।

कुछ साल पहले किले के पश्चिम में, 100 मीटर की दूरी पर, पानी के अंदर पत्थरों की 3 मीटर ऊंची, 7 मीटर चौड़ी और 122 मीटर लंबी एक दीवार खोजी गई है। यह दीवार क्यों और किस तरह बनाई गई थी, यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। वाघोटन नदीतट पर, किले से तीन कि.मी. पूर्व की ओर, एक गोदी बनाई गई थी। वहां मराठों की नौकाएं बनाई जाती थीं एवं उनकी मरम्मत की जाती थीं।

विजयदुर्ग एक काफी पुराना स्थल है। नजदीक ही गिर्ये नामक गांव है, इसलिए इस किले को पहले 'घेरिया' के नाम से जाना जाता था। बीजापुर के शासकों ने इस किले का विस्तार किया था। उसके बाद 17वीं सदी के मध्य में शिवाजी ने किले पर कब्जा करके इसे तेहरी तटबंदी और अनेक बुर्जों वाले एक मजबूत किले में बदल डाला और इसे नया नाम दिया – विजयदुर्ग। मराठों के नौसेनाध्यक्ष ('सरखेल') कान्होजी आंग्रे (1667–1729 ई.) के समय में विजयदुर्ग को इतनी मजबूती प्रदान की गई थी कि यूरोप की समुद्री शक्तियां, काफी प्रयास करने पर भी, इस किले को जीत नहीं सकी थीं। बाद में, 1756 ई. में, पेशवा और अंग्रेजों के संयुक्त अभियान में विजयदुर्ग का पतन हुआ। यह किला सन् 1818 ई. तक पेशवा के अधिकार में रहा और उसके बाद अंग्रेजों के कब्जे में चला गया।

चित्र: भूमि की ओर से विजयदुर्ग का दृश्य; सामने हैं मछुआरों की नौकाएं (ऊपर)। विजयदुर्ग की दक्षिणी दीवार और उसके बुर्ज (नीचे)।



11. Vijayadurg Fort

Vijayadurg, situated 48 kms south of Ratnagiri, is one of the strongest marine forts on the west coast of India. It is also an excellent harbour. Built on a hill on the mouth of Vaghotan river, the fort was protected on three sides by the sea and on the east side by a ditch, now filled up. After crossing the front gate on the east, the path, skirting round the massive middle wall, enters the hidden inner gateway. The strong triple line of fortifications had 27 bastions, some of them two-storeyed. Within the citadel there were many buildings and storehouses, now all in ruins except a structure called Rest House. For the supply of water there were several wells and large tanks.

In recent years a submerged wall 100 metres east of the fort has been discovered. The under-sea wall is 3 metres high, 7 metres wide and 122 metres long. How and why this sea-wall was built is not clear. On the bank of the Vaghotan river, about 3 kms from the fort, there was a wet dock where the Marathas used to build and repair their ships.

Vijayadurg is an ancient site. Initially known as Gheria, it was enlarged by the Bijapur rulers and then strengthened and enlarged in the mid-17th century by Shivaji, to whom it owes its triple line of fortifications, towers and also its new name, Vijayadurg - Victory Fort. During the time of Kanhoji Angre (1667-1729 AD), the naval chief of the Marathas, the fort was so strong and firmly held that it successfully withstood assaults of the European maritime powers. Later in 1756 AD it fell to the combined operations of the English and the Peshwas. However, it remained in the hands of the Peshwas till 1818 AD when finally it was surrendered to the English.

Pictures : Front view of the Vijayadurg fort with fishing boats in the bay (above), and the southern fort-wall with bastions (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

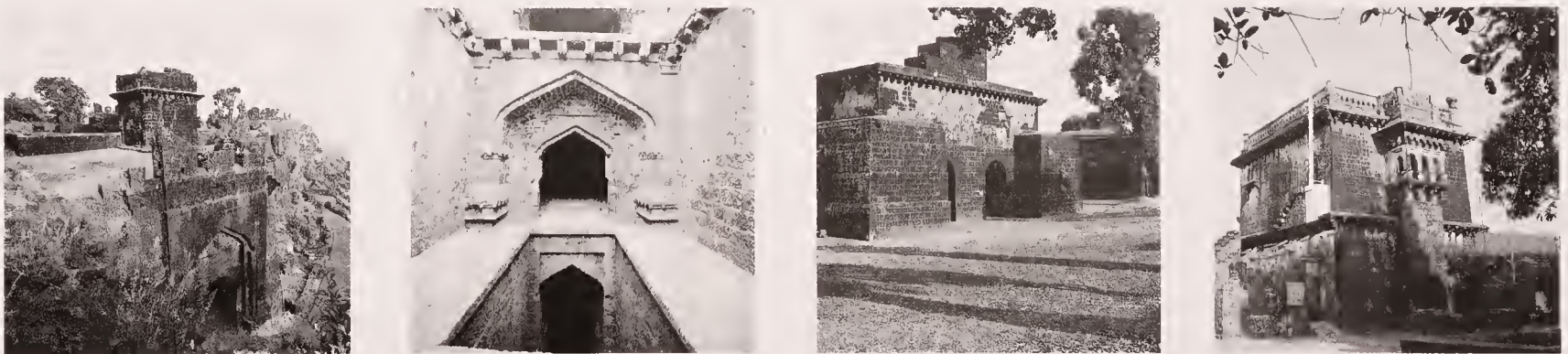
12. पन्हाळा गिरिदुर्ग

कोल्हापुर से करीब 19 कि.मी. पश्चिमोत्तर में स्थित पन्हाळा या पन्हाळगढ़ दक्खन का संभवतः सबसे बड़ा किला है। लगभग त्रिभुजाकार यह गिरिदुर्ग समुद्र-तल से करीब 850 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसका घेरा करीब 7.24 कि.मी. लंबा है। अपनी आधी लंबाई तक यह किला प्राकृतिक ढलान और उस पर बनाए गए प्राकार से सुरक्षित है। इसकी शेष आधी लंबाई में इसे पत्थरों की मोटी प्राचीर और बुर्जों से मजबूत बनाया गया है। किले में दोहरी दीवार वाले तीन भव्य दरवाजे थे, जिनमें से दो अभी भी मौजूद हैं। पश्चिम दिशा का 'तीन दरवाजा' आलीशान और बहुत मजबूत है। किले में कई सारे भग्न स्मारक हैं। उनमें सबसे प्रभावशाली हैं: तीन अंबारखाने यानी, धान्य-कोठार, जिनमें से एक का नाम है गंगा कोठी। यह विशाल कोठार 10.7 मीटर ऊंचा है और करीब 950 वर्ग-मीटर जगह घेरता है। किले के पूर्वोत्तर कोने में सज्जा कोठी नामक दो मंजिली इमारत है; जहां शिवाजी ने अपने गुमराह बेटे संभाजी को नजरबंदी में रखा था।

पन्हाळा में शिलाहार शासक भोज (द्वितीय) की 1178 ई. से 1209 ई. तक राजधानी रही। शिलाहारों के बाद यहां यादवों और बहामनियों का शासन रहा। 1489 ई. में यह किला और परिसर बीजापुर की आदिलशाही के अधिकार में चला गया। फिर 1659 ई. में शिवाजी ने इस किले पर कब्जा कर लिया। सिद्दी जोहार की फौज ने जब पन्हाळा को चार माह तक घेरे रखा, तो यहीं से शिवाजी बारिश की एक रात को विशालगढ़ की ओर प्रस्थान कर गए। बीच की कुछ अवधि को छोड़कर, जब पन्हाळा मुगलों के हाथ में चला गया था, यह किला मराठों के ही हाथ में रहा। स्वतंत्रता-प्राप्ति तक इस पर कोल्हापुर राजकुल का अधिकार बना रहा।

मराठी के प्रख्यात कवि मोरोपंत (1729-94 ई.) का जन्म इसी किले में हुआ था और उनके जीवन के आरंभिक 24 वर्ष यहीं पर गुजरे। राजतंत्र से संबंधित मराठी पुस्तक 'आज्ञापत्र' के लेखक रामचंद्र अमात्य की समाधि भी यहीं पर है। इस पुस्तक में अमात्य ने दुर्ग-निर्माण के बारे में उपयोगी जानकारी दी है। आज पन्हाळा एक गिरिस्थल बन गया है, इसलिए यहां पर्यटकों के लिए प्रायः सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

चित्र: 'तीन दरवाजा' प्रवेश-द्वार का बाहर से दृश्य (ऊपर, बाएं) और किले में बनी शृंगार या अंधार बाव, यानी सीढ़ियों वाला कुआं (ऊपर, दाएं)। किले में स्थित एक धान्य-कोठार (नीचे, बाएं) और सज्जा कोठी (नीचे, दाएं)।



12. Panhala Fort

Panhala or Panhalgarh, about 19 kms north-west of Kolhapur, is possibly the largest and most important fort of the Deccan. Roughly triangular in shape, the hillfort stands at a height of about 850 metres and has a circumference of approximately 7.25 kms. Half of its length is protected by a natural scarp reinforced by a parapet wall and the remaining half is surrounded by a strong stone wall strengthened with bastions. The fort had three magnificent double walled gates, out of which two have survived. The *Teen Darwaza* to the west is an imposing and powerful structure. There are a number of ruined monuments in the fort. The most impressive among them are the three huge granaries. The largest among them, the Ganga Kothi, covers nearly 950 sq m space and is 10.7 metres high. In the north-east corner there is a double story building, called *Sajja Kothi*, where Shivaji had imprisoned his errant son, Sambhaji.

Panhala was the capital of the Shilahara king Bhoja II during 1178-1209 AD. It was successively held by the Yadava and Bahamani kings. In 1489 AD, the fort and the territory was taken over by the Adil Shahi dynasty of Bijapur. Shivaji seized the fort in 1659 AD. It was from here that Shivaji, when encircled by the forces of Siddi Johar, escaped one rainy night to Vishalgarh. Later, the fort remained with the Marathas, except for a short period in between, when it went to the Mughals. The fort remained with the Kolhapur State till India achieved independence.

The famous Marathi poet Moropanta (1729-94 AD) was born and brought up at Panhala. There is also the *samadhi* of Ramachandra Amatya, the author of *Ajnapatra*, an important work on statecraft, including fort construction. Today, Panhala is a sort of hill station and provides all the necessary facilities for tourists.

Pictures : The *Teen Darwaza* gateway from outside (above, left), and the *Shringara* or *Andhara Bava* (step well) in the fort (above, right). One of the granaries in the fort (below, left) and the *Sajja Kothi* (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग Forts of Maharashtra

13. अजिंक्यतारा-सातारा किला

सातारा गिरिदुर्ग, जिसे अजिंक्यतारा भी कहते हैं, सातारा शहर के दक्षिणी सिरे से काफी नजदीक है। समुद्र-तल से 994 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह किला, पूर्व से पश्चिम करीब 1000 मीटर लंबा और 500 मीटर चौड़ा है। अपने वैभव के दिनों में यह किला पत्थरों की मजबूत दीवार और बुर्जों से सुरक्षित था। किले के दो द्वार थे। ऊँचे पुश्तों से संरक्षित मुख्य प्रवेश-द्वार पश्चिमोत्तर कोने के पास है और अब वहाँ तक पक्की सड़क जाती है। दक्षिण-पूर्व के कोने में बना छोटा द्वार बाहर निकलने के लिए था। किले के भीतर जो भवन, कुएं, तालाब, मंदिर आदि थे, वे अब भग्नावस्था में हैं। किले के सबसे ऊँचे स्थान पर आज एक वायरलेस रिले स्टेशन है।

1192 ई. के एक अभिलेख के अनुसार, पन्हाळा से शासन करने वाले शिलाहार शासक भोज-द्वितीय ने सातारा-कोल्हापुर परिसर में कम से कम 15 किले बनवाए थे, जिनमें एक सातारा-अजिंक्यतारा भी था। बहामनी सुल्तानों ने इस किले का विस्तार और नवीनीकरण किया। 1673 ई. में शिवाजी ने सातारा के किले पर अधिकार कर लिया। उसके बाद इस किले ने शिवाजी के सैनिक अभियानों में काफी महत्व की भूमिका अदा की। 1700 ई. में सातारा किले पर औरंगजेब का अधिकार हो गया, तो उसने अपने तीसरे बेटे शाहजादे आजम के नाम पर इसे 'आजमतारा' नाम दिया। संभव है कि अजिंक्यतारा शब्द आजमतारा से बनाया गया हो। मराठों द्वारा 1701 ई. में पुनः जीत लिए जाने के बाद इस किले में 1749 से 1848 ई. तक सातारा के भोसले राजाओं की गद्दी रही। उसके बाद यह किला ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार में चला गया।

चित्र: पूर्व की ओर से अजिंक्यतारा किले का दृश्य, और किले का मुख्य प्रवेश-द्वार (आंतरचित्र)।



13. Ajinkyatara-Satara Fort

Satara hillfort, also known as Ajinkyatara, is very close to the south of the Satara city. Situated 994 metres above sea level, the fort has a east-west length of about 1000 metres and a breadth of about 500 metres. In its heyday the fort was protected by a strong masonry wall with bastions. There were two gates. The main gate, made formidable by high buttresses, is close to the north-west corner, now approachable by a *pukka* road. The small gate in the south-east corner was a postern one. Inside the fort there were tanks, wells, buildings, temples and stores, all in ruins now. Today there is a wireless relay station located at the top in the fort.

According to an inscription dated 1192 AD, the Shilahara king Bhoj II, who ruled from Panhala, constructed at least 15 forts around Satara-Kolhapur, which included among others, the Ajinkyatara or Satara fort. The fort was extended and renovated by Bahamani Sultans. Captured by Shivaji in 1673 AD, the fort played an important role in his military operations. When Aurangzeb took it over in 1700 AD he named it 'Azamtara', after his third son Prince Azam. The name 'Ajinkyatara' might be a corruption of Azamtara. Recaptured by the Marathas in 1701 AD, the fort was the seat of the Bhosale Rajas of Satara from 1749 to 1848 AD when the state was annexed by the East India Company.

Pictures : View of Ajinkyatara from the eastern side, and the main gateway of the fort (inset).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

14. सुवर्णदुर्ग

समुद्री किला सुवर्णदुर्ग रत्नागिरी जिले के हर्णे बंदरगाह के समीप है। यह प्राकृतिक बंदरगाह अपने मत्स्य-उद्योग और उसके व्यापार के लिए काफी प्रसिद्ध है। अत्यंत मजबूत सुवर्णदुर्ग की दीवार ठोस चट्टान को काटकर उठाई गई है और बड़े-बड़े चौकोर प्रस्तर-खंडों का उपयोग करके परकोटे को ऊंचा किया गया है। दीवारों की चुनाई के लिए किसी मसाले का इस्तेमाल नहीं हुआ है। किले की दीवार में कई बुर्ज बने हैं और इसकी पश्चिम दिशा में, खुले समुद्र की ओर, एक दरवाजा है। मुख्य प्रवेश-द्वार, जो भू-भाग से दृष्टिगत नहीं है, पूर्व की ओर है। दरवाजे की दहलीज पर एक कच्छप उकेरा हुआ है और उसके बगल की दीवार में मारुति (हनुमान) की मूर्ति बनाई गई है। किले के भीतर कई इमारतें, जलकुंड और बारूदखाना तथा शस्त्रागार के लिए स्थान थे। अब ये सभी इमारतें नष्ट हो गई हैं।

सुवर्णदुर्ग का निर्माण 17वीं सदी में संभवतः बीजापुर के शासकों ने किया था। शिवाजी ने इस किले को जीतकर इसकी मरम्मत करवाई और इसे एक मजबूत जलदुर्ग में बदल डाला। सुवर्णदुर्ग भी मराठा नौसेना का एक प्रमुख गढ़ बन गया। आरंभ में यह कान्होजी आंग्रे का मुख्य समुद्री किला था। 1818 ई. तक सुवर्णदुर्ग पेशवा के अधिकार में रहा।

सुवर्णदुर्ग के समीप समुद्रतट पर तीन छोटे किले हैं—गोवा, कणकदुर्ग और फतहगढ़। इनके और सुवर्णदुर्ग के बीच में तीन-चार सौ मीटर का जलांतराल है। इन तीन छोटे किलों में गोवा किला सबसे मजबूत था। इसके दो दरवाजे हैं—एक जमीन की ओर और दूसरा समुद्र की ओर, सुवर्णदुर्ग की दिशा में। समुद्री द्वार की पार्श्व दीवार पर बाघ, गरुड़ और हाथियों की आकृतियां उकेरी हुई हैं। किले के भीतर की पुरानी इमारतें नष्ट हो गई हैं। कणकदुर्ग की तीन दिशाओं में समुद्र है और अब इसके केवल दो खंडित बुर्ज कायम हैं। इस किले के सबसे ऊंचे स्थान पर एक दीपस्तंभ है। फतहगढ़ अब पूर्णतः नष्ट हो गया है। संभवतः इन तीनों तटवर्ती छोटे किलों को, सुवर्णदुर्ग की सुरक्षा के लिए, कान्होजी आंग्रे (1667–1729 ई.) ने बनवाया था।

चित्र: गोवा किले से सुवर्णदुर्ग का दूरदृश्य (ऊपर), और बुर्जों सहित गोवा किले की एक दीवार (नीचे)।



14. Suvarnadurg Fort

The island fort of Suvarnadurg stands close to Harne in Ratnagiri District, a natural harbour famous for fishing and its marketing. A very strong fort, its walls are cut out of solid rock and the ramparts are raised by using huge square blocks. No mortar was used in the walls. The fort has many bastions and a postern gate on the western side. The hidden main gate opens towards the east. It has on its threshold a carved figure of a tortoise and on the side wall, that of *Maruti* (Hanuman). Inside the fort there were several buildings, water tanks and a place for ordinance. All the buildings are now in ruins.

The fort was probably built by the Bijapur kings in the 17th century. Captured and strengthened by Shivaji, it became a stronghold of Maratha navy and remained with the Peshwas till 1818 AD. It was one of the main naval bases of the Angres.

Gova, Kanakadurg and Fatehgarh forts on the mainland are separated from Suvarnadurg by a narrow channel. The small Gova fort was stronger than the other two. It has two gates, one towards the land and another towards the sea. On the wall of the sea-gate there are carved figures of a tiger, eagle and elephants. The old buildings inside the fort are in ruins.

Kanakadurg has the sea on three sides. Nothing remains of the fort, except two broken bastions. There is a light house at its highest point. Fatehgarh is in complete ruin. Most probably, these three small forts were built by Kanhoji Angre (1667-1729 AD) to protect Suvarnadurg from the land route.

Pictures : A distant view of Suvarnadurga from the Gova fort (above), and a wall with a bastions of the Gova fort (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

15. त्र्यंबक और चाकण किले

त्र्यंबकेश्वर तीर्थ के समीप स्थित त्र्यंबक अथवा ब्रह्मगढ़ गिरिदुर्ग, नासिक शहर से 32 कि.मी. उत्तर में है। किला एक ऐसी ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है, जिसके लगभग चारों ओर खड़ी चट्टानी कगार है। इसके अलावा, किले को दीवार और बुर्जों से भी सुरक्षित बनाया गया था। किले पर जाने के केवल दो प्रवेश-मार्ग हैं। दक्षिण दिशा का मुख्य प्रवेश-मार्ग लगभग खड़ी कगार को काटकर बनाई गई करीब 300 सीढ़ियों से और चट्टान को ही काटकर बनाए गए द्वारों से होकर जाता है। उत्तरी मार्ग पर केवल एक द्वार है और वहाँ चट्टान को काटकर बनाए गए एक संकीर्ण मार्ग से होकर ऊपर पहुंचना पड़ता है। किला अब भग्नावस्था में है। किले के ऊँचे स्थान से आसपास के अंजनेरी, हरिहर और अन्य कुछ गिरिदुर्गों का भव्य दृश्य देखने को मिलते हैं।

त्र्यंबक किले का निर्माण काफी हद तक देवगिरि (दौलताबाद) गिरिदुर्ग की पद्धति के अनुसार हुआ है, इसलिए संभवतः यह राष्ट्रकूट-यादव काल में बना था। यादवों (1271 ई.) के बाद यह निजामशाही सुल्तानों, मुगलों और मराठों के अधिकार में रहा। त्र्यंबक और इसके आसपास के किले उत्तरी कोंकण के प्रवेश-मार्ग पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से इनका बड़ा महत्व रहा है। 1818 ई. में अंग्रेजों ने काफी कड़े मुकाबले के बाद त्र्यंबक को जीत लिया, तो फिर आसपास के किलों ने जल्दी ही आत्मसमर्पण कर दिया। गोदावरी नदी त्र्यंबक की पहाड़ी से ही निकलती है।

चाकण गांव और यहां का स्थलदुर्ग पुणे से 29 कि.मी. उत्तर में है। लगभग वर्गाकार यह किला भीतरी तथा बाहरी दीवारों और बुर्जों तथा इसके कोनों में बने टावरों से सुरक्षित था। दीवार के बाहर चौड़ी खाई भी थी। किला अब खंडहर बन गया है।

चाकण काफी पुराना किला है और यह कई राजवंशों के कब्जे में रहा है। पता चलता है कि अबीसिनीया के एक सरदार ने 1295 ई. में यहां किलेबंदी की थी। 1595 ई. में यह किला शिवाजी के पितामह मालोजी भोसले को जागीर में मिला। यहां एक महत्वपूर्ण घटना तब घटी, जब 1660 ई. में शायस्ता खां ने काफी कड़े मुकाबले के बाद इस पर कब्जा कर लिया था। अहमदनगर से कोंकण जाने वाले सबसे कम दूरी के मार्ग पर स्थित होने के कारण चाकण स्थलदुर्ग का सामरिक दृष्टि से बड़ा महत्व था। अंग्रेजों ने इस किले को 1818 ई. में मराठों से छीन लिया।

चित्र: त्र्यंबक गिरिदुर्ग का दूरदृश्य (ऊपर), और चाकण स्थलदुर्ग का खंडित परकोटा (नीचे)।



15. Tryambak and Chakan Forts

Tryambak or Brahmagarh hillfort, overlooking the holy temple of Tryambakeshwar, is 32 kms south-west of Nasik town. The fort was built on a high hill with steep scarps to its each face. Besides, it was fortified by walls and bastions. There are only two gateways. The main southern access is through the steep steps (about 300 in numbers) cut out of a near vertical scarp and passing through rockcut gates. The northern access is through only a single gate approached by a narrow passage with steps cut from the rock. The fort is now in ruins. From the top of Tryambak, one can have a grand view of the Harihar, Anjaneri and a few other hillforts.

Being in the category of Devagiri, Tryambak fort seems to be of Rashtrakuta-Yadava origin. After the Yadavas (1271 AD) it was occupied by the Nizamshahi sultans, the Mughals and the Marathas. Tryambak and its cluster of forts provided cover to upper Konkan and so was of strategic importance. In 1818 AD, when Tryambak was taken over by the British with a tough fight, the surrounding forts surrendered without any resistance. The river Godavari originates from the Tryambak hill.

Chakan village and its landfort is 29 kms north of Pune. Nearly square, the fort was protected by a strong wall with bastions and corner towers surrounded by a moat. There was also an inner wall. The fort is now in ruins.

The Chakan fort is quite old and was occupied by several powers. An Abyssinian chief is said to have made the first fortification in 1295 AD. In 1595AD, it was given in *jagir* to Shivaji's grandfather, Maloji Bhosale. An important event occurred here when the fort was captured by Shaista Khan in 1660 AD. Being on the shortest route from Ahmadnagar to Konkan, Chakan was a place of great strategic importance. The fort was captured from the Marathas by the British in 1818 AD.

Pictures : A distant view of the Tryambak hillfort (above), and the ruined ramparts and bastions of the Chakan landfort (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

16. वसई का किला

वसई शहर मुंबई से करीब 48 कि.मी. उत्तर में उल्हास नदी के परे बसा हुआ है। पुराने शहर में स्थित यह किला पुर्तगालियों का उत्तर में, गोवा के बाद, सबसे महत्वपूर्ण मुख्यालय रहा था। वसई का यह तटवर्ती जलदुर्ग तीन ओर समुद्र से एवं जमीन की ओर एक खाई द्वारा घिरा हुआ था। खाई, जिसमें समुद्र का पानी पहुंचता था, अब पाट दी गई है। इस दशभुजाकार किले की 4.5 कि.मी. लंबी पत्थर की दीवार में 11 बुर्ज थे। किले के दो प्रवेश-द्वार थे — पश्चिम की ओर भूमि-द्वार और पूर्व की ओर समुद्र-द्वार। भीतर एक छोटा बालेकिल्ला भी था। किले में जल-कुंडों, भंडार-गृहों, बारूदखाना, शस्त्रागार आदि साधन मुहैया थे। किले में कुछ खेत भी थे, जहां अनाज और सब्जियां उगाई जाती थीं। अब किले के पुराने सभी स्मारक खंडहर बन गए हैं।

जब प्राचीन सोपारा बंदरगाह (वसई से 10 कि.मी. उत्तर का आज का नाला-सोपारा गांव) इस्तेमाल करने योग्य नहीं रहा, तो वसई का महत्व बढ़ता गया और यह एक व्यापारिक केंद्र बन गया। गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के एक सेनापति मलिक तोकन ने 1533 ई. में वसई में एक छोटा-सा किला खड़ा किया। 1534 ई. में बहादुर शाह को विवश होकर वसई का क्षेत्र पुर्तगालियों को सौंप देना पड़ा। यहां पुर्तगालियों ने पहले बालेकिल्ला बनाया और फिर 1590 ई. तक किले की दीवार और उसके भीतर के स्मारक अस्तित्व में आए। आगे के करीब 150 साल तक वसई में वैभव और सम्पन्नता का साम्राज्य रहा। पुर्तगालियों ने यहां कई शानदार आवास-गृहों, कॉन्वेंट्स, गिरिजाघरों और एक अनाथालय का निर्माण किया। तत्कालीन किले के भीतर केवल कुलीन पुर्तगाली (हिडाल्गो) ही रह सकते थे। वसई, पुर्तगालियों का एक प्रमुख नौसैनिक अड्डा और जहाज-निर्माण का केंद्र था। पुर्तगालियों का पतन 1739 ई. में हुआ, जब पेशवा बाजीराव के भाई चिमाजी आप्पा ने कठोर संघर्ष और भारी जनहानि के बाद किले पर कब्जा कर लिया। फिर 1802 ई. में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने यहीं पर उस अप्रिय “वसई संधि” पर हस्ताक्षर किए जिससे मराठा संघ का सदा के लिए विघटन हो गया। अंत में 1817 ई. में वसई शहर और किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

चित्र: वसई के किले का समुद्र की ओर का प्रवेश-द्वार (ऊपर); नजदीक से समुद्री प्रवेश द्वार का दृश्य (आंतरचित्र)। किले का एक भग्न स्मारक (नीचे, बाएं)। किले के भीतर के एक गिरिजाघर का द्वार (नीचे, दाएं)।



16. Vasai Fort

Vasai, also called Bassein, lies about 48 kms north of Mumbai just across the Ulhas river. The fort in the old city was the headquarter of the Portuguese in the north, next in importance to Goa. The coastal land-fort of Vasai was surrounded by sea on three sides and to the landside it had a moat which was filled by sea-water. Its 4.5 kms long strong stone wall had 11 bastions. The fort had two gates - the westward land-gate and the eastward sea-gate. There was also a small citadel in the fort. Well-equipped with water-tanks, store-houses, armoury, etc., the fort also had fields for growing grains and vegetables. All the old structures inside the wall are now in ruins.

Vasai came into prominence when the ancient harbour of Sopara (now Nalsopara village, 10 kms north of Vasai) became unfit for use. However, Vasai continued to be a trading centre. A small fort-like structure was erected here in 1533 AD by Malik Tughan, the commander of Bahadur Shah, Sultan of Gujarat. In 1534 AD, the Portuguese forced Bahadur Shah to cede Vasai in perpetuity. Here, first they constructed the citadel (Balekilla), and then in 1590 AD, the present fort with its ramparts and other structures came into being. For the next about 150 years Vasai enjoyed opulence and prosperity. The Portuguese built here magnificent houses, convents, churches and an orphanage. Only the Hidalgos (Portuguese nobles) were allowed to reside within the fort walls. Vasai was the main naval base and a sort of ship-building centre of the Portuguese. The end came in 1739 AD, when Chimaji Appa, Peshwa Bajirav's brother, stormed the fort and captured it with great loss of life. It was here in 1802 AD, the Peshwa Bajirav II signed the infamous “Treaty of Bassein” which virtually dissolved the Maratha Confederacy. Finally, the fort and the city of Vasai was ceded to the British in 1817 AD.

Pictures : The eastward sea-gate of the Vasai fort (above), and a close view of the sea-gate (inset). A ruined monument in the fort (below, left). Gate of a church in the fort (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

17. देवगिरि-दौलताबाद किला

औरंगाबाद से 11 कि.मी. पश्चिमोत्तर में स्थित देवगिरि (बाद का दौलताबाद) स्थान अपने दुर्जेय गिरिदुर्ग के लिए विख्यात है। किला एक ऐसी अलग-थलग खड़ी शंक्वाकार पहाड़ी पर स्थापित है, जो समीप के मैदान से एकाएक करीब 190 मीटर ऊंची उठी हुई है। किलेबंदी तीन रक्षात्मक दीवारों और बहुत सारे बुर्जों से हुई है। किले की प्रमुख विशेषताएं हैं – चौड़ी खाई, खड़ी कगार और ठोस चट्टान को काटकर बनाया गया भूमिगत मार्ग। इस मार्ग के ऊपरी सिरे पर लोहे की एक जाली रखी जाती थी और उस पर आग जलाकर शत्रु को नीचे ही रोक दिया जाता था। किले के भीतर के प्रमुख स्मारक हैं – चांद मीनार, चीनी महल और बारादरी।

चांद मीनार, जो करीब 63 मीटर ऊंची है, अलाउद्दीन बहमन शाह ने दौलताबाद को जीतने की यादगार में 1435 ई. में बनवाई थी। मीनार की दूसरी दिशा में जुम्मा मस्जिद है, जिसके स्तंभ किसी पुराने मंदिर के हैं। उसके समीप पत्थरों से निर्मित एक विशाल तालाब है। नीचे के किले के सिरे पर स्थित चीनी महल में औरंगजेब ने 1687 ई. में गोलकुंडा के अंतिम शासक अब्दुल हसन तानाशाह को कैद कर रखा था। नजदीक के एक बुर्ज पर मेढ़े के मुंहवाली 'किला शिकन' नामक एक विशाल तोप है।

किले के सबसे ऊपरी स्थान के समीप बारह कोनों वाली बारादरी इमारत है। किले के सबसे ऊपरी मुख्य बुर्ज पर भी एक तोप है।

देवगिरि की स्थापना हालांकि यादव शासक भिल्लम-पंचम ने (1187 ई.) की थी, परंतु किले का निर्माण सिंघण-द्वितीय के शासनकाल (1210-46 ई.) में हुआ। 1294 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इसे जीत लिया। किसी मुस्लिम शासक का दख्खन की ओर यह पहला अभियान था। अंत में 1318 ई. में मलिक काफूर ने देवगिरि के अंतिम यादव राजा हरपाल को मार डाला। फिर 1327 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली की सारी आबादी को देवगिरि ले जाकर उसे अपनी राजधानी बनाने का प्रयास किया और नगर को नया नाम दिया – दौलताबाद। उसके बाद दौलताबाद का किला 1526 ई. तक बहामनी शासकों के अधिकार में रहा। फिर औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) तक यह मुगलों के कब्जे में रहा। उसके बाद इस पर हैदराबाद के निजाम का अधिकार हो गया।

एलोरा की विख्यात गुफाएं देवगिरि-दौलताबाद से केवल 16 किलोमीटर दूर हैं।

चित्र: प्रवेश-द्वार के ऊपर से देवगिरि और ऊपरी दुर्ग (ऊपर, बाएं) का दृश्य (ऊपर), और चांद मीनार (आंतरचित्र)। जुम्मा मस्जिद का प्रांगण, पुराने अलंकृत स्तंभों सहित (नीचे, बाएं), और मेढ़े के सिर वाली 'किला शिकन' तोप (नीचे, दाएं)।



17. Devagiri-Daulatabad Fort

Devagiri (Daulatabad of the later period), 11 kms north-west of Aurangabad, is famous for its formidable hillfort. The fort is situated on an isolated cone-shaped hill rising abruptly from the plain to the height of about 190 metres. The fortification constitutes of three concentric lines of defensive walls with large number of bastions. The noteworthy features of the fort are the moat, the scarp and the sub-terranean passage, all hewn of solid rock. The upper outlet of the passage was filled with an iron grating, on which a large fire could be used to prevent the progress of the enemy. The Chand Minar, the Chini Mahal and the Baradari are the important structures within the fort.

The Chand Minar, about 63 metres in height, was erected by Alauddin Bahman Shah in 1435 AD to commemorate his conquest of Daulatabad. Opposite the Minar is the Jumma masjid, whose pillars originally belonged to a temple. Close to it, there is a large masonry tank. The Chini Mahal at the end of the lower fort is the place where Abdul Hasan Tana Shah, the last king of Golconda, was confined by Aurangzeb in 1687 AD. Nearby is a round bastion topped with a huge canon with ram's head, called Kila Shikan or Fort breaker. The Baradari, octagonal in shape, stands near the summit of the fort. The principal bastion at the summit also carries a large canon.

Though the city of Devagiri was founded in 1187 AD by the Yadava king Bhillam V, the fort was constructed during the reign of Singhana II (1210-46 AD). It was captured by Ala-ud-Din Khalji in 1294 AD, marking the first Muslim invasion of the Deccan. Finally in 1318 AD, Malik Kafur killed the last Yadava Raja, Harapal. Then in 1327 AD, Muhammed -bin-Tughluq sought to make it his capital, by transferring the entire population of Delhi and changing the name from Devagiri to Daulatabad. Then it was in the possession of the Bahamanis till 1526 AD. The fort remained in Mughal control till Aurangzeb's death in 1707 AD., when it passed on to the Nizam of Hyderabad. The famous Ellora Caves are just 16 kms away from Devagiri-Daulatabad.

Pictures : View of Devagiri fort and its citadel (top left) from the top of its entrance gate (above), and the Chand Minar (inset). Courtyard of the Jumma masjid, with old carved pillars (below, left), and the Kila Shikan canon with ram's head (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

18. बल्लाळपुर, चंद्रपुर और माणिकगढ़ किले

महाराष्ट्र के चंद्रपुर (पुराना चांदा) जिले में स्थित ये तीनों किले जनजाति मूल के हैं। अपने कागज कारखाने और इस परिसर की कोयला खानों के लिए प्रसिद्ध **बल्लाळपुर** कस्बा जिला-मुख्यालय चंद्रपुर से 16 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में है। सन् 1437-62 की कालावधि में बल्लाळपुर में गोंड राजा खांडक्या बल्लाळशाह की राजधानी थी। उसने यहां वर्धा नदी के पूर्वी तट पर दीवारों और बुर्जों से युक्त एक वर्गाकार भूमिदुर्ग बनाया था। एक-दूसरे के समकोण में बने किले के दो प्रवेश-द्वार आज भी कायम हैं। नदी तक जाने के लिए पीछे की तरफ भी एक द्वार है। किले का परकोटा भी अभी मौजूद है, मगर भीतर की सभी पुरानी इमारतें नष्ट हो गई हैं।

चंद्रपुर की स्थापना का श्रेय भी खांडक्या बल्लाळशाह को ही है। जब राजधानी बल्लाळपुर से चंद्रपुर स्थानांतरित हुई, तो बल्लाळ राजाओं ने यहां भी ऊंची दीवारों और बुर्जों वाले एक विशाल भूमिदुर्ग का निर्माण किया। किले के चारों दिशाबिंदुओं में चार भव्य द्वार बनाए गए। पुरानी इमारतें अब नष्ट हो गई हैं, परंतु द्वार और परकोटे के कुछ भाग अभी भी मौजूद हैं। अठारहवीं सदी के मध्य में नागपुर के रघुजी भोसले ने चंद्रपुर पर कब्जा कर लिया। अंत में 1818 ई. में चंद्रपुर किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। चंद्रपुर अब महाराष्ट्र का एक औद्योगिक स्थल है और यह अपने प्राचीन महाकाली मंदिर के लिए भी प्रसिद्ध है।

माणिकगढ़, चंद्रपुर से करीब 35 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में है और आजकल इसके नजदीक स्थापित एक सीमेंट कारखाने के लिए अधिक जाना जाता है। नाग जनजाति के राजाओं द्वारा 9वीं सदी में निर्मित माणिकगढ़ गिरिदुर्ग समुद्र-तल से 507 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। मजबूत दीवारों और बुर्जों से इसकी किलेबंदी हुई थी। किले के भीतर कई तालाब और भवन थे। परंतु पुराने सभी स्मारक अब पूर्णतः नष्ट हो गए हैं और दुर्ग, वन्य पशुओं की शरणस्थली बन गया है। घने जंगलों से होता हुआ एक पक्का रास्ता किले के मुख्य द्वार के समीप पहुंचता है, जिसके नजदीक ही एक प्राचीन विष्णु मंदिर है।

चित्र: बल्लाळपुर किले का वर्धा नदीतट के समीप का तटबंद और बुर्ज (ऊपर, बाएं)। बल्लाळपुर किले के मुख्य द्वार का भीतरी दृश्य (ऊपर, दाएं)। माणिकगढ़ किले का भग्न प्रवेश-द्वार (नीचे, बाएं)। चंद्रपुर किले के परकोटे का एक भाग (नीचे, दाएं)।



18. Ballalpur, Chandrapur and Manikgarh Forts

Situated in Chandrapur (old Chanda) district of Maharashtra, all the three forts are of tribal origin. **Ballalpur**, now known for its coal mines and paper mills, is 16 km south-east of Chandrapur, the district headquarters. Ballalpur was the capital of the Gond king Khandakya Ballalshah during 1437-62 AD. The landfort, that he built here on the eastern bank of the Wardha river, is square in shape with walls and bastions. There are still two intact gates set at right angle to each other. There is also a small postern gate on the river side. The fort walls are still intact, but all the old buildings are in total ruins.

The credit for establishing **Chandrapur** also goes to Khandakya Ballalshah. When the capital was shifted from Ballalpur to Chandrapur, the Ballal kings built here an extensive landfort with high walls and bastions. The fort had at its four cardinal points four impressive gates. The original buildings have vanished, but the gates and a portion of the wall still exists. Chandrapur was annexed by Raghujji Bhosale of Nagpur in the middle of the 18th century. Finally the fort was captured by the Britishers in 1818 AD. Now an industrial town, Chandrapur is also famous for its old Mahakali temple.

Manikgarh, made famous by a newly established cement factory near by, is about 35 kms south-west of Chandrapur. Built by tribal Naga kings in the 9th century, the Manikgarh hillfort stands at the height of 507 metres above sea-level. It was strongly fortified with walls and bastions. There were several tanks and buildings inside the fort. Today, the fort is in complete ruins and has become a sanctuary for wild animals. A *pukka* road through a dense forest leads very close to the gateway of the fort. Nearby is an old temple of Vishnu.

Pictures : The Wardha river-side rampart and bastion of the Ballalpur fort (above, left). The main gate of the Ballalpur fort from inside (above, right). The ruined gate-way of the Manikgarh hillfort (below, left). A portion of the rampart of the Chandrapur fort (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

19. बाळापुर का किला

बाळापुर तहसील का एक शहर है और जिला मुख्यालय अकोला से 26 किलोमीटर दूर है। माण और म्हैस नदियों के संगम पर बसा हुआ बाळापुर एक ऐतिहासिक शहर है एवं यहां का दुर्ग, विदर्भ और खानदेश का संभवतः सबसे मजबूत किला है। औरंगजेब के बेटे आजम शाह ने 1721 ई. में इस किले की नींव डाली थी और एलिचपुर (अब अचलपुर, जिला अमरावती) के नवाब इस्माइल खान ने 1757 ई. में इसे पूरा किया। किला काफी-कुछ अच्छी हालत में है और आजकल इसके भीतर कुछ सरकारी दफ्तर हैं।

दो नदियों के बीच की ऊंची भूमि पर स्थित इस किले के भारी-भरकम परकोटे और बुर्ज अपने समय की सर्वोत्तम ईंटों से निर्मित हैं। इस किले के एक के भीतर एक तीन दरवाजे हैं। बाहरी अथवा नीचे का किला दशभुजाकार है और इसके प्रत्येक कोण पर एक बुर्ज बना हुआ है। दीवारों की ऊंचाई के स्तर पर बना भीतरी किला पंचभुजाकार है और उसके भी प्रत्येक कोण पर एक बुर्ज है। सबसे ऊपर की दीवारें 3 मीटर चौड़ी हैं और उनके प्राकार में, तीन अलग-अलग दिशाओं में अस्त्र छोड़ने के लिए, अनेक रेखा-छिद्र बनाए गए हैं। किले के भीतर तीन कुएं और एक मस्जिद है। बारिश के दिनों में किला बाढ़ के पानी से घिर जाता है – सिर्फ एक जगह आने-जाने के लिए रास्ता खुला रहता है। जिस बाला देवी से शहर को बाळापुर नाम मिला है, उनका मंदिर दक्षिण दिशा में किले के ठीक नीचे है।

आईन-ए-अकबरी में उल्लेख है कि बाळापुर, बरार के सूबे का एक सबसे सम्पन्न परगना है। बाळापुर को अहमदनगर राज्य से हासिल करने के बाद अकबर का बेटा मुराद यहां बस गया था। उस समय बाळापुर स्थानीय नदी से निकाले गए पत्थरों से निर्मित अपनी कलात्मक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध था। अपने उत्तम कपड़े और हाथ-कागज के लिए भी बाळापुर ने दूर-दूर तक ख्याति अर्जित कर ली थी।

चित्र: नदी पार से बाळापुर का किला (ऊपर, बाएं)। बाळापुर किले का प्रमुख प्रवेश-द्वार, जो भीतरी प्रांगण में खुलता है (ऊपर, दाएं)। बाळापुर किले के दोहरे तटबंद उनके बुर्जों सहित (नीचे, बाएं)। बाळापुर किले की भीतरी दीवार, प्रवेश-द्वार सहित (नीचे, दाएं)।



19. Balapur Fort

Balapur, a taluka town, is 26 kms from Akola, the district headquarters. Situated at the junction of the rivers Man and Mhais, Balapur is a historical town and has a massively built fort, probably the strongest in Vidarbha and Khandesh regions of Maharashtra. The fort was started in 1721 AD by Azam Shah, the son of Emperor Aurangzeb, and was completed by Ismail Khan, the *Nawab* of Ellichpur (now Achalpur, Amaravati District) in 1757 AD. The fort is in a reasonably good condition and today houses some government offices.

Situated on a high ground between the rivers, the fort has very lofty walls and bastions built of the best brickwork of its time. The fort has three gateways, one within the other. The outer or the lower fort is a decagon with a bastion at each angle, and above it rises, by the height of its walls, the inner fort which is a pentagon, each angle having a bastion, as in the lower fort. The innermost walls are 3 metres thick and their ramparts are pierced with numerous slits at three different angles for the discharge of missiles. Inside the fort are three wells and one mosque. During the rains the fort gets surrounded by floodwater except at one point. The temple of Bala Devi, from which the town has derived its name, lies just under the fort on the southern side.

The *Ain-i-Akbari* mentions Balapur as one of the richest *paraganas* of the *Subha* of Berar. Murad, the son of Akbar, settled at Balapur after acquiring it from the Ahmadnagar kingdom. At that time Balapur was famous for its artistic articles manufactured from the stone quarried from the local river. It had also acquired wide fame for the production of quality cloth and paper.

Pictures : Balapur fort from across the river (above, left). Main gateway of the Balapur fort leading to the inner courtyard (above, right). Upper and lower walls and bastions of the Balapur fort (below, left). The innermost wall and gateway of the Balapur fort (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

20. गाविलगढ़ किला

सतपुड़ा की 1103 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित गाविलगढ़ किला लोकप्रिय पर्वतीय स्थल चिखलदरा से 2.5 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में और विदर्भ की प्राचीन राजधानी अचलपुर से करीब 30 कि.मी. उत्तर दिशा में है। अब यह किला मेळघाट व्याघ्र परियोजना के अंतर्गत आता है। सदियों पहले पशुचारी गवळी लोगों ने इस स्थान पर एक छोटा सा किला बनाया था, जो कालांतर में गवळीगढ़ या गाविलगढ़ के नाम से जाना गया। नए किले का निर्माण बहामनी वंश के नौवें शासक अहमद शाह वली ने 1425 ई. में किया। उसके बाद विदर्भ की इमादशाही के संस्थापक फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क ने 1488 ई. में गाविलगढ़ की मरम्मत की और इसका विस्तार किया।

गाविलगढ़ के दो स्तर हैं : भीतरी किला, बाहरी किले से कुछ अधिक ऊंचाई पर है। बाहरी किले की एक तीसरी दीवार है, जो उत्तर की ओर से इसकी रक्षा करती थी। किले के दो मुख्य दरवाजे हैं : बाहरी और भीतरी किले के मध्य में 'दिल्ली दरवाजा' एवं दक्षिण-पश्चिम दिशा का 'फतेह दरवाजा', जिसे फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क ने बनवाया था। किले के बचे हुए स्मारकों में सबसे विशिष्ट है एक भव्य मस्जिद, जो भीतरी किले में दक्षिण की ओर के सबसे ऊंचे स्थान पर स्थित है। पठान वास्तु शैली की इस मस्जिद के अग्रभाग में सात मेहराब हैं। मस्जिद की दो मीनारों में से पूर्वोत्तर कोने की केवल एक ही मीनार मौजूद है। पत्थर की अत्यंत सुंदर जाली से निर्मित इसकी चौकोर छतरी मस्जिद के गुम्बज के थोड़े ऊपर तक पहुंचती है। किले में कम-से-कम आठ तालाब थे, जिनमें से दो आज भी अच्छी हालत में हैं। किले में आज भी कुछ तोपें देखी जा सकती हैं, जिनमें सबसे बड़ी इसके दक्षिणी सिरे पर है।

गाविलगढ़ का इतिहास काफी लंबा है। किंवदंती है कि "जो गाविलगढ़ का मालिक, वह बरार (विदर्भ) का मालिक"।

बहामनी राज्य के विघटन के बाद गाविलगढ़ पर कई शासकों का अधिकार रहा। 1488 ई. में यह एलिचपुर (अचलपुर) की इमादशाही के अधिकार में आया, 1574 ई. में निजामशाही के अधिकार में, 1599 ई. में मुगलों के अधिकार में और 1754 ई. में मराठों के अधिकार में। 1803 ई. में इसे अंग्रेजों ने जीत लिया। 1858 ई. में तात्यां टोपे सतपुड़ा की पहाड़ियों में पहुंच गए थे और दक्षिण भारत में जाकर आजादी के आंदोलन को पुनः उठाना चाहते थे। उस समय अंग्रेजों ने गाविलगढ़ को तहस-नहस कर डाला।

चित्र: गाविलगढ़ किले की भव्य मस्जिद (ऊपर)। गाविलगढ़ किले की उत्तर दिशा की बाहरी दीवार और उसमें बना प्रवेश-द्वार (नीचे)।



20. Gavilgarh Fort

Gavilgarh fort is situated on a 1103 metres high lower Satpuda range, now under the Melghat Tiger Project. It is 2.5 kms south-east of Chikhaldara, a popular hill-station, and about 30 kms north of Achalpur, the old capital of Berar, now a taluka town. Gavilgarh took its name from the pastoral *Gavalis* who, centuries ago, had a mud fort on this hill. The new fort was built by Ahmad Shah Wali, the ninth king of the Bahamani dynasty in 1425 AD. In 1488 AD, the fort was repaired and extended by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk, the founder of Imadshahi in Berar.

Gavilgarh has two levels, the outer fort being slightly lower than the inner one. This outer fort has a third wall which covers the approach to it from the north. The fort has two main gateways, the *Delhi Darwaza*, between the inner and outer fort, and the *Fateh Darwaza*, the south-western gate, built by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk. The most conspicuous of the remains in the fort is the great mosque which stands upon the highest point towards the south side of the inner fort. Built in the Pathan style of architecture, the mosque has seven arches in its facade. Of the two minarets, the one at the north-eastern angle of the building still exists. Its square canopy, with very exquisite stone lattice-work, rises little above the domes of the mosque. There were not less than eight tanks in the fort, two of them still in good condition. There still remain in the fort several canons, the one at the southern end being the largest.

Gavilgarh has a long history. The saying was : "One who controls Gavilgarh, controls Berar." After the split of the Bahamani kingdom, it passed through many hands. It was with the Imadshahi in 1488 AD, the Nizamshahi in 1574 AD, the Mughals in 1599 AD and the Marathas in 1754 AD, before it fell to the British in 1803 AD. Gavilgarh was dismantled in 1858 AD lest it should be seized by Tatya Tope, who in that year attempted to break from the Satpuda hills into the Deccan in order to stir up the country for the independence movement.

Pictures : The mosque in the Gavilgarh fort (above). The northern outer wall and gateway of the Gavilgarh fort (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

21. नरनाळा, अकोला और अचलपुर के किले

नरनाळा गिरिदुर्ग अकोला जिले के आकोट शहर से 18 कि.मी. उत्तर की ओर सतपुड़ा की एक पृथक पहाड़ी पर स्थित है। समुद्र-तल से 973 मीटर की ऊँचाई पर बने इस किले के तीन हिस्से हैं — पूर्वोत्तर में जाफराबाद, मध्य में मुख्य किला नरनाळा, और दक्षिण-पश्चिम में तेलीगढ़। यह विशाल किला करीब 9 मीटर ऊँची दीवारों, 67 बुर्जों और छह बड़े दरवाजों से सुरक्षित था। विदर्भ में इमादशाही के संस्थापक फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क द्वारा 1487 ई. में बनवाया गया यहां का शाहणुर अथवा 'महाकाली' दरवाजा सुल्तान शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सफेद बलुआ पत्थरों से निर्मित इस दरवाजे पर अरबी में अभिलेख खुदे हैं और इसके दोनों ओर कोठरियां व गैलरियां बनी हुई हैं, जो कि संभवतः सुरक्षाकर्मियों द्वारा प्रयोग में लायी जाती थीं। इस दरवाजे का वैशिष्ट्य इसके दोनों ओर निर्मित लटकते छज्जों वाली दो-दो खूबसूरत खिड़कियां हैं। किले के भीतर कई तालाब व कुंड, एक 'नौ गजी' तोप, महल, बारादरी, शस्त्रागार और मस्जिद के अलावा कई इमारतों के खंडहर हैं।

परंपरा के अनुसार नरनाळा बहुत प्राचीन किला है। जानकारी मिलती है कि अहमद शाह बहामनी ने 1425 ई. के आसपास इस किले की मरम्मत करवाई थी और 1487 ई. में फतेहउल्ला इमाद-उल-मुल्क का इस किले पर कब्जा हो गया था। अकबर के शासनकाल में नरनाळा एक सूबा था, फिर परसोजी भोसले (प्रथम) ने 1701 ई. में इस किले को मुगलों से जीत लिया। मगर 1803 ई. में यह किला अंग्रेजों के अधिकार में चला गया।

अकोला में मोर्णा नदी के किनारे जो किला है, उसे औरंगजेब के शासनकाल में असद खान ने 1697 ई. में बनवाया था। किले का बहुत-सा भाग नष्ट हो गया है, मगर महल के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं। कुछ बुर्जों की मरम्मत की गई है और किले के मुख्य हिस्से को बगीचे में बदल दिया गया है।

अचलपुर (पुराना नाम एलिचपुर) का इतिहास एक प्रकार से विदर्भ का इतिहास है। अपने वंश के प्रथम शासक नवाब सुल्तान खान ने 1754 ई. में एलिचपुर के सुल्तानपुरा में सर्पण नदी के दक्षिणी छोर पर एक किला बनवाया था। फिर सुल्तान खान के बेटे इस्माइल खान ने शहर के चारों ओर एक ऊंची और मजबूत दीवार बनवाई, जिसमें चार दरवाजे थे। उस दीवार के कई हिस्से और दरवाजे आज भी कायम हैं।

चित्र: नरनाळा किले का शाहणुर अथवा महाकाली दरवाजा (ऊपर, बाएं)। महाकाली दरवाजे के बाएं पार्श्व में लटकते छज्जों वाली दो नक्काशीदार खिड़कियां (ऊपर, दाएं)। अकोला के किले का बचा हुआ एक भव्य बुर्ज (नीचे, बाएं)। दो बुर्जों के बीच अचलपुर किले का एक दरवाजा (नीचे, दाएं)।



21. Narnala, Akola and Achalpur Forts

Narnala fort, standing upon an isolated hill of the Satpuda range, is 18 kms north of Akot, a taluka town in Akola district. It is 973 metres above sea-level and consists of three distinct hill forts : Jafarabad in the north-east, Narnala, the principal fort, in the centre, and Teliagarh in the south-west. It was protected by a curtain wall about 9 metres high with 67 bastions and six large gates. The Shahnur or "Mahakali" gate, built by Fateh-ullah Imad-ul-Mulk in 1487 AD, is a notable example of Sultanate architecture. The white sandstone gateway has Arabic inscriptions on it and is flanked upon on either side by galleries and rooms, probably for guards, but the most striking feature of the gateway is the overhanging balconied windows, two on either side. Within the fort are a number of tanks and cisterns, a large cannon, known as *nau-gazi top*, an old palace, an armoury, a baradari, a mosque and other buildings, all in ruins.

According to tradition a very old fort, Narnala was repaired by Ahmad Shah Bahamani around 1425 AD, and in 1487 AD it came under the control of Fateh-ullah Imad-ul-Mulk, the founder of Imadshahi at Ellichpur, now called Achalpur. During Akbar's rule, Narnala was a *Suba*. Narnala was captured by Parsoji Bhosale I in 1701 AD and remained with the Marathas till it was taken over by the British in 1803 AD.

The fort at **Akola** situated on the bank of the Morna river was constructed by Asad Khan in 1697 AD during the reign of Aurangzeb. Much of the fortifications have crumbled down, but the remains of a palace can still be seen. Some of the old bastions have been repaired and the main area of the fort has been converted into a public park.

The history of **Achalpur**, formerly known as Ellichpur, could well be said to be the history of Vidarbha (Berar) itself. Nawab Sultan Khan, the first of his dynasty, built the fort at Sultanapura in Achalpur on the south the bank of the Sarpan river in about 1754 AD. Much of the part of the fort is now in completely dilapidated condition. The city was fortified by Sultan Khan's son Ismail Khan by a huge and solid rampart wall of masonry with four gates. Most of the fortifications and the gates are still intact.

Pictures : The Shahnur or Mahakali gate of the Narnala fort (above, left). The overhanging balconied windows on the left flank of the Mahakali gate (above, right). The remaining high tower of the Akola fort (below, left). A gate flanked by two bastions of the Achalpur fort (below, right).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

22. अहमदनगर किला

अहमदनगर किला संरचना की दृष्टि से भारत के संभवतः सबसे सुदृढ़ स्थलदुर्गों में से एक है। यह किला नगर के पूर्व में छावनी क्षेत्र के मध्य में स्थित है। इस दीर्घवृत्ताकार किले की दीवार करीब 1.7 किलोमीटर लंबी है और इसे 24 बुर्जों ने मजबूती प्रदान की है। दीवार के बाहर की खाई कमोबेश 30 मीटर तक चौड़ी और 4 से 6 मीटर तक गहरी है। खाई के दूसरी ओर पुश्ते पर पेड़ लगे हुए हैं। काटे गए पत्थरों से निर्मित विशाल ठोस दीवार खाई के तल से 25 मीटर ऊंची है। किले के दोनों प्रवेश-द्वारों तक पहुंचने के लिए खाई पर ऐसे झूला-पुल बने थे, जिन्हें उठाया जा सकता था। किले के भीतर की कई नई और पुरानी इमारतें काफी-कुछ अच्छी हालत में हैं। आजकल यह किला भारतीय सेना के अधिकार में है।

अहमदनगर किले का निर्माण हुसैन निजाम शाह ने 1559 ई. में किया था। 1596 ई. में विशाल मुगल सेना ने इस किले को चार महीने तक घेरे रखा था। उस समय चांदबीबी की रक्षा सेना ने मुगलों की सेना के छक्के छुड़ा दिए और उन्हें संधि के लिए विवश कर दिया। जब मुगल सेना ने 1600 ई. में किले पर दुबारा आक्रमण किया, तब इस पर अकबर का अधिकार हो गया। 1759 ई. में तीसरे पेशवा के चचेरे भाई सदाशिव भाऊ ने इसे मुगल किलेदार से खरीद लिया। 1797 ई. में अहमदनगर का यह किला दौलतराव शिंदे के अधिकार में चला गया। फिर 1797 ई. में जनरल वेलेजली ने इसे जीत लिया, मगर इस पर मराठों का अधिकार बना रहा। अंत में पुणे संधि (जून, 1817 ई.) के अंतर्गत बाजीराव पेशवा (द्वितीय) ने अहमदनगर का यह किला अंग्रेजों को सौंप दिया।

अहमदनगर के इस किले का मराठों और अंग्रेजों ने राजकारावास के रूप में अक्सर इस्तेमाल किया। नाना फडणीस ने इस किले में राजपरिवार के कई व्यक्तियों को बंदी बनाकर रखा था। मगर वह अवसर भी आया, जब नाना फडणीस को भी दौलतराव शिंदे ने इसी किले में बंद कर दिया ! 1942 ई. के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान कांग्रेस कार्यकारिणी के सभी सदस्य यहां बंदी थे। पं. जवाहरलाल नेहरू ने *डिस्कवरी आफ इंडिया* (भारत की खोज) पुस्तक इसी किले में लिखी थी।

चित्र: अहमदनगर के किले का मुख्य प्रवेश-मार्ग, जिसके दो दरवाजे समकोण में बने हुए हैं (ऊपर)। चित्र में बाहरी दरवाजा बाईं ओर है (जिसका केवल ऊपरी आधा हिस्सा ही दिखाई दे रहा है) और भीतरी दरवाजा सामने है। भीतरी दरवाजे के बाएं पार्श्व की दीवार पर जल-निकास के लिए जो शिल्प बना हुआ है, उसमें एक व्याघ्र द्वारा हाथी को कुचलते हुए दिखाया गया है (आंतरचित्र)। विशाल बुर्ज सहित किले की दीवार का एक भाग, बाईं ओर की खाई, बबूल और अन्य किस्म के पेड़ों से पटी हुई है (नीचे)।



22. Ahmadnagar Fort

One of the most well planned and strongly built, the Ahmadnagar land-fort is situated in the centre of the cantonment in the eastern part of the city. Oval in shape, the fort is about 1.70 km in circumference and is strengthened by 24 bastions. It is surrounded by a moat, now dry, about 30 metres wide and 4 to 6 metres deep, and beyond it there is a wooded glacis. The massive curtain wall, built of cut stone masonry, rises above 25 metres from the bottom of the ditch. The two entrances to the fort could be reached only after crossing the moat over the suspension drawn bridges. Inside the fort there are some old and new buildings, fairly in good condition. Presently the fort is under Indian military command .

The Ahmadnagar fort was built by Husain Nizam Shah in 1559 AD. The fort was besieged by the vast Mughal army in 1596 AD, but the garrison led by Chandbibī valiantly defied the attack for four months and the Mughals had to beat a retreat. In the next attack in 1600 AD, the fort was captured by Akbar. It remained with the Mughals till 1759 AD, when it was sold to Sadashiv Bhau, the cousin of the third Peshwa. In 1797 AD, the fort was assigned to Daulatrao Shinde, from whom it was captured by General Wellesley in August, 1803. Finally, under the Treaty of Pune (June, 1817 AD) the fort was handed over to the British by Bajirav Peshwa II.

The Ahmadnagar fort was often used as a royal prison, both by the Marathas and the British. Nana Phadnis, who was instrumental in imprisoning many Maratha noblemen in this fort was himself locked up in the fort by Daulatrao Shinde. During the Quit India Movement of 1942, the entire Congress Working Committee was detained here. Pt. Jawaharlal Nehru wrote his famous work *Discovery of India* while in confinement at the Ahmadnagar fort.

Pictures : The main entrance to the Ahmadnagar fort with its two gateways placed at right angles (above). The outer gate (only its upper half) is on the left side and the inner gate is the front one. A water-outlet on the left wall of the inner gate with a sculpture of a tiger trampling on an elephant (inset, above). A portion of the massive wall of the fort with a bastion; the moat on the left is grown with *babul* and other trees (below).



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

23. माहूर किला

माहूर गांव, जिसे माहोर भी कहते हैं, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा विभाग के नांदेड़ जिले के किनवट शहर से 40 कि.मी. पश्चिमोत्तर में है। पहले माहूर एक बड़ा नगर और दक्षिणी विदर्भ का सूबा था। सह्याद्री पर्वत-शृंखला की पूर्वी पहाड़ी पर स्थित यहां का गिरिदुर्ग काफी पुराना है और कम से कम यादवों के समय से इसका अस्तित्व रहा है। बाद में यह किला कई सत्ताओं — गोंड, बहामनी, आदिलशाही और निजामशाही के कब्जे में रहा। तदनंतर इस पर मुगलों और उनके प्रतिनिधियों का अधिकार हो गया। यह गिरिदुर्ग तीन ओर से पैनगंगा नदी से घिरा हुआ है।

दो जुड़वां पहाड़ियों पर बना यह विशाल किला प्राचीरों, प्राकारों और बुर्जों से सुरक्षित था। इसके दो मुख्य प्रवेश द्वार थे — एक दक्षिण दिशा में और दूसरा उत्तर दिशा में। उत्तरी द्वार अभी काफी अच्छी हालत में है। दक्षिण दिशा की करीब पांच मीटर चौड़े प्राकार वाली दीवार भी अभी मौजूद है। किले में जो महल, मस्जिद, धन्यागार, बारूदखाना आदि थे वे सभी खंडहर बन गए हैं। किले के लगभग मध्यभाग में 'ईजाळ तलाव' नामक एक बड़ा जलाशय है।

उत्तर भारत से दक्खन जाने वाले एक महत्वपूर्ण मार्ग पर स्थित होने के कारण माहूर का इतिहास काफी पुराना है। प्रमाण मिलते हैं कि माहूर, जिसका प्राचीन नाम मातापुर था, सातवाहनों और राष्ट्रकूटों के समय में एक महत्वपूर्ण स्थान था। किले के समीप की एक पहाड़ी पर स्थित रेणुका मंदिर यादवों के समय में बना था। कुछ समय तक गोंडों के अधिकार में रहने के बाद 15 वीं सदी में माहूर बहामनियों के कब्जे में चला गया, तो उन्होंने इसे एक सूबा बना दिया। निजामशाही, आदिलशाही और ईमादशाही — इन तीनों सत्ताओं के बीच, 16वीं सदी में, हुए संघर्ष में माहूर की बड़ी क्षति हुई। उसके बाद 17 वीं सदी में माहूर पर मुगलों और उनके सूबेदारों का अधिकार हुआ। जब शाहजहां ने अपने पिता जहांगीर के खिलाफ बगावत की तो उसने अपनी बेगम और बच्चों के साथ, जिनमें छह साल का औरंगजेब भी था, माहूर के किले में शरण ली थी।

माहूर के बस-स्टैंड से करीब दो कि.मी. की दूरी पर एलिफेंटा (मुम्बई के समीप के द्वीप पर स्थित गुफा-मंदिर) की तरह की चट्टान को काटकर बनाई गई राष्ट्रकूट काल की दो गुफाएं हैं।

चित्र: माहूर किले के दक्षिण-पश्चिम दिशा के परकोटे और बुर्ज के अवशेष, और इसका 'हाथी दरवाजा' नामक उत्तरी प्रवेश-द्वार (आंतरचित्र)। चित्र में बुर्ज के पीछे की दूसरी पहाड़ी पर रेणुका मंदिर है।



23. Mahur Fort

Mahur village, also called Mahor, is 40 kms north-west of Kinwat town in Nanded district in the Marathawada division of Maharashtra. Earlier Mahur was a big city and a Suba of southern Berar. Situated on an eastern branch of Sahyadri mountains, the hillfort here is very old and exists at least from the time of the Yadavas. It was subsequently occupied by many powers — the Gonds, the Bahamanis, the Adilshahi and the Nizamshahi rulers and finally the Mughals and their vassals. The fort on its three sides is girded by the Painganga river.

The fort, built on top of two adjoining hills, was protected by walls, ramparts and bastions. It had two main gateways — one on the southern side and the other on the northern side. The northern gate is still in a reasonably good condition, and so is its southern rampart nearly five metres wide. The fort had a palace, a mosque, a granary, an armoury, etc., now all in ruins. At the centre of the fort, there is a big tank call *Ijalatalav*.

Being situated on the main route from the north to the Deccan, Mahur has a long history. There is evidence to show that Mahur, ancient Matapur, was an important place at the time of the Satavahanas and the Rashtrakutas. The Renuka temple on an adjoining hill was built by the Yadavas. After remaining with the Gond rulers for some time, Mahur passed on to the Bahamanis in the 15th century and was made a Suba. In the 16th century, Mahur, being strategically placed at their centre, faced a lot of fire from the infighting between the Nizamshahi, Adilshahi and Imadshahi rulers. Then in the early 17th century, Mahur became a part of the Mughal empire and came to be ruled by their Subedars. When Shahjahan rebelled against his father Jahangir, he took refuge in the Mahur fort along with his wife and children, including 6 years old Aurangzeb.

About 2 kms from Mahur bus-stand, there are two Elephanta type (situated on an island near Mumbai) rock-cut caves of the Rashtrakuta period.

Pictures : Remains of rampart and a bastion on the south-western side of the Mahur fort, and its northern gate, called 'Hathi Darwaja' (inset). Behind the bastion, on another hill, is the Renuka temple.



महाराष्ट्र के दुर्ग

Forts of Maharashtra

24. पौनी और नगरधन के किले

भंडारा जिले का पौनी स्थान नागपुर से 82 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में है। वैनगंगा नदी से करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर बसा पौनी शहर भव्य दरवाजों से युक्त मध्ययुगीन परकोटे से घिरा था। मगर अब केवल पश्चिम की ओर की किलेबंदी का कुछ ही भाग साबूत बचा है। किले की दीवार कहीं-कहीं करीब 20 मीटर ऊंची है और उसके बाहर चारों ओर करीब 20 मीटर चौड़ी खाई थी। वह पुरानी खाई अब एक मौसमी झील में बदल गई है, और 'बाळ समुद्र' कहलाती है। किले का निर्माण 18वीं सदी के आरंभ में गोंड राजा बख्त बुलंद ने करवाया था और लगभग 1740 ई. में रघुजी भोसले (प्रथम) ने इस पर कब्जा कर लिया था।

पौनी एक काफी प्राचीन स्थल है। हाल ही के वर्षों में यहां एक बहुत बड़े बौद्ध स्तूप के अवशेष मिले हैं, जिससे पता चलता है कि यह स्थान बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केंद्र रहा है। पौनी के परकोटे से इस क्षेत्र पर शासन करने वाले वाकाटक नरेश प्रवरसेन-द्वितीय का एक ताम्रपट भी मिला है। अतः यह संभव है कि परकोटे का भीतरी कच्चा भाग मध्ययुग से काफी पहले का हो।

नगरधन का प्राचीन नाम नंदिवर्धन था। वर्तमान नगरधन गांव नागपुर से 34 कि.मी. दक्षिण-पूर्व में है। यह प्रसिद्ध पर्वतीय तीर्थस्थल रामटेक से 5 कि.मी. दक्षिण में है। नगरधन का वर्तमान भूमिदुर्ग, पूर्व की ओर से नागपुर की सुरक्षा की दृष्टि से, संभवतः रघुजी भोसले ने 1740 ई. में बनवाया था। इस वर्गाकार किले की बाहरी दीवार बुर्जों से सुरक्षित रही है और भीतरी दीवार इमारतों की रक्षा करती थी। किले का मुख्य दरवाजा पश्चिमोत्तर दिशा में है और आज भी अच्छी स्थिति में है। किले के भीतर कुएं-नुमा एक मंदिर है, जिसमें मूर्ति को उसकी एक कगार में स्थापित किया गया है। किले की बाकी इमारतें नष्ट हो गई हैं।

मौजूदा किले से थोड़ी दूरी पर एक ऐसा स्थान है, जहां से यदा-कदा बड़े आकार की पुरानी ईंटें प्राप्त होती हैं। कहा जाता है कि यह वाकाटकों की प्राचीन राजधानी और उनके दुर्ग का स्थान है।

चित्र: पौनी के दुर्ग का दूरदृश्य; सामने है मौसमी झील, जो पहले किले के बाहर की खाई थी (ऊपर); किले का चौड़ा प्राकार और उसकी ऊंची कगार (आंतरचित्र)। नगरधन किले की सामने की दीवार, मुख्य प्रवेश-द्वार सहित (नीचे)। मुख्य प्रवेश-द्वार (आंतरचित्र)।



24. Pauni and Nagardhan Forts

Pauni, in Bhandara district, is 82 kms south-east of Nagpur. The present town, about three kms south-west of the Wainganga river, is engirdled by medieval fortifications embellished by imposing gateways, of which those situated to the west are almost intact. The majestic fortifications, which at some places are extant to a height of about 20 metres, were encircled by a moat of about 20 metres in width. The ancient moat has now turned into a small seasonal lake and is called *Balasamudra*. The fort was constructed by the Gond ruler Bakht Buland in the early 18th century and was taken over by Raghuji Bhosale I around 1740 AD.

Pauni, an ancient place, has yielded the relics of one of the greatest Stupas of India and definite evidence of a flourishing Buddhist establishment. The Pauni rampart has yielded the copper plate grant of Pravarasena II of the Vakatakas who ruled over this region. So, it is possible that the clay core of the rampart goes back to a period much earlier than the medieval.

Nagardhan, ancient Nandivardhan, the first capital of the Vakatakas, is 34 kms northeast of Nagpur and about 5 kms south of Ramtek, famous for its fortified hill temple.

The present land fort at Nagardhan, probably built by Raghuji Bhosale I around 1740 AD, must have served the purpose of guarding the eastern approaches to Nagpur. Square in shape, it has an outer rampart with bastions and had an inner wall surrounding the buildings. The main gate, still in good condition, is on the north-west side. In the fort there is a temple below the ground level and the idol is placed on a ledge of a well like structure.

Not far away from the present fort there is a place where big sized bricks of ancient periods are often discovered. This is said to be a site of the capital-cum-fort of the Vakatakas.

Pictures : A distant view of the Pauni fort with the ancient moat, now turned into a seasonal lake (above). Wide rampart and high parapet of the fort (inset). Front wall with a bastion and the main gate of the Nagardhan fort (below). The main gate (inset).

